इकाई दहाई सैकड़ा

• •▫ •▫▫

विमल मित्र

अनुवादक

दिनेश आचार्य



राधाकृष्ण प्रकाशन

प्रकाशक
ओमप्रकाश
राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली ७

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
राष्ट्रभाषा प्रिन्टर्स दिल्ली

१२ रुपये ८० पैसे

मन्टू

संसार-यात्रा की सारी जिम्मेदारियों से मुझे छुटकारा देकर तुमने हमेशा मेरी सहायता की है, इसलिए 'साहब बीबी गुलाम,' 'खरीदी कौड़ियों के मोल' और 'इकाई, दहाई, सैकड़ा' की रचना सम्भव हो पायी। मेरी इच्छा है कि इस कृति के साथ तुम्हारा नाम संलग्न रहे।

The time will come when the sun will shine only upon a world of free men who recognise no master except reason, when tyrants and slaves, priests and their stupid or hypocritical tools will no longer exist except in history or on the stage.

—*Marquis de Condorcet*
1743-179

राज्य-परिक्रमा के बाद राजा रोहित राजधानी वापस आये। एक बूढ़े ब्राह्मण ने सामने आकर रास्ता रोक लिया।

"कौन ?'

"मैं हूँ, राजा रोहित !'

ब्राह्मण ने पूछा, 'लौट क्या आये ?"

राजा रोहित ने कहा, 'मैं थक गया हूँ।

ब्राह्मण ने कहा 'चलते चलते जो थक जाते हैं वही तो अन्त-श्री हैं। जो सत्यकाम हैं वे भी अगर निष्क्रिय बैठे रहें तो उनका भी पतन अनिवार्य है। इसलिए तुम चलते चलो आगे बढ़ो चरैवेति चरैवेति !"

राजा इसके बाद घर नहीं लौट पाये। वे फिर से परिक्रमा करने निकल पड़े। लेकिन फिर एक दिन राजधानी लौट आये। उसी ब्राह्मण ने फिर से रास्ता रोक लिया।

'घर क्या लौट आये ?'

राजा रोहित ने कहा, इस तरह लगातार चलते रहने से क्या लाभ है?'

ब्राह्मण ने कहा, 'बहुत लाभ है। जो चल सकता है वही तो स्वस्थ है। स्वस्थ आदमी ही स्वस्थ मन का अधिकारी है। उसकी आत्मा का विकास होता है। यह क्या चरम लाभ नहीं है ? तुम चलते चलो, आगे बढ़ो—चरैवेति चरैवेति !"

राजा इस बार भी घर नहीं लौट पाये। फिर निकल पड़े। लेकिन राजा रोहित फिर एक दिन लौटे। ब्राह्मण देवता भी खड़े थे।

"फिर क्यों लौट आये ?"

'अब चला नहीं जाता।

ब्राह्मण ने कहा, 'यह क्या ? जो आराम करता है उसका भाग्य भी आराम करता है। जो उठ खड़ा होता है उसका भाग्य भी उठ खड़ा होता

है। जो लेटता है उसका भाग्य भी धराशायी हो जाता है। जो आगे बढ़ता है उसका भाग्य भी आगे बढ़ता है। तुम आगे बढ़ो! यही मंत्र—चरवैति-चरवैति!

इस पर राजा रोहित को फिर लौटना पड़ा। घूमते घूमते जब फिर से वापस आये तो वही ब्राह्मण फिर मिला।

मैं और नहीं घूम सकता। मैं आपका उपदेश भी अब और नहीं सुन पाऊँगा। आप मुझे क्षमा करें। सतयुग में हो सकता है यह उपदेश काम आता, इस युग में बेकाम है।

ब्राह्मण मुसकराया। बोला, सोते रहना ही कलियुग है, जाग उठना द्वापर है, उठ खड़े होना त्रेता और चलते रहना सतयुग है। इसलिए तुम आगे बढ़ो राजा रोहित और आगे बढ़ो, चरवैति चरवैति! यही मंत्र—चलने का नाम मधु है!

और लौटना नहीं हुआ। राजा रोहित ने फिर से चलना शुरू किया। हिमालय से कन्याकुमारी, सिन्धु से पूर्वी सीमान्त। काशी, कोसल, अयोध्या, मिथिला, कलिंग, द्रविड़ आर्यावर्त के सारे भूखण्ड पर फिरते उनकी परिक्रमा शुरू हुई। इसके बाद शुरू हुई भारत के बाहर और फिर विश्व-ब्रह्माण्ड में।

इसी तरह बात प्रवाह आगे बढ़ता गया। आखिर में युग-युगान्तर से चलते आया १९८० साल। वह राजा रोहित भी नहीं है, वह ब्राह्मण भी नहीं है। आदर्श-नेता भी नष्ट है, उपदेश सुननेवाला भी कोई नहीं है। उपदेश-आदर्श सभी निराकार हो गये हैं।

यह उपन्यास यहीं से शुरू करता हूँ।

○ ○

शुरू में जब इस मुहल्ले में मकान बनना शुरू हुआ कोई नहीं जानता था। कब ज़मीन खरीदी गयी, कब रजिस्ट्री हुई किसी को पता नहीं था। इस मुहल्ले के लोग साधारणतः इन सब बातों पर सिर नहीं खपाते। सब अपने-अपने धंधे में मस्त रहते। इसी जमीन पर राज और मजदूरों ने दिन-रात एक करके यह मकान खड़ा किया है। उन दिनों कभी-कभी एक बड़ी गाड़ी आकर खड़ी होती थी। गाड़ी में एक महिला होती। जिनका मकान था वे आकर देख जाते, काम कैसा चल रहा है कहाँ तक आगे

चला। उनकी पत्नी भी दमयंती। तभी से लोगों को पता लगा कि यह मकान शिवप्रसाद गुप्त का है। कलकत्ता के मशहूर आदमी, प्रसिद्ध देशभक्त! एक समय के पॉलिटिकल सफरर शिवप्रसाद गुप्त का नाम किसी के लिए अनजाना नहीं था।

बड़े आदमियों का नाम करने से जितने फायदे हैं ठीक वैसी ही मुश्किलें भी हैं।

शिवप्रसाद पहले पहल जब इस मकान में आये उस समय मुहल्ले के कितने ही लोग उनसे मिलने आये। उस समय जो आना जाना शुरू हुआ, वह फिर कभी नहीं रुका।

लोग कहते, "बड़े आदमी होने से क्या हुआ, मिजाज बिलकुल 'शिव' की तरह पाया है।"

शिव का मिजाज असल में कैसा है किसे पता! लेकिन शिव को ठंडे मिजाज वाला मान लेने पर उपमा को ठीक-ठीक बैठाने में आसानी होती। इसके अलावा शिवप्रसाद बाबू का शिव के शहर से भी मेल था।

शिवप्रसाद बाबू कहते, 'अरे नहीं आप लोग कहते क्या हैं आजकल जो हाल है उसमें दिमाग ठंडा रखना मुश्किल हो गया है।'

फिर कहते, 'दिमाग गर्म रखकर क्या पब्लिक के साथ काम चलता है, बकू बाबू?'

अकेले बकू बाबू ही नहीं, मुहल्ले के कई रिटायर्ड वृद्ध शाम के समय सिर, गला और कान ढँके आ बैठते। अखबार की खबर पर चर्चा होती, कांग्रेस और कम्युनिस्टों को लेकर बातें होतीं। इनके पास करने लायक एक विषय, वह था उनका अतीत। वर्तमान और भविष्य से ज्यादा ये लोग भूत को लेकर सिर खपाते। गर्मी के दिन में बीते दिनों की तसवीर खिंच उठती— क्या दिन थे वे भी, जनाब! कहाँ गया वह मान-सम्मान! उस समय पढ़ाई-लिखाई की कद्र थी, भगवान और ब्राह्मण में लोगों की श्रद्धा थी। अब तो सब-कुछ बदल गया है। लड़कियाँ आफिस जाकर नौकरी करतीं। सड़क पर, रास्ते और पार्कों में अकेली घूमती हैं। मर्दों की तो परवाह ही नहीं करतीं।

हर रोज ही ये बातें उठतीं। लेकिन किसी हद पर पहुँचने से पहले ही बद्रीनाथ आ पहुँचता।

बैजनाथ आकर कहता — आपके लिए पूजा की जगह हो गयी है।

बैजनाथ का उस समय कमरे में आना ही शिवप्रसाद बाबू के लिए पूजा की जगह होना था — यह सब जान गये हैं। शुरू शुरू में जरा अजीब लगा। मन्तव्य [illegible] शुरू शुरू में। शिवप्रसाद बाबू ने हँसते हँसते कहा था — यही पर [illegible] नहीं छोड़ पा रहा हूँ इसी से।

घोष बाबू ने कहा — लेकिन आप इस [illegible] क्या कह रहे हैं? पूजा करना क्या ढकोसला है जनाब! आज भी इंडिया सारी दुनिया में इतना आगे है यह निश्चित जान लीजिए। वह सब है इसी से तो दुनिया अभी भी टिकी हुई है। चन्द्र-सूर्य चल रहे हैं। नहीं तो इतने में इंडिया ने कब का कम्युनिज्म-सम्युनिज्म ज्वाइन कर लिया होता।

शिवप्रसाद बाबू ठठाकर जोर से हँसने। एकदम दिल खोलनेवाली हँसी।

कहा — यह सब तो नहीं जानता भाई, पूजा करके मन को तृप्ति होती है इसी से करता हूँ। बचपन की आदत पड़ गयी है छोड़ नहीं पाता।

बात चीत अभी जो थी। सभी पूछते, आप क्या बचपन से ही पूजा करते आये हैं?

शिवप्रसाद बाबू कहते — हाँ, तब बारह साल की उम्र से ही करता हूँ। माँ ने करने को कहा था उसी से करता हूँ। आज भी माँ के आदेश के अनुसार ही करता हूँ — यह देखिये न मेरी माँ का फोटो।

कहकर माँ के नाम पर अपना हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

गाने के कमरे में बड़ा माँ का एक पोर्ट्रेट दीवार पर टँगा था। काफी बड़ा ऑयल-पेंटिंग। पूरी दीवार को ढक पोर्ट्रेट झूल रहा था। सब लोग उस ओर ही देखने लगे।

शिवप्रसाद बाबू कहने लगे, 'माँ के मन की कोई भी साध पूरी नहीं कर सका। इसी से आज दुःख होता है। मैं माँ का नालायक लड़का हूँ भाई, अपनी माँ को जीवन में काफी दुःख दिये हैं' — शिवप्रसाद बाबू का गला भर आया।

पड़ोसी लोग और नहीं रुके। कहते — नहीं-नहीं, आप पूजा करने जाइये। और नहीं रोकेंगे।

□ □ □

रात के नौ बजे से साढ़े नौ बजे तक शिवप्रसाद गुप्त का पूजा करने का समय है। उस समय कोई शोरगुल नहीं कर सकता। केवल इतना ही नहीं, सुबह से रात होने तक सारे दिन इस घर में जैसे सुखपूर्ण शान्ति छायी रहती है। यहाँ सभी खुश हैं। इस युग के लिए शायद अजीब बात है। अगर कहीं कोई शिकायत है भी, तो वह किसी के कान में नहीं जाती। हरेक का मन जैसे खुशी से भरा था। सोकर उठने पर सभी कहते—वाह! फिर रात को सोने जाते समय भी निश्चिन्त होकर कहते—वाह! इस युग में यह कैसे सम्भव हो पाया, यह इस मुहल्ले के लोगों के लिए एक समस्या है। कुछ लोग सोचते इसका कारण शायद पैसा है। जरूरत से ज्यादा पैसा होने पर शायद ऐसी शान्ति का साम्राज्य सम्भव हो सकता है। लेकिन पैसा क्या कलकत्ता शहर में अकेले शिवप्रसाद गुप्त के पास ही है? और किसी के पास नहीं है? बक्कू बाबू के पास क्या पैसे की कमी है? अविनाश बाबू का ही क्या पैसे का अभाव है? अनाथ बाबू के तीनों लड़के होशियार हैं—तीनों ही गजेटेड ऑफिसर हैं, रुपया पैसा और विद्या पढ़ा है। सभी इस मुहल्ले की बड़ी बड़ी बिल्डिंगों के मालिक हैं। फ्लोरमैट नान्न रेफ्रिजरेटर रेडियोग्राम सभी कुछ तो बाहर से दिखलायी देते हैं। नजर में आनेवाली सभी चीजों का इन लोगों के यहाँ इन्तजाम है। लेकिन सभी यहाँ शिवप्रसाद बाबू के घर आकर जैसे थोड़ी देर खुशी हवा का सेवन कर जाते। शिवप्रसाद गुप्त के साथ दो बात करने पर जैसे सभी की उम्र बढ़ जाती। लेकिन ऐसा क्यों होता है कोई तो नहीं समझ पाता।

सुबह ऑफिस जाते समय मन्ना आकर खड़ी होती। शिवप्रसाद बाबू की चीजें सम्हालने के लिए नहीं। उस काम के लिए अलग आदमी है। वह काम बद्रीनाथ का है। उसकी नौकरी इसीलिए है।

शिवप्रसाद बाबू ने मन्ना की ओर देखकर कहा, 'पता है, बद्रीनाथ आजकल गाना सीख रहा है, आर्टिस्ट बनेगा।'

बद्रीनाथ शर्म से जैसे सिटपिटा गया।

'क्या रे, कलाकार बनेगा? उस्ताद रखा है? कितना लेता है?'

मन्ना को भी आश्चर्य हुआ। बोली, 'क्या कह रहे हो? वह और गायक, तब तो हो चुका!'

अरे नहीं, तुम्हें पता नहीं है सुबह मैंने अपने कानों सुना। ठंड से ठिठुर रहा था और गुनगुना रहा... संगीत चल रहा है। पहले तो समझ ही नहीं पाया मैंने सोचा शायद ... गा रहा है फिर लगा कि यह सुरीला गला तो बद्रीनाथ का छोड़ और किसी का हो ही नहीं सकता।

मन्ना ने कहा अच्छा छोड़ो इस प्रकार की बातों को फिर बहुत ऑफिस के लिए देर हो रही है।

अरे इधर का ध्यान नहीं है उससे मैं पूछ रहा था, कौन सा गाना गा रहा था रे ? बोले नहीं, मुस्करा कर रह गया। इसके बाद क्या है रे ?'

मन्ना मन ही रह गया। बोली देखती हूँ तुम्हें किसी बात का होश हो रहा है मुझे कुछ कहना ही नहीं है।

'बाद उसके तो प्यार करने में भी कुछ नहीं बिगड़ा और मेरे कहने में ही आसमान आ गया ?

मन्ना ने कहा तू जा तो बद्रीनाथ, भाग इस कमरे से !

बद्रीनाथ ने भागकर जान बचायी।

लेकिन निवासप्रसाद बाद हमने सब।

बाद ... लिया गया घर नहीं गया बीवी की याद आती होगी और क्या ? उस कुछ दिनों की कहा नहीं बता क्या कहती हो ?'

बाद उस ... तुम्हारा काम कैसे चलेगा ? उसके बिना रह पाओगे ? बद्रीनाथ के बिना तो तुम्हारा एक मिनट भी काम नहीं चलता।'

क्या उसका काम न भी हो जायेगा ?

नहीं क्या आसान आया है। कहकर मन्ना ने कमरे की जरा भारी करने की कोशिश की।

निवासप्रसाद बाद बोले ... लेकिन पहले तो मेरा सारा काम तुम्हीं करती थीं !

तब करती भी तब करती थी। तुम्हें क्या अब पहले-जैसे रह गये हो ?

क्या मैं बदल गया ?

बदल नहीं गये ? पहले इतना घूमते फिरते नहीं होते थे न इतना बड़ा मकान था न इतना ... था।

लेकिन पहले क्या अपना मर्जी से ... किया है ? तुम्हें तो मालूम

ही है। पैसे का लोभ मुझे कभी भी नहीं था। पैसा, मकान, गाड़ी, रेफ्रिजरेटर, रेडियोग्राम मैंने कुछ भी नहीं चाहा, सब अपने आप आ गया। वास्तव में यह सब तुम्हारे भाग्य से ही आया है।

मन्दा ने ज़रा गुस्सा दिखलाया। बोली, "जाओ जाओ, तुम्हें देर हो रही होगी।"

शिवप्रसाद बाबू हँसने लगे। कुर्ता पहन चुके थे। चीज़-वस्त भी सब ठीक हो चुकी थी। शिवप्रसाद बाबू ने कमरे से निकलने के पहले पूछा, "बद्री ने गाड़ी निकाल ली क्या?"

बद्रीनाथ बाहर ही खड़ा था। वहीं से बोला, "जी हाँ, निकाल रहा है।"

गाड़ी की बात सुनकर शायद मन्दा को ध्यान आया। पीछे से बोली, "तुमने सदाशिव के लिए गाड़ी ख़रीद देने को कहा था।"

शिवप्रसाद बाबू घूमकर बोले, "हाँ, कहा तो था। सदाशिव कुछ कह रहा था क्या?"

"उसकी गाड़ी पुरानी हो गयी है न, इसी से कह रहा था। मुझे डर लगता है, पता नहीं कब एक्सिडेंट कर बैठे।"

शिवप्रसाद बाबू—"कह रहा है तो ख़रीद दो न! और मैं तो उसकी उम्र में गाड़ी पर चढ़ ही नहीं पाया।"

"लेकिन अभी से इतनी शौक़ीनी क्या अच्छा होगा?"

"गाड़ी रखना क्या शौक़ीनी है? बस-ट्राम से कॉलेज जाने पर तो एक्सिडेंट होने के ज़्यादा चांस हैं। उस दिन अपने ऑफ़िस ही का एक क्लर्क बस के नीचे दबकर मर गया।"

अचानक टेलीफ़ोन की घंटी बजने से बात बीच में ही रुक गयी। घंटी की आवाज़ सुनते ही बद्रीनाथ ने जाकर रिसीवर उठाया। शिवप्रसाद बाबू कभी भी ख़ुद टेलीफ़ोन नहीं उठाते।

मन्दा तब तक अपने कामकाज निपटाती। दिन में जितनी देर के लिए शिवप्रसाद बाबू घर रहते उतनी देर टेलीफ़ोन। हज़ारों लोगों के साथ सम्पर्क रखना पड़ता। यहीं से ऑफ़िस जा रहे हैं, शाम को शायद आठ बजे घर लौटेंगे। अगर कहीं मीटिंग हुई तो और भी देर होगी। और मीटिंग भी क्या एक-दो होती। इन मीटिंग में सोचते-सोचते ही किसी किसी दिन दस-

ग्यारह बज जाते। मुहल्ले के बड़े बाबू अनाथ बाबू वगैरह बाबू कौन या सो जाते। इतनी रात को लौटने पर भी शिवप्रसाद बाबू पूजा करने बैठते। पूजा नियम से होनी चाहिए फिर खाना।

शिवप्रसाद बाबू फोन रखकर जा रहे थे।

मन्नू ने पूछा 'क्या आज भी तुम्हारी पार्टी मीटिंग है?'

शिवप्रसाद बाबू ने कहा 'अरे नहीं बड़ी मुश्किल में डाल दिया है उन लोगों ने।'

'किन लोगों ने?'

'और कौन? वही पी० एम० पी० वाले। मुझे लेकर खींचतान कर रहे हैं। कह रहे हैं कि आप हमारी तरफ से इलेक्शन लड़िये। मैं जितना ही कहता हूं कि भाई, मैं किसी भी दल का नहीं हूं, बचपन से निस्वार्थ भाव से देश का काम करता आया हूं आज भी कर रहा हूं, जब तक जिन्दा रहूंगा करूंगा। हां तो जन-सेवा के लिए राजी हूं लेकिन तुम्हारी पार्टी वार्टी में नहीं हूं लेकिन वे लोग किसी भी तरह सुनने को तैयार नहीं होते। सिर्फ मुझे अपनी पार्टी में घसीटना चाहते हैं—या तो डॉ० प्रफुल्ल घोष की पार्टी ज्वाइन करनी होगी नहीं तो अतुल्य घोष की खींच की गाड़ी नहीं चलेगी।'

मन्नू के दिमाग में यह सब नहीं घुसता। पूछा 'तब क्या तुम मीटिंग में जा रहे हो? उनसे फिर क्या कहा?'

'और कह के क्या करता हूँ, यही कहा। कह दिया कि बिना माँ की आज्ञा के तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता। माँ से पूछूंगा—देखूं माँ क्या कहती हैं।'

कहकर और नहीं रुके। बरामदा होकर ठाकुरतल्ले की ओर चलने लगे। काशीनाथ भी कागज-पत्र की गठरी लिये पीछे-पीछे चल दिया। यह गठरी रोज शिवप्रसाद बाबू के साथ गाड़ी में जाती है और फिर साथ ही वापस आती है। काशीनाथ भी साथ साथ जाता है और बाबू के साथ ही लौटता है। नेताजी सुभाष रोड पर दो तल्ले के कमरे में शिवप्रसाद बाबू का ऑफिस है। [illegible] लिमिटेड। शिवप्रसाद बाबू के यहाँ क्लर्क हैं टाइपिस्ट हैं दरबान हैं। पूरा ऑफिस सरो-सामान भरा है। कलकत्ता जब तालाब और पोखरों में डूबा हुआ था तब की बात अलग है। धीरे धीरे मकानों की गिनती बढ़ी है। आदमी बढ़े हैं। पार्टीशन के बाद बाहर जैसे लोगों से भर

गया है। इस समय में ही शिवप्रसाद बाबू की बुद्धि ने रंग दिखलाया। तभी यह ऑफ़िस खोला। उन्होंने सोच लिया था कि आगामी पाँच-दस साल में कलकत्ता ऐसा ही नहीं रहेगा। और बढ़ेगा। जंगल और झाड़ियों के पार पश्चिम में चन्दननगर, चचड़ा और बैंडेल तक पहुँचेगा। दक्षिण में यादवपुर और गरिया से पर डायमंड-हार्बर तक फैलेगा। और उत्तर में बड़ानगर, दमदम का पीछे छोड़ कहाँ तक पाँव फैलायेगा कुछ ठीक नहीं है। इसके अलावा डी० वी० सी० प्रोजेक्ट है दुर्गापुर है कल्याणी है। जादवपुर गरिया और नरेन्द्रपुर सभी उनके प्लान के अनुसार बने हैं। शिवप्रसाद बाबू अपनी दूरदर्शिता पर मन-ही-मन प्रसन्न होते। अब यह उन्हीं का कलकत्ता है। यह ग्रेटर कलकत्ता जैसे उन्हीं के हाथों गढ़ा गया है। पैसा जो आ रहा है सो तो आ ही रहा है साथ ही एक और नामी चीज़ हाथ लगी है वह है आत्मतृप्ति। यह आत्मतृप्ति ही गुप्त-परिवार का सबसे बड़ा प्रॉफ़िट है। इस 'प्रॉफ़िट' के बूते पर ही शिवप्रसाद गुप्त ने हिन्दुस्तान भर में बँगला बनवाया है।

ऑफ़िस में घुसते ही देखा एक अजनबी बैठा है। बंगाली नहीं है। शिवप्रसाद बाबू के आते ही वह उठकर खड़ा हो गया। नमस्कार किया।

आप कौन हैं मैं ठीक से पहचान नहीं पा रहा?

आप मुझे नहीं पहचान पायेंगे। मैं एक और काम से आया हूँ जमीन की खरीद-फरोख्त का काम नहीं है।

शिवप्रसाद बाबू ने कहा 'लेकिन मेरा काम तो जमीन की खरीद-फरोख्त करना ही है।

'यह जानता हूँ लेकिन मैं इस काम से नहीं आया हूँ। मैं जयपुर से आ रहा हूँ।

जयपुर!'

"श्री नृसिंहदासाई ने आपके नाम चिट्ठी भेजी है' कहकर एक चिट्ठी शिवप्रसाद बाबू के हाथ में दी।

चिट्ठी लेकर शिवप्रसाद बाबू ने बद्रीनाथ को बुलाया। बद्रीनाथ बाहर था। आते ही उससे बोले इस समय आधा घंटे किसी से बात नहीं कर पाऊँगा अगर कोई आये तो बैठाना अन्दर मत आने देना।

इसके बाद बैजनाथ को बुलाकर फिर कहा, 'और ऑपरेटर से कह दो कि मुझे रिंग न करे, मैं व्यस्त हूँ।'



कलकत्ता के भिन्न भिन्न मुहल्लों के अलग अलग रूप हैं। हिंदुस्तान पार्क का आकाश जब नीला होता है, बहूबाज़ार की मधुगुप्त लेन में उस समय धुएँ का बादल भरा होता है, जबकि शिवप्रसाद बाबू के गुरु के दिन इसी मुहल्ले में बीते हैं। इसी महल्ले की अधेरी गली में मंदाकिनी ने लड़के को पाला पोसा। इसी मुहल्ले में सत्यव्रत का जन्म हुआ। इसी मुहल्ले में अपने मकान की खिड़की से सत्यव्रत कलकत्ते की सड़क पर लड़कों को क्रिकेट खेलते देखता। इसके बाद जरा बड़े होने पर मुहल्ले के लड़कों से मिलने की इजाज़त मिली। लेकिन दूर से। ज्यादा मेल मिलाप से माँ नाराज़ होती। जरा-सी भी घटना-वटना करते ही माँ डाँटती। माँ उसे आँखों के सामने रखती।

माँ कहती, 'मुहल्ले के लड़कों के साथ इतना मिलना-जुलना अच्छी बात नहीं है।'

सत्यव्रत कहता, 'लेकिन माँ, वे लोग खराब तो नहीं हैं।'

'यह सब तुम्हें नहीं मालूम होगा। मैं कहती हूँ, वे लोग खराब हैं, उनके

म मभी खराब हैं।

सदाव्रत मन ही मन जरा हँसा। इसके बाद नम्बर खोजकर एक मकान के सामने जाकर दरवाजा खटखटाने लगा।

क्या मजे की बात है ! बचपन म इसी नभू के यहां मां आने नहीं देती थी। नभू के पिता किसी आफिस में क्लर्की करते थे। हाथ म टिफिन का डिब्बा लिये सुबह साढ़े आठ बजे बस-स्टॉप की ओर दौड़ते हुए जाते थे। तभी से पता नहीं क्या, मां को इन लोगों से बड़ी घृणा हो गयी थी। वसे अब सदाव्रत बड़ा हो गया है। लोगों के घर जाने में अब उसे कोई झिझक नहीं है। वह नभू के साथ गप्प लगा सकता है, बैठ सकता है। किसी को पता भी नहीं लगेगा। वह अब इस मुहल्ले का रहने वाला नहीं है। इसी से कोई आपत्ति भी नहीं करेगा।

"कौन ?'

अन्दर से जनानी आवाज आयी और साथ ही किसी ने दरवाजा खोल दिया। फ्रॉक पहने छोटी-सी लड़की।

'नभू है ?

'भैया तो क्लब गये हैं। घर नहीं हैं।

'क्लब ! कौन-से क्लब ? नभू का कोई क्लब भी है क्या ?

लड़की ने कहा, 'सामने गली का मोड़ है न, मोड़ पर ही देखेंगे एक बताशेवाले की दुकान। उसी के पीछे भैया का क्लब है।

सदाव्रत ने पहले तो सोचा, जाने दो, अब क्लब तक कौन जाय ! घर पर मिल जाता तो कुछ देर बैठ लेता। फिर कोई खास काम भी नहीं है। किताबें खरीदने के लिए कॉलेज स्ट्रीट आया था। किताबें खरीदने के बाद अचानक पुराने मुहल्ले की याद आयी और इधर चला आया।

सदाव्रत लौटते-लौटते भी आगे बढ़ने लगा। एक बार हाथ में बँधी घड़ी में समय देखा। काफी समय है। जानी-पहचानी वही गली। इतने दिनों में कुछ भी नहीं बदला है। लम्बी-लम्बी दुमंजिला तिमंजिली इमारतें। ठसाठस भरी और एक-दूसरे से सटी हुई। मोड़ पर की वह ड्राई-क्लीनिंग की दुकान अभी भी वहीं है। पहले घर में गैरज नहीं था। पिताजी को सड़क पर के एक मकान के गैरज में गाड़ी रखकर आना पड़ता था। आफिस में

बाबू साथ नौकर रहे हैं। सँकरी गली होने से क्या हुआ, भीड़ खूब थी। इतनी-सी गली में एक गाड़ी भी आ जाती तो मुश्किल होती—लोगों को मकानों की चौखटियों पर चढ़कर खड़े होना पड़ता।

गली के मोड़ पर आकर सनातन रुका। खपरैल-पड़ी एक छोटी-सी दुकान दिखायी दी। दूर से ही मालूम हो जाता है मूड़ी-चनाचूर की दुकान होगी।

सनातन ने दुकान के पीछे की ओर देखने की कोशिश की। वहीं तो होगा शायद शम्भू का क्लब। एक बार सोचा दुकानदार से पूछे। लेकिन दुकानदार उस समय अपने ग्राहकों को सम्हालने में लगा था। दुकान की बाजू से ही एक पतली सीमेन्ट की गली चली गयी है। वहाँ से मकान के अन्दर की रोशनी दीख रही थी। दो एक लोग अन्दर जा रहे थे।

सनातन सोच रहा था अन्दर जाय या नहीं। अचानक एक आदमी को अन्दर जाते देख सनातन ने पूछ लिया, 'यहाँ कोई क्लब है क्या?'

आदमी ने मुड़कर देखा। सनातन को लगा चेहरा जैसे पहचाना पहचाना-सा है। उम्र में उससे कुछ ही बड़ा होगा।

आदमी ने जवाब में कहा, 'हाँ।'

सनातन ने पूछा, 'अन्दर शम्भू है क्या? शम्भूनाथ!'

अन्दर से काफी शोरगुल की आवाज आ रही थी—हँसी ठट्ठा सब एक साथ।

उस आदमी ने सनातन की ओर अच्छी तरह देखा। फिर कहा, 'अच्छा, जरा ठहरिये, देखता हूँ।'

सनातन वहीं सड़क पर खड़ा रहा।

अन्दर जाते ही उस आदमी ने आवाज दी, 'शम्भू, तुम्हें कोई बुला रहा है!'

बाहर अच्छी तरह से सुनायी दिया। इस बात के साथ ही अन्दर का सारा शोरगुल रुक गया।

कौन बुला रहा है?

कहो, अपने मुहल्ले के शिवप्रसाद बाबू का पाल्य पुत्र।

कौन? शम्भू जैसे अब भी नहीं समझ पाया।

अरे, याद नहीं है? अपने मुहल्ले में पहले जो शिवप्रसाद बाबू थे, अब

बालीगंज मे मकान बनवाकर चले गये हैं।'

फिर भी जस किसी ने पूछा, 'किसका पोष्य पुत्र ? पोष्य पुत्र क्या कह रहे हो ?"

"पोष्य पुत्र को पोष्य पुत्र नहीं तो जमाई कहूँगा ? बुढ़ापे तक जब कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ, तो उसे गोद लिया"

"सदाव्रत, अपने सदाव्रत की बात कर रहे हो ? वह आया है ? कहाँ है ?'

'बाहर खड़ा है। तुझे बुला रहा है।

शंभू ने गिरते पड़ते गली के बाहर आते ही उसे बाहों में जकड़ लिया।

अरे, तू ! सदाव्रत, बात क्या है ? अचानक इस मुहल्ले में ? तेरी गाडी कहाँ है ? पैदल ही आया है ?"

उस अँधेरी गली मे खड़े सदाव्रत को लगा जैसे वह पत्थर हो। जैसे वह होश मे नहीं था। मर चुका था। एकदम फासिल। मधुगुप्त लेन के कलकत्ता की मिट्टी के नीचे दबकर फॉसिल हो गया हो। घुप-घुप की घुटन-भर अँधकार में जैसे उसकी आखिरी समाधि हो। वह नहीं है। वह खत्म हो चुका है। दुनिया से जैसे उसका अस्तित्व ही मिट चुका है।

'क्या रे पहचाना नहीं ? मैं ही तो हूँ शंभू ! पैदल क्या आया है ? तेरी गाडी कहाँ गयी ?'

सदाव्रत कोई भी उत्तर नहीं दे पा रहा था।—वह उस घर का कोई नहीं है उसके माता पिता, जिन्हें वह अपना समझता आया है उसके कोई नहीं हैं इतने दिन उसने नकली जिन्दगी बितायी है। इतने दिन की पुरानी सब बातें एक-एक कर याद आने लगीं। वह अब तक समझ भी नहीं पाया। उससे छिपाया गया। सच बात कह देने से क्या उसका यह नुकसान होता ! या लाभ भी क्या होता ! लेकिन किसी ने बतलाया क्या नहीं ?

'क्या रे तेरी तबीयत ठीक नहीं है क्या ? सिर दर्द कर रहा है ?

सदाव्रत के मुँह से [illegible] इतनी देर बाद शब्द फूटे। बोला आज चलूं भाई, फिर किसी दिन आऊँगा। आज अच्छा नहीं लग रहा।"

"इतनी दूर आकर ऐसे ही वापस चला जायगा ! आ न, अन्दर कमरे में आकर जरा देर बैठ, एक कप चाय पीकर चले जाना, और नहीं तो

सदाव्रत ने कहा, "नहीं, आज चलूँगा। फिर किसी दिन आऊँगा।'

'तो फिर कब आयेगा ?'

'अभी मैं नहीं कह सकता। समय मिलते ही एक दिन चला आऊँगा।'

कहकर मधुसूदन वहाँ और नहीं रुका। रुक ही नहीं पाया। किसी ने उसे पहचाना क्यों नहीं ? उसे इतना देर में किसी का क्या बिगड़ता ? किसी ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया ? वह क्या विश्वास करने लायक भी नहीं है ! मधुसूदन मधुगुप्त लेन की सकरी गली से जल्दी-जल्दी चलने लगा। डर था कि यहीं रुकने पर उसे कोई पहचान लेगा। हाँफते हाँफते मधुसूदन बस-स्टाप पर आकर रुका।

□ □ □

यदु बाबू ने कहा, 'क्या बात है जनाब ? आजकल तो आपका पता ही नहीं रहता। धन्धे में शायद बुरी तरह फँसे हैं।'

शिवप्रसाद बाबू ने कहा, 'धन्धे की बात छोड़िये। अब तो धन्धे का सत्यानाश हो गया है।'

'क्या ?'

'अब क्या कहूँ ! अब तो गवर्नमेंट ने ही जमीन का धन्धा शुरू कर लिया है। मैंने तो उस दिन डॉ० राय को कह दिया कि क्या सब कुछ ही नेशनलाइज कर डालियेगा ? बस, ट्राम, इलेक्ट्रिसिटी सभी तो ले रहे हैं और अगर जमीन मकान का काम भी ले लेंगे तो हम लोग कहाँ जायें ? हम लोग क्या खाकर जियेंगे ?'

'तो डॉ० राय ने क्या कहा ?'

'सुनकर हँसने लगे। डॉ० राय मेरे पुराने दोस्त हैं।'

यदुनाथ बाबू ने चौंककर कहा, 'डॉ० राय आपके पुराने दोस्त हैं क्या ?'

'और आपको नहीं मालूम ! आज जब वे चीफ मिनिस्टर हो गये हैं, हम लोगों ने तो एक साथ एक सभा में लेक्चर दिये हैं। कलकत्ता में जिस दिन टाउन हॉल में नेता जी और श्यामाप्रसाद बाबू ने भाषण दिया, उस दिन खूब घूम-घूमकर सारा काम किया। उस समय मधुगुप्त लेन के मकान में रहता था। मेरे घर दिन में दो-चार बार मीटिंग होती। शायद आप उस समय समझ ही नहीं पाये कि क्या करें।

ये सब सिर्फ बातें ही नहीं थीं। ये बातें कुछ ही लोग जान पाते थे। किसी किसी दिन अचानक टेलीफोन आ जाता। शिवप्रसाद बाबू रिसीवर उठाते। कुछ देर बात करते। फिर झुँझलाकर टेलीफोन छोड़ देते। कहते— 'लगता है ये लोग मेरी जान लेकर छोड़ेंगे।

मम्मी पूछतीं, 'क्या, क्या हुआ? किसने टेलीफोन किया था?'

'और कौन करेगा? वही आप लोगों का मेयर।'

मेयर का नाम सुनकर मम्मी को जरा आश्चर्य होता। सारा कलकत्ता जैसे शिवप्रसाद बाबू की राय लेने के लिए लालायित रहता है। शिवप्रसाद बाबू की राय लिये बिना जैसे मिनिस्ट्री टूट जायगी, सारा कलकत्ता तहस-नहस हो जायगा। कोई फोन ऐन समय पर आता कि मम्मी मुश्किल में पड़ जातीं।

मन्दा पूछती, "अब फिर से कहाँ जा रहे हो?"

शिवप्रसाद बाबू कहते, 'हो आऊँ, अचानक बुलाया है। नहीं जाने से खराब लगेगा। सोचेंगे मैं किसी की परवाह ही नहीं करता।'

इसके बाद बद्रीनाथ को बुलाकर कहते, "बद्री, कुञ से गाड़ी निकालने को कह!"

बहुत अरसा पहले जब मन्दा बहू बनकर इस घर में आयी थी, मुँह बंद रखे चुपचाप गृहस्थी का सारा काम करती। शिवप्रसाद बाबू के वे बड़ी मेहनत के दिन थे। एक बार तो लगातार तीन दिन तक भले आदमी का पता ही नहीं लगा। घर पर खबर तक नहीं दे पाये। सुबह खा-पीकर घर से निकले, शाम को लौट आने की बात थी। वह दिन गुजरा, दूसरा दिन भी निकला। उसके बाद का दिन भी निकल गया। फिर भी कोई खबर नहीं, पता नहीं। उस समय घर में इतने नौकर-चाकर भी नहीं थे। कहीं कोई एक्सिडेंट ही तो नहीं हो गया? घर में कोई खबर लेनेवाला तक नहीं था। पूछें भी तो किससे? पतिदेव कहाँ जाते, किसी दिन मन्दा को नहीं बतलाया। मन्दा के लिए वे दिन बड़े अकल-बकल गुजरे। उन दिनों गारा भी नहीं था। मधुगुप्त लेन के मकान की खिड़की के पीछे से मन्दा तीन दिन तक सड़क की ओर देखती खड़ी रही। फिर भी पता नहीं। हिन्दू मुस्लिम दंगे के समय घर के अन्दर अकेली खड़ी डर से काँपती रही। मन

आत्मा में जैसे हर समय डर बना रहता। मन्ना ने कितनी ही बार कहा थी—आज ही न जाओगे तो कौन सी आफत आती है! इस मार-काट और मत-खराबी के समय तुम्हारे न जाने से क्या हो जायगा?'

वे गये दिन भी निकल गये। इस अकाल दिन हो या रात, छोटी छोटी बात के लिए दरवाजे के सामने धरना देना। उस समय मन्ना को लगता—दिन और दिन जैसे कटेगा ही नहीं रात बीतेगी नहीं। लेकिन दुख के दिन हों या सुख के वे गुजरते ही हैं। शिवप्रसाद बाबू के भी वे सारे दिन गुजर गये। न जाने कहाँ कहाँ मीटिंग करते फिरते, सारे दिन, सारी रात की मेहनत के बाद शायद सुबह के समय घर लौटते। इसके बाद जरा देर विश्राम किया नहीं कि कोई और चुनाव आ जाता उसी समय थोड़ा बहुत पेट में डालकर फिर निकल पड़ते। मन्ना कहतीं 'इन सब झमेलों से अगर तुम अपने को अलग ही रखो।'

शिवप्रसाद बाबू कहते 'लेकिन मेरे अलग रहने से काम कैसे चलेगा? सभी अगर घर में औरतों की तरह बैठ रहें तो इतने लोगों का क्या हाल होगा?'

मन्ना कहतीं 'उन लोगों के लिए तो सरकार है पुलिस है, वही देखेगी।'

शिवप्रसाद बाबू नाराज हो जाते। कहते 'जो बात समझती नहीं हो उस पर बहस मत किया करो। औरतों की बुद्धि से चलने पर देश का काम हो लिया।'

इसी तरह दिन गुजरते रहे। इसके बाद ही शायद सब गड़बड़ खत्म हो गयी। तभी से शिवप्रसाद बाबू को जैसे थोड़ा आराम मिला।

लेकिन तब भी बैठकखाने में मजलिस जमती। बार बार चाय आती जाती। कितनी ही बार कान लगाकर सारी बातें सुनी हैं। कुछ भी समझ में नहीं आया। पार्टीबाजी। दल में फूट। जोर की बहस चल रही थी। इसी बीच एक बार अन्दर आकर पूजा कर गये। फिर कहा। रामबाबू मिनिस्टर होंगे न श्याम बाबू। कौन मेयर होगा कौन डिप्टी मेयर होगा इसी फैसले के लिए उन लोगों की नींद हराम थी।

उस समय यहाँ-वहाँ सभी पूछ है। आज अम्यारीपुरी दल का दूसरे ही

दिन बरसात में मीटिंग होती। वहां से लौटने पर फिर आमतनान। मन्दा को कभी-कभी डर भी लगता। इस तरह घर का अँधेरा छोड़ मन्जिद में दीया जलाते कहीं खुद का घर ना नष्ट हो जाय।

मन्दा पूछती,' इधर तुम कई दिनों से ऑफिस नहीं जा रहे हो, तुम्हारा आफिस कौन देख रहा है ?"

शिवप्रसाद बाबू सवाल में जवाब देते, विज़नेस पहले कि देश पहले ?'

देश देखनेवाले तो कितने ही हैं। तुम्हारे न देखने से कुछ जानेवाला नहीं है।'

शिवप्रसाद बाबू कहते,' मैं क्या जानकर देखता हूँ ? अगर नहीं देखता हो तो शायद बच जाऊँ। लेकिन पता है इस देश के लिए कितने लोगों ने प्राण दिये हैं ! हजारों लोगों को कैद हुई और जेल में टी० बी० के शिकार हो गये। खुदीराम और गोपीराम साहा को फाँसी हुई, यतीनदास अनशन करके मरे—अगर आज हम लोग न देखें तो उन लोगों का प्राण देना बेकार ही गया। आँखों के सामने इधर उधर के आदमी लूट-पाट कर मजे उड़ायें, यह तो और देखा नहीं जाता, इसी से तो मरता हूँ। नहीं तो मेरा क्या है ? अपना विज़नेस करता रहूँ और आराम से खा-पीकर पड़ा रहूँ।

मन्दा ये सारी बातें सुनती लेकिन उसमें विरोध करने का साहस नहीं था। और उसके विरोध करने पर शिवप्रसाद बाबू सुननेवाले आदमी नहीं हैं। शिवप्रसाद बाबू हमेशा से अपनी मर्जी के मुताबिक चलते हैं आज भी चल रहे हैं। आज भी किसी किसी दिन कहाँ चले जाते हैं कुछ पता नहीं चलता। मन्दा का समय ही कहाँ मिलता है ?

बाहर के कमरे से अचानक पति की अन्दर आते देख मन्दा अवाक् रह गयी।

मन्दा ने पूछा क्या हुआ ?

शिवप्रसाद बाबू— काशीनाथ कहाँ गया ?

'वह तो तुम्हारी पूजा का इन्तजाम कर रहा है।

शिवप्रसाद बाबू जल्दी जल्दी पहनने-ओढ़ने वाले कपड़े से गाड़ी निकालने के लिए कहलाना है।

क्या इतनी रात में क्या फिर कहीं बाहर जाना है ?

"...एक बार जाना ही होगा।
कोई जरूरी मीटिंग है ?
मन्ना पीछे पीछे चलती रही। बद्रीनाथ भी खबर पाकर मालिक ... पास आया। बोला ... गुज ने गाड़ी बाहर कर ली है हुजूर।'
... में कपड़े बदलकर शिवप्रसाद बाबू फिर नीचे उतर गये। ... किसी के साथ बात करने की फुरसत नहीं है।
बद्रीनाथ भी जानता था। मन्ना ने पूछा ... बाबू कहाँ जा रहे हैं ... कुछ पता है ?
जी नहीं।
कोई टेलीफोन आया था ?
यह तो नहीं मालूम। मालिक को तो बाहर ... कमरे में बड़े बाबू के ... बात करते ... आ रहा हूँ।
... इस समय अचानक बाहर जाने की क्या जरूरत आ पड़ी ?
... गाड़ी के स्टार्ट होने की आवाज आयी। बद्रीनाथ बाहर ... बाहर पहुँचने में पहले ही गाड़ी चल दी थी। गुज ... बारे में कुछ पता नहीं ... बाबू कहाँ जाते हैं कहाँ नहीं ... कुछ भी मालूम करना मुश्किल है। बस ही गुमसुम है। दिन ... की तरह काम किये जाता है। जब कभी जाना है ... बात बात नहीं करता। गरज ... दरवाजे पर सिपोना ... और ... आवाज ... लौटकर फिर आ पहुँचता। जैसे आदमी ... नहीं ... काम कर रहा है।
शिवप्रसाद बाबू ... श्यामबाजार की एक गली में गये। मालिक का ... लौटकर गाड़ी ... आगे-पीछे करने लगा। फिर आकर गाड़ी में बैठ ... मालिक को कहाँ-कहाँ जाना होता है। मकान से बाहर और भी ... गाड़ियाँ खड़ी थीं। यहाँ कितना ही देर रुकना होगा, कुछ ठीक नहीं है। ... और भी कितनी ही गाड़ियाँ आकर खड़ी होने लगीं। ... शिवप्रसाद बाबू बाहर आये गाड़ी में बैठने ... ।

कुज ने एक्सीलेटर दबाकर इंजिन चालू कर दिया। इसके बाद सब चुप! कुज चुपचाप ही गाड़ी चलाता है। शायद यह बेकार बोलना शिवप्रसाद बाबू को पसन्द नहीं है। कानवालिस स्क्वायर के सामने पहुँचने पर, शिवप्रसाद बाबू नीचे उतर गए। बाद में कुज एक टैक्सी ले आए।

मसजिद के किनारे पर गाड़ी लगाकर कुज बाहर निकला। 'टैक्सी आजकल बहुत ही ना टैक्सी मिलती नहीं। बड़ी देर लगती है। इन्तजार करना पड़ता है।

शिवप्रसाद बाबू को मानो कोई जल्दी काम था। टैक्सी के आते ही झट से बैठ गए। फिर कुज की ओर घूमकर बोले — यहीं रहना, मैं अभी आया।"

कानवालिस स्क्वायर के बगल पर गाड़ी लगाकर कुज चुपचाप बैठा रहा। रात के नौ बज रहे थे।

○ ○ ○

वास्तव में इसकी शुरुआत १९४७ से पहले ही हो चुकी थी। कलकत्ता शहर के लोग समझ रहे थे एक और नया युग आ रहा है। फिर किसी के लिए भी हो आजादी आती ही है। लेकिन आजादी किसकी? गरीबों की या बड़े लोगों की? अपने मन में यह बात समझ में नहीं आती यह समझी नहीं जा सकती। अब बाढ़ आती है तो सब-कुछ खूब जान पर भी आखिर में कभी इधर बाबू घूम जाता है और कभी उधर पहाड़। कभी अवसर होता है तो दूसरा राज भाव का नहीं रहता है। कुज यह सब नहीं सोचता। ज्यादा दिमाग में ये बातें आती भी नहीं। सोचने की जरूरत भी नहीं। बंगाल की इन सब बातों में दिमाग नहीं लगाता। प्रसाद बाबू बड़े बाबू अविनाश बाबू कोई भी इन पर नहीं सोचता। सब-के-सब अपना पैसा के हिसाब को लेकर मशगूल रहते हैं। इसी तरह कि मधुगुप्त लेन कलकत्ता के उधर भी कोई नहीं सोचता ... अपनी एक आदमी ने। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा भी होना नहीं चाहिए था।

इसीलिए तो दस-पन्द्रह दिन में सुना था। उस समय सन्तान की उम्र कम थी। मधुगुप्त लेन वाले मकान में रहते सावन का एकान्त जीवन था। सारे दिन स्कूल में रहने के बाद शाम को अकेले निकलना ही मनाही थी।

"आखिर कुछ कहना भी, क्या हुआ ? खाया क्या नहीं ?
नहीं तुम यहाँ से जाओ । मुझे कुछ नहीं हुआ है ।
मन्ना फिर भी कुछ नहीं समझ पायी । पूछा, 'तब बतला क्या बात है ?"
मदारन ने कहा तुमसे कहना बेकार है तुम नहीं समझोगी ।
लेकिन कल भी खाया नहीं आज भी नहीं खा रहा तुझे हुआ क्या है ?"
तुम लोग ही क्या मुझे सब-कुछ बतलाते हो !
'तुझे सब बातें नहीं बतलाते ? तू यह क्या कह रहा है ?"
'माँ मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ तुम यहाँ से जाओ । मुझे अकेला रहने दो ।'
इसके बाद मन्ना ने और कुछ नहीं कहा । लड़का बड़ा हो गया है उसकी इच्छा अपनी इच्छा हो सकती है । मदारन भी उस दिन घर में न जाने कैसा हो गया । अपने पिछले जीवन की एक-एक घटना याद करने लगा । उसने क्या क्या पाया क्या मिला और क्या नहीं मिला । उसके बारे में किसी ने भी नहीं सोचा । उसके अब्बू का नम्बर किसने फिर लगाया है ? पिताजी ! उन्हें घर पर में कितनी देर के लिए देखता है । वह सारे दिन बिजनेस और अपने दूसरे कामों में लगे रहते हैं । और माँ ! उसे घर-गृहस्थी से ही फुरसत नहीं है ।
मास्टर साहब के मकान के पास पहुँचते ही देखा गली में अन्दर बहुत-सी गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं । एक उसके पिताजी की भी है । गाड़ी में अन्दर बैठा चुपचाप बैठा था । मदारन लौट पड़ा घूमकर दूसरे रास्ते से गली के अन्दर आया । इस ओर भीड़ नहीं थी । मास्टर साहब के मकान के सामने पहुँचकर मदारन ने दरवाजा खटखटाया ।
मास्टर साहब !'
कौन ?'
कुमार बाबू ने अन्दर से ही कहा दरवाजा खुला ही है अन्दर आ जाओ !"
मदारन को देखकर केदार बाबू बड़े खुश हुए, 'अरे, तुम आए हो !

अभी ज़रा पहले तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।

मेरे बारे में ही सोच रहे थे ?

बन्सर बाबू ने कहा हाँ सोच रहा था पहले तो रोज ही तुम्हारे घर जाना था उस समय तुम्हारे पिताजी की हालत इतनी अच्छी नहीं थी, लेकिन देखा अब तो तुम लोगों की हालत काफी अच्छी हो गयी है—हो गयी है न ?

सत्यव्रत इस प्रश्न से इस बात का जवाब नहीं दे पाया। बन्सर बोला

जा हुई ता है।

लेकिन ऐसो तुम लोगों की तरह सिर्फ दो चार लोगों की हालत अच्छी हुई है देश की हालत तो अच्छी नहीं हुई देश के आम लोगों की हालत तो शायद पहले से भी खराब हो गया है। बात सच है न ?

बन्सर बाबू अचानक यह सब क्या पूछ रहे हैं सत्यव्रत कुछ भी नहीं समझ पाया। टेबल के ऊपर डाइनिंग टेबल पर चिट्ठी दरी मेला चिट्ठा तह तकिया उगा दरी। ऊपर अपनट जान रहा निर रह थे। सारे कमरे में गन्दे जमा थी धारा और किताबें कापियाँ-कागज बिखर पड़े थे।

गए है कि नहीं रोना ?

सत्यव्रत ने कहा सच है।

मैं तो यही सोच रहा था। मन्मथ ने सवाल तो ठीक ही उठाया।

मन्मथ कौन ?

मेरा एक विद्यार्थी। मैं उसे हिस्ट्री पढ़ाता हूँ। इण्टरमीडिएट हिस्ट्री। पढ़ाते पढ़ाते आज एक-ब-एक मन्मथ ने मॉडर्न हिस्ट्री का यह सवाल पूछ लिया। मैंने भी शायद इसका मतलब न कोई गलत बात तो नहीं कही। यह बात तो मैंने पहले कभी सोची भी थी। तभी तुम लोगों का ध्यान आया। इसके बाद सारा इतिहास ही मानो गोरख जवाब मिल हो गया।

कहते कहते बन्सर बाबू उत्तेजित हो उठे। बोले समझे सत्यव्रत जवाब मिल हो गया। क्लास की किताब में इतना आप-आप लिखा है—आधा देश का स्वतन्त्र हुआ है लेकिन हर जगह उसके घरों में चढ़िया रहा है। मैं मन्मथ से कहा कि इस का फायदा मिलने से ही आम आदमी की भी हालत बदलेगी ऐसी कोई बात नहीं है।

सदाव्रत केदार बाबू की बात ज़रा भी नहीं समझ पाया।

"तुम कुछ समझ पा रहे हो या नहीं?"

सदाव्रत ने कहा, "मैं आपसे एक और बात पूछने आया था।"

"लेकिन तुम पहले मेरी बात का उत्तर दो, अपने पिताजी की ही मिसाल ले लो। अब तो तुम लोग काफ़ी बड़े आदमी हो गये हो, तुम्हारे पिताजी के मन में कोई दुःख नहीं है? कोई कष्ट? कोई यन्त्रणा?"

सदाव्रत ने कहा, "वह तो मुझे नहीं मालूम।"

"लेकिन 'मालूम नहीं' कह देने से तो काम नहीं चलेगा। तुम्हारा काम चलने पर भी मेरा तो नहीं चलेगा। मुझे लड़कों को पढ़ाना होता है, मुझे तो उत्तर देना ही होगा—इसीलिए मैं तभी से सोच रहा था, यह सवाल सदाव्रत से पूछना होगा। मतलब—देश को फ्रीडम मिलने से आदमी को फ्रीडम मिलती है या नहीं? और अगर मिलती है तो अपने इण्डिया में किसे मिली है? कितनों को मिली है? अभाव से छुटकारा पाना भी तो एक तरह की फ्रीडम ही है—ठीक है न?"

सदाव्रत ने बीच में ही कहा, "इस विषय पर फिर किसी दिन बात करूँगा।"

"मुझे बतला सकते हो, इस समय तुम्हारे पिताजी की इन्कम कितनी है? तुम्हारे पिताजी तो ज़मीन की ख़रीद-फ़रोख़्त का काम देखते हैं। इण्डिपेंडेंस के बाद उनके बिज़नेस में रातोंरात इतनी उन्नति कैसे हो गयी? कांग्रेस के लोगों के साथ मेलजोल है इसीलिए न?"

"नहीं, पिताजी तो किसी पार्टी के मेम्बर नहीं हैं। पिताजी ने बिज़नेस से पैसा कमाया है।"

"लेकिन उनकी इन्कम कितनी है?"

सदाव्रत—"मुझे माफ़ कीजिए मास्टर साहब, मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। मेरे माता-पिता मुझे कुछ भी नहीं बतलाते—मैं उस घर का कोई भी नहीं हूँ। असल में मैं उन लोगों का लड़का नहीं हूँ—यही बात बतलाने मैं आपके पास आया था।"

केदार बाबू अचम्भे में पड़ गये। बोले, "लड़के नहीं हो, माने?"

"कई दिनों से अच्छी तरह सो नहीं पा रहा था, नहीं पाता—समझ

म नहीं आता किसके पास जाऊ जिसके पास जाकर अपनी बात कहूँ— इराई, दहाई सकडा
और नहीं कर पा रहा था इसी आपके पास चला आया। अब चलू
शायद आकर साथ भरी यह मुलाकात अन्तिम मुलाकात हो।
कर सुना-सुना। जा कहाँ रहे हो?
लेकिन सन्तान तब तक सड़क पर पहुँच चुका था। इतनी जगह। वे
रहन वह मास्टर साहब के पास ही क्या आया? अपने म नाये इस भोला
नाथ से अपनी बातें कहकर वह कौन सी सहानुभूति चाहता था? जो
आदमी सब अपना भला-बुरा नहीं समझता, उस पर दूसरे की भलाई
बुराई का बोझ डालकर क्या सन्तान बच पायेगा? चलते चलते जरा
सन्तान के सिर का बोझ भी बढ़ गया। आस-पास म कितने लोग चल
रहे हैं। गरीब अमीर—गाड़ी रिक्शा ट्राम। सन्तान को लगा जैसे
कह अकेला है उसका अपना कोई नहीं है। गृहस्थी की छोटी मोटी बातें
जब उसकी आँखों में सामने आकर सोचने लगा। उसके कमरे म बिस्तर
की चादर समय पर क्या नहीं बदली जाती सात समय उसको क्या नहीं
पूछा जाता कि और कुछ चाहिए या नहीं। सब बिल्कुल छोटी छोटी
बातें जिनका उसने पहले कभी ख्याल भी नहीं था। लेकिन आज यही
बातें अब बड़ी भारी लगने लगी। काम करना किसी पर भी विश्वास नहीं
करता था—उसका वास्ता किसी से नहीं है। लेकिन आज सब कुछ समझ
में आता है। हालाँकि माँ-बाप पर भरोसा कर उसने कितनी ही बार हट
किया है अपना अधिकार सा मान का मानिक की। वही झूठा विश्वास
जब आज सन्तान के जीवन पर बोझा बनकर बना था। रामकृष्ण परमहंस
की बात भी इस किस्सा पर विश्वास नहीं करते थे। बस सन्तान हृदय
म इतना स्पष्ट सुनता आया है कि अविश्वास करके पाप करने से भरोसा
म इतना स्वाभ अच्छा है।

कुमार बाबू फिर स अपने ध्यान म मशगूल होने जा रहे थे कि अचानक
प्रात का दरवाजा खुला।

कौन आया था?

कोई भी नहीं। तू जा इस समय अभी खाना नहीं खाऊँगा।
खाना खाने नहीं चला गया मैं। अन्दर सब-कुछ सुन लिया है। तुम

एक बात अच्छा देखकर तो आओ तुम्हारे पिताजी घर में हैं या नहीं ?

उस समय सन्तोष खड़ा था। घर के अन्दर देख आने के बाद बोला नहीं पिताजी तो नहीं हैं।

कन्हाई बाबू ने कहा था किस समय घर पर रहते हैं समझ में नहीं आता बड़ी मुश्किल हुई।

फिर कुछ सोचकर कहा कब आने पर मिल सकेंगे ?

सुबह के समय।

तब सुबह ही आऊँगा।

कन्हाई मास्टर साहब चले गये। दूसरे दिन सुबह होते ही जा पहुँचे। पिताजी उस समय बैठकखाने में बैठे थे। शिवप्रसाद बाबू मास्टर साहब से परिचित हो नहीं पाये। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं हुआ।

आप कौन हैं ?

मैं स्कूल का मास्टर हूँ आपके लड़के सन्तोष का मास्टर कन्हाई नाथ राय। आपसे कुछ कहना था।

क्या कहना चाहते हो कहिए। रुपये चाहिए होंगे ?

जी।

शिवप्रसाद बाबू काम के आदमी हैं बातों के नहीं। पूरी बात सुने बिना ही बोले लेकिन मैं क्या साधारण आदमी हूँ पानी का पसीना एक कर कमाकर पैसा पैदा करता हूँ। मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार आपको दे रहा हूँ। बस आपको जितना मिलता है।

पचास।

पचास रुपये में एक पैसा भी ज्यादा देने की ताकत मेरी नहीं है। अगर होता तो मैं जरूर देता। आप शायद सोचते होंगे — मैं बिजनेस करता हूँ। इस समय शरीफ बनने का दिखावा करता हूँ लेकिन वास्तव में बिजनेस का और देखने का समय ही नहीं मिलता। बस ही शिवप्रसाद ने ऑफिस से काम सन्नीपुर चले जाना पड़ा।

सन्नीपुर ? कहाँ ? सन्नीपुर में शायद आजकल कुछ जमीन का नहीं रहा। बाढ़ का असर में। बाढ़ में सब कुछ बह गया है।

लेकिन वह सब छाति इसन बताना दना मेरी सामर्थ्य क बाहर है।

केदार बाबू ने कहा 'मैं वहा बात कहने तो आया था आप मेरी तन ख्वाह कुछ कम कर दीजिए।

कम !' शिवप्रसाद बाबू जैसे चौंक पड़े। अच्छी तरह से केदार बाबू को देखा। साधारण कपड़े। मोटे धन बाल। पैरों में पुरानी चप्पल। आँख पर मोटा चश्मा। डबल एम०ए० हैं सुनकर लड़के को पढ़ाने के लिए रख लिया। भले आदमी का दिमाग तो खराब नहीं हो गया।

कम कर दीजिए। मतलब ?

केदार बाबू ने कहा 'आजकल बाजार की जो हालत है उसे देखते हुए पचास रुपये लेना मेरी ज्यादती है—आप कुछ रुपये कम कर दीजिए। चारों ओर बाढ़ वगैरह आ रही है। इस हालत में कितनों ही के लिए गृहस्थी चलाना मुश्किल हो रहा होगा। आदमी लोग बड़ी तकलीफ में हैं।

शिवप्रसाद बाबू और उन्मुख हो उठे। बोले आप कहते क्या कहते क्यों हैं ?

ऐसा अजीब आदमी शिवप्रसाद बाबू ने अपनी सारी जिन्दगी में नहीं देखा। यह क्या इस दुनिया का आदमी है ? लेकिन केदार बाबू बड़े नहीं। बात, इस समय मेरा पाठ बैठने का समय नहीं है जा जगह और पढ़ाता है शायद ही लड़के बी०ए० में पढ़ रहे हैं।

ट्यूशन करने के अलावा आप और क्या करते हैं ?

केदार बाबू ने कहा समय ही नहीं मिलता और क्या करूँगा। मेरे पास बस एक ही ट्यूशन है—दिन भर में छ लड़कों को पढ़ाता हूँ।

'तब तो आप काफी रुपया कमाते होंगे।

मा तो कमाता ही हूँ।

कुल मिलाकर कितने रुपये होते हैं ?

और क्या हैं पचास और तीन सौ तीस तीस रुपये में मेरी गुजारा हो जाता है।

शिवप्रसाद बाबू ने हिसाब लगाकर कहा म तो करन एक सौ चालीस रुपये हुए और क्या ?

"उन लोगों की बात छोड़ दीजिए वे ज्यादा कुछ भी नहीं देते।

तब आपकी गुज़र कैसे होती है ?'

मैं तो बात कह रहा था, बड़ी मुश्किल से गुज़र होती है—हिस्ट्री में कोई कोई ऐसा समय आता है जब इसी तरह मुश्किल में गुज़ारा करना होता है। इंग्लैंड में ऐसी तरह की सिचुएशन एक बार १७७० में आयी थी। उस समय तो फिर भी गनीमत [illegible] हो गयी है। १८६६ में अकाल के समय में भी रहा था [illegible] जबकि अब मैं चन्द कई काम हैं।

कुमार केशार बाबू जा रहे थे कि विश्वनाथ बाबू ने रोका। पूछा, आप मेरे नौकरी करेंगे ?

बात सुनकर कुमार बाबू भौचक्के से खड़े रहे।

मेरे ऑफिस में नौकरी करेंगे ? मैं आपको दो सौ रुपये महीना दूंगा।

कुमार बाबू एकदम से कुछ भी नहीं कह पाये। कुछ देर ठहरकर बोले, 'लेकिन मेरे पास समय कहाँ है ? मैं घर घर ट्यूशन करता हूँ, नौकरी कर सकूंगा ?

'ट्यूशन छोड़ दीजिये। ट्यूशन करके जो मिलता है उससे ज़्यादा पायेंगे। आप जैसे ऑनेस्ट आदमी की ही मुझे ज़रूरत है।

लेकिन लड़कों का क्या होगा ?

उन लोगों को और कोई मास्टर मिल जायेगा।

कुमार बाबू इस पर बात [illegible] तय तो हो लिया। मेरे सभी स्टूडेंट अच्छे हैं [illegible] खराब मास्टर के हाथ पड़ते ही उनका करियर चौपट हो जायेगा—यही तो धोखा है। इसके अलावा यह तो आप जानते ही हैं कि देश की हालत कितनी खराब है ! जितना ही मैं पास किया, [illegible] खरीदने को भी पैसा नहीं है।

टूटा छाता लिए भागते भीगते जाकर पढ़ा जाते। पढ़ने के सिवाय सदाव्रत जैसे कुछ जानता ही नहीं था। आज इतने दिनों बाद जब अचानक दुनिया के साथ पहली मुलाकात हुई। पहली दोस्ती। उस पहली निकटता में ही एक ज़ोर का धक्का लगा।

सुबह होते ही माँ कमरे में आयीं। सदाव्रत ने सिर उठाकर एक बार देखा, फिर मुँह फेर लिया।

हाँ रे लाला, कल किस समय आया?

सदाव्रत अचानक कोई जवाब नहीं दे पाया।

'क्या रे, तुझे हुआ क्या है? कल गाड़ी भी नहीं ले गया! बात क्या है? वह कह रहे थे कि तेरी गाड़ी पुरानी हो गयी है, एक नयी गाड़ी खरीदनी होगी। गाड़ी के लिए गुस्सा हो तो गाड़ी चाहने ही से तो नहीं मिल जाती! आजकल एक साल पहले से नाम रजिस्ट्री कराकर रखना होता है।

फिर भी सदाव्रत ने कुछ नहीं कहा।

तभी एकाएक शिवप्रसाद बाबू कमरे में आये।

'अरे क्या हुआ? कल रात इतनी देर तक कहाँ थे? यार-दोस्तों के चक्कर में पड़ गये हो क्या?

सदाव्रत कभी भी पिता के सामने सहज होकर बात नहीं कर पाता था। पिताजी के साथ उसका सम्पर्क ही कितना है! दिन भर में उनके साथ मुलाकात ही कितनी देर के लिए होती है! बचपन से ही उस घर में उसने किताबों के बीच दिन काटे हैं। दोस्त नहीं, भाई-बहन नहीं। नौकर थे, मास्टर थे लेकिन उनसे बोलना मना था।

शिवप्रसाद बाबू को क्या उत्तर दे, वह ठीक नहीं कर पाया।

"आज मेरे साथ आफिस चलना। अब तुम्हें अभी से सब-कुछ देखना शुरू करना चाहिए।

माँ को भी सुनकर ज़रा आश्चर्य हुआ। बोलीं — तुम क्या इसे भी आफिस में बैठाओगे?

शिवप्रसाद बाबू — तुम चुप रहो, हर बात में क्यों बोलती हो! वह आफिस में बैठेगा या पढ़ाई-लिखाई करेगा, यह मैं ठीक करूँगा। मैं आज

समझा था, हम मानता होगा।

गंगाधर बाबू आ ही रहे थे लेकिन जाने कौन सी बात याद आ गयी कि अन्दर जाते लौट पड़े। बोले — मैं आज हम बेड निकलेगा तैयार रखना।

सुमन ने कहा, इसकी गाड़ी का क्या हुआ? सुमन तो कहता था इसने लिए पैसा गाड़ी के लिए—गोपा के लिए ही तो नाराज है।

गंगाधर ने उसकी ओर बिना सिर उठाया। माँ की ओर देखकर बोला—मैंने तो गोपा के बारे में कब कहा मुझे गाड़ी चाहिए! मेरा क्या दिमाग खराब हो गया है!

गिरधारी बाबू मन ही मन बोले और देखकर अवाक रह गये। इस तरह से गोपाल ने कभी बात नहीं कही थी। उनकी आँखों के सामने ही यह लड़का कितना बड़ा हो गया। लेकिन इसका भी जरा विश्वास नहीं हुआ। इस लड़के की उमर जरा सा पता नहीं चला है। आज वह गोपाल बड़ा हो गया। गोपाल के चेहरे पर थोड़ी मूंछ आ गयी है। इतना लम्बा हो गया है। फिर बगल में बाल भी जरूर होगा। उन्होंने देखा था जब दूसरा लड़का स

बाद में एकदम से ज़मीन का भाव बढ़ेगा, समझे बेटा ?'

शिवप्रसाद बाबू ने काफ़ी डाँट लगायी। छोटा-सा ऑफ़िस। अन्दर ज़ोर से बोलने पर सारे ऑफ़िस में सुनायी देता है। सभी चुपचाप सुनते रहे। निस्तब्ध ऑफ़िस में टाइपराइटर की खट-खट उन कानों को बड़ी ख़राब लगी।

नंदी बाबू ने टाइपिस्ट की ओर इशारा कर कहा, 'ए मिस्टर, इतनी खट-खट क्या कर रहे हो ? सुनते नहीं, अन्दर कितनी चिल्ल-पों मची है !'

'चिल्ल-पों हो रही है तो मैं क्या करूँ ?'

'आप, ज़रा धीरे-धीरे काम करिये न, सुनाई नहीं दे रहा।'

वह सुनने लायक कुछ है भी नहीं। एकदम व्यावसायिक बातें। कलकत्ता से पचास-साठ-सत्तर मील के बीच की सारी बेकार ज़मीन सस्ते भाव पर ख़रीदकर यहाँ ज़्यादा दाम पर बेची जाती है। सौ रुपये बीघे के हिसाब से ख़रीदकर यहाँ दो हज़ार का दाम लिया जाता है। आज न सही पर एक दिन तो कलकत्ता बड़ा होगा। और भी बड़ा होगा। १९४७ के पार्टीशन के बाद कलकत्ता कितना बढ़ जायेगा, यह क्या कोई सोच पाया था ? कोई भी नहीं सोच पाया। सोच पाये थे सिर्फ़ शिवप्रसाद बाबू।

शिवप्रसाद बाबू की इसी फ़र्म ने सारी बंजर ज़मीन ख़रीदकर, प्लाट काटकर, सड़क बनाकर जंगल को शहर में बदल दिया है। उन सब जगहों का भाव आज एक हज़ार, डेढ़ हज़ार रुपया कट्ठा है। यहीं से स्पेशल ट्रेन में चढ़कर आजकल कलकत्ता के ऑफ़िसों के बाबू लोग डेली पैसेंजरी करते हैं। लेकिन उनमें से कोई नहीं जानता, इसी कलकत्ता में कभी कितनी ही रहा-बसर होती। लोग जिस समय उल्टाडांगा, बारासात, डायमंड हार्बर से पान खाते-चबाते कलकत्ता आते हैं, जब हावड़ा, श्यामबाज़ार और चितपुर का चक्कर काटते हैं, जब लोग सियालदह स्टेशन को लेकर मारामारी करते हैं, उस समय भी दिमाग़ में नहीं आता कि उनकी धरती छोटी हुई जा रही है और शहर में आबादी बढ़ रही है। सोच ना पाते कि यहीं कलकत्ता किसी दिन दुर्गापुर तक जा पहुँचेगा। मधुगुप्त

सेठ की बनारसी की दुकान के पीछे जिस समय महूबाजार में संस्कृति केन्द्र के शम्भू आदि शाम के लिए नया नाटक चुनने के लिए मीटिंग करते हैं वे भी नहीं जान पायेंगे। बसु बाबू, अविनाश बाबू, अखिल बाबू—हिन्दुस्तान पार्क के पेंशन [illegible] को भी पता नहीं चलेगा कि अन्दर ही अन्दर क्या षड़यन्त्र चल रहा है, क्या सलाह हो रही है, क्या जालसाजी हो रही है। फड़पुकुर लेन के कुमार बाबू भी नहीं जान पाते कि ऐंशियेंट हिस्ट्री के पेजों में कब नाथूराम गोडसे ने महाराज अशोक का खून किया और कब भगवान बुद्ध की हत्या करता है माओ-त्से-तुंग। रातोरात कलकत्ता बदल जाता है, दुनिया बदल जाती है। सदाव्रत भी बदल जाता है।

शिवप्रसाद बाबू जब सारी दुनिया की चिन्ता में पड़ जाते हैं तब उन्हें पता नहीं कि रातोरात उनके गृह का नक्शा भी बदल गया है। सदाव्रत बड़ा हो गया है।

सदाव्रत सब सुन रहा था। सुन रहा था और देख रहा था। बचपन से ही बाबा के कारोबार की बातें सुन रहा है। आँखों से आज देख रहा। आँखों में आनन्द और हाथ में कलम लिये लाइन-की-लाइन क्लर्क बैठे हैं और पर उनका भाग्य मालिक है। उन सब का क्या यहाँ एक दिन इन लोगों का भाग्य विधाता बनकर रहना होगा! इसी आफिस के अन्दर जमीन के नीचे में [illegible] होनेवाले कर्मचारियों की ओर नजर रखते सारी जिन्दगी गुजारनी होगी! लाभ और प्रॉफिट? पाउंड शिलिंग पेंस की नजर धुर!

सदा!

अचानक सदाव्रत की विचारधारा टूट गयी। शिवप्रसाद बाबू खड़े हो गये थे।

लिसन माई नाईस। माई [illegible]। अभी से यह सब देखने को मैं तुमसे नहीं कह रहा। यह भी नहीं कह रहा कि तुमको अभी से यहाँ बैठना होगा। लेकिन कुछ जानकारी रखना जरूरी है। अपने लिए तुम कौन-सा प्रोग्राम बनाओ, सब तुम्हीं को ठीक करना होगा। मैं तुम्हारे ऊपर कुछ थोपना नहीं करना चाहता।

सदाव्रत चुपचाप सब-कुछ सुनता रहा।

'इतने दिन तक मैंने तुमसे यह सब नहीं कहा। लेकिन बड़े धीरे धीरे बड़ी होई होती जा रही है। हमारी हिस्ट्री, बायोग्राफी, महाभारत, गीता रामायण सब-कुछ फिर से लिखने का समय आ गया है। आज सब-कुछ इंडिया में ही हो गया है, लेकिन इतने दिनों बाद यह सोचने का टाइम आया है कि हम इस आज़ादी के लायक हैं या नहीं। और लायक बनने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए। मैं जिस शहर में पैदा हुआ हूँ उसमें तुम पैदा नहीं हुए। मैंने जो बंगाल नहीं देखा, तुम वही बंगाल आज देख रहे हो। यह और भी बदलेगा। तुम लोग ज़्यादा इनजॉय कर रहे हो, इसी से हम लोगों की अपेक्षा तुम लोगों की ज़िम्मेदारी भी ज़्यादा है। तुम लोग ही देश को आगे बढ़ाओगे। स्कूल-कॉलेज में इतने दिन जो पढ़ाई-लिखाई की वह बहुत ही कम है, तुम लोगों की असली एजुकेशन तो अब शुरू हुई है। और कोई भी प्रॉब्लम होने पर तुमको अभी से बिज़नेस या नौकरी में लगा देता, लेकिन मैं तुम्हारा करियर खराब नहीं करना चाहता—तुम सोचो। खूब अच्छी तरह से सोचो कि तुम कौन-सा करियर पसन्द करोगे। तुम जो कुछ चाहोगे मैं वही देने की कोशिश करूँगा। रुपये की चिन्ता मत करना। अगर इच्छा हो तो अमेरिका जा सकते हो, यू० के० जा सकते हो। ऑस्ट्रेलिया या वेस्ट जर्मनी जहाँ भी तुम्हारी इच्छा हो जा सकते हो—मैं सब इन्तज़ाम कर दूँगा। आजकल डॉलर का बड़ा डिफिकल्टी है, एक्सचेंज ट्रबल तो है ही, लेकिन तुमको शायद पता हो, मिनिस्ट्री में मेरा इन्फ्लुएंस है। मैं सब ठीक कर लूँगा, इस बारे में तुम्हें कुछ भी नहीं सोचना होगा।

फिर अचानक ही क्या मन में आया। बोले, 'बाप तो अपने ड्राइंग-रूम में इस सामने से सजाए रखते हो। देखो न, कौन बैठा है!

विश्वनाथ बाबू ने अचानक बात बदल दी।

अच्छा, तुम्हारे एक ट्यूटर थे, जाने क्या नाम था उनका?

'प्रह्लाद राय। रीसेंटली उनके साथ मेरी मुलाकात हुई है।

"क्यों? उनसे आपकी मुलाकात कब हुई? वह आदमी सच्चा है, वेरी ऑनेस्ट। यह भी मानता हूँ कि ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी। आज भी मुझे वह घटना याद है।

"मेरे आदमी ने एक दिन मेरे पास आकर अपनी पॉकेट में दस रुपये

कम कर देने को कहा। एकदम सिली, तुम्हीं कहो। सुनकर उस दिन मुझे खूब हँसी आयी थी। वैसे मैं हँसा नहीं था लेकिन उसी दिन समझ गया कि इस आदमी से जीवन में कुछ भी नहीं होगा। उसी समय जान गया, आदमी कम्पलीटली फेल्यार है—उससे कुछ भी नहीं होगा"—इसके बाद कुछ देर के लिए निरंजनदास बाबू रुके फिर कहने लगे 'असल में तुम्हें यह सब बतलाना बेकार है तुम क्वाइट क्वालीफाइड क्वाइट एजूकेटेड, ये बातें तुम मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से जानते हो यह सब ऑनेस्टी आज के जमाने में नहीं चलती। यह 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' का जमाना है। यह भी एक तरह की लड़ाई है। यह दुनिया ही लड़ाई का मैदान है। हम लोग जो मांस-मछली खाते हैं क्यों खाते हैं? क्योंकि खुद जिन्दा रहने के लिए उन्हें मारना ही होगा। हिंसा अहिंसा की बात नहीं है। इसी तरह हम लोगों को मारकर कोई बचे रहना चाहता है तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता। उसे क्या दोष दिया जा सकता है? तुम्हीं बोलो। इसलिए हमें अपना अपना आत्मरक्षा के लिए सतर्क रहना है। इस आत्मरक्षा के लिए कभी-कभी हिंस्र [illegible] होना होगा। यह भी एक तरह का धर्म है। और धर्म-युद्ध की बात तो अपने हिन्दू शास्त्रों में है ही—किसी से कह रहा था कि आदमी एकदम पूअर है कहीं तुम भी उसके प्रिंसिपल्स पर अमल न कर बैठना। अरे हाँ—जाने क्या नाम था उसका?

केदारनाथ राय।

'हाँ, तो ये सब बात छोड़ो। यह सब कहने के लिए ही आज तुम्हें यहाँ ले आया। आज गोआ के मामले पर मीटिंग है मैं यहीं उतरूँगा, इसी हाजरा पार्क में। फिर तुम्हें घर पहुँचाकर मुझे यहाँ से ले जायगा।'

कहकर गाड़ी से उतर पड़े। बोले 'सुज, इधर फुटपाथ पर गाड़ी रखना।'

हाजरा पार्क में उस समय अपार भीड़ जमा थी। चारों ओर बड़े-बड़े पोस्टर झूल रहे थे। 'पोर्तुगीज साम्राज्यवाद गोआ छोड़ो!' 'गोआ के बलिदानियों का आदर करो!' निरंजनदास बाबू मीटिंग की भीड़ में घुस गये।

सुज ने गाड़ी स्टार्ट कर दी थी। दीपंकर ने कहा, 'सुज, अभी घर नहीं जाऊँगा मुझे जरा बहूबाजार-स्ट्रीट छोड़ दो।'

"बड़बाजार ?'
"हाँ, वहीं मेडिकल कॉलिज के सामने—मधुगुप्त लेन।'
सुज ने मिस्त्री के पुतले की तरह स्टियरिंग ह्वील घुमा दिया।

□ □ □

मधुगुप्त लेन की गली के मुहाने पर बताने की दुकान के पीछे उस समय समागम बहुत छिपी हुई थी। क्लब के लिए यह रोजमर्रा की बात है। जब सारे मेम्बर आ जाते हैं, सब आर्टिस्ट आ पहुँचते हैं तब शुरू होना है रिहर्सल। बस इस बार का ड्रामा नया है। कालीपद मास्टरियर आदमी है। बामर-लॅरी आफिस में काम करता है। सबसे ज्यादा जोश उसी का है। बराबर कहता रहता है— हमेशा कल्चर-कल्चर करते हो, कल्चर का मतलब समझते हो? इब्सन पढ़ा है? बर्नार्ड शॉ पढ़ा है? टेनेसी विलियम्स पढ़ा है? आर्थर मिलर पढ़ा है?'

मधुगुप्त लेन क्लब के किसी मेम्बर ने यह सब नहीं पढ़ा था। वे लोग आफिस में नौकरी करते हैं, सिनेमा ड्रामा देखते हैं, उनकी पहुँच ज्यादा-से ज्यादा शिशिर भादुड़ी और अहीन्द्र चौधरी तक है। डा० एन० राय और क्षीरोदप्रसाद विद्याविनोद का नाम सुन रखा है। उस सब पर कभी सिर नहीं खपाया। उनके लिए पढ़ाई लिखाई माने बंगला अखबार।

हाँ, तो उसी कालीपद ने ही एक लेटेस्ट टेकनीक का नाटक लिख डाला। 'सोना मिट्टी', अर्थात् पाकिस्तान से चले आये रिफ्यूजियों की पृष्ठ-भूमि पर। नाटक हीरोइन प्रधान है। शुरू से अन्त तक हीरोइन ही सब-कुछ, दूसरे सारे रोल सेकंडरी हैं। जिस दिन पहली बार नाटक पढ़ा गया, कालीपद की एण्टी पार्टी के लड़कों को भी कहना पड़ा—'न भाई, तुममें आर्ट है। मोहल्ले का लड़का कहकर हम लोग अब तक नहीं पहचान पाये।

उसी दिन से 'सोना मिट्टी' का रिहर्सल शुरू हो गया है। चन्दा हुआ, अभी भी हो रहा है। मुश्किल हुई हीरोइन को लेकर। मंच भी मिल गया। [illegible] जितनी ही लड़कियों को बुला-बुलाकर लाया—दोस्त-दुश्मन से गली टोले की। [illegible] बेमरी और फॉल्स जूड़े लगाने पर किसी की उम्र का अन्दाज करना मुश्किल है। लेकिन दो-एक दिन रिहर्सल होने के बाद ही सब-न-कुछ ऐब निकल आता। कोई ठीक से [illegible] का उच्चारण नहीं कर

पानी कोई चन्द्र बिंदु बोलने में गड़बड़ा जाती। फाँसी बहुत बहुत 'फामी पड़ जाता।

आखिर कालीप्रसाद ने आगे आना ठान लिया। कहता— देखता हूँ एक स्मार्ट हीरोइन के लिए ऐसे खराब होगा—मेरे ड्रामा की थीम ही चौपट हो जायेगी।'

सारे मेम्बर साथ घरकर हीरोइन की खोज में लग गये। स्टार रंगमहल और किरणकुला में जितने अभ्यस्त थियेटर होते सब टटोलकर हीरोइन की राज में ऐलान पहुँचते।

किसी को दिखाकर शम्भू कहता यह कैसी रहेगी ? तो लोग इसके अलावा पाठ का नाम पाठ बड़ा डिफ है।

इसी तरह कोई-न-कोई कमी निकल ही आती। किसी का लाउडर पाठ डिफ है किसी का प्रेम्यू एक्सप्रेशन पसंद होता तो किसी का स्टेपिंग खराब। जगा होती ... ... न मिलती। शम्भू जिसको भी देखता मन ही मन ... ... कर लेता। आखिर जब मेरी मिन्टी का स्टेज होना लग भग ... हो गया कुन्नी नाम की लड़की आयी।

शम्भूदत्त ने कालीप्रसाद के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से पूछा कैसी है पसन्द है ?

कालीप्रसाद उस समय एकटक कुन्ती की ओर देख रहा था। वह प्रश्न ...— ... ओर से ... कालीप्रसाद एक कप चाय ... सोचता और बार-बार ... की ओर देखता।

चाय का ... कुन्ती ने पूछा ... क्या ... रहे हो ?

कालीप्रसाद ... गया। बात बदलकर बोला, 'आपने कौन-कौन से ड्रामा में भाग लिया है ?'

मैंने बनफूल ... के स्वर्णलता नाटक में ... का पार्ट किया है ... समिति के जिसकी जमी मर्जी नाटक में अनन्त का पार्ट किया है टाउन मार्केट ओरिएंटल ... के अभिज्ञान ड्रामे में

कालीप्रसाद ने टोका ... ... बात करती हैं ?'

कुन्ती ... की तरह देखती रही 'लाइट-वेट माने ?

किसी पोज़ के मानी नहीं पड़े ?

कालीपद ने चाय की चुस्की ली। गिरीश घोष का नाम नहीं सुना, इन लोगों को लेकर ड्रामा करना भी एक आफत है। क्या कहे समझ में नहीं आ रहा था।

पास बैठे शम्भू ने धीरे से कहा "इसी को ले ले कालीपद, ऐसी फिगर और नहीं मिलेगा—बड़ा मुश्किल में पड़ा है।

"शम्भू !

अचानक अपना नाम सुनकर शम्भू ने मुड़कर देखा। लेकिन ठीक से पहचान नहीं पाया। कोट पैंट-टाई पहने ध्यान से चेहरा देखकर ही पहचान पाया।

"अरे सदाव्रत क्या हाल है ?

शम्भू ने उठकर सदाव्रत को दोनों हाथों में जकड़ लिया।

यहाँ लड़कियाँ भी आ सकती हैं सदाव्रत ने नहीं सोचा था। जरा संकोच हुआ। क्लब के सारे मेम्बर उसकी ओर ताक रहे थे।

सदाव्रत ने कहा 'तुमसे एक काम था जरा बाहर आयेगा ? बड़ा जरूरी काम है।

'बाहर क्या, यहीं बैठ न, उस दिन यहाँ तक आकर चला गया, आज बैठ न जरा।' कहकर सदाव्रत का हाथ खींचकर उसे बैठा लिया।

सदाव्रत की बैठने की जरा भी इच्छा नहीं थी। लेकिन न बैठना भी अच्छा नहीं लगता था। सदाव्रत को ऐसी अजीब आबहवा में आने का पहले कभी मौका नहीं हुआ था। टीन की छत। दीवार पर कितनी-सी तसवीरें टँगी थीं। रामकृष्ण परमहंस का फोटो। गिरीश घोष की फोटो। और भी कितना ही फोटो फ्रेम में मढ़ी झूल रही थीं। सिगरेट का धुआँ, चाय के कपों की खनखन। सभी सदाव्रत की ओर देख रहे थे। शायद इन लोगों के किसी जरूरी काम में बाधा पड़ी।

सदाव्रत ने पूछा, "तुम लोग शायद कोई काम कर रहे थे ?"

शम्भू ने कहा 'नहीं-नहीं, तू बैठ। कालीपद तू अपना काम कर।'

कालीपद फिर पूछने लगा, "अच्छा आप गा सकती हैं ?

मुन्नी ने कहा, 'मैंने तो पहले ही शम्भूबाबू को बतला दिया था कि मैं गाना नहीं जानती। अगर जानती होती तो स्टार में काम मिल जाता, आप

लोगो क यहाँ नहा आता होता !'

बातापन न कहा अरे नहा, गान-वान की मुझे जरूरत नहा है। बस हा पूछा अगर जानती तो मेरी मिट्टी म एकाध गीत डाल देता। मगर काई बात नहीं है। नाच जानता हैं?

मनोव्रत बराक म बठा-बठा बोर हो गया था। वस यह भी एक जगह है। मास्टर साहब म जाना दुनिया जस यहाँ एकदम भूठी पड जाती है। एक आर निद्रा और दूसरी ओर रियलिज्म। यह रियलिज्म ही एक दिन हिस्ट्री हो जायगा। तब बच्चे बाद जब नाम उसी पर रिसच करेंगे। प्रोफेसर साम मार्गी मार्ग थीसिस लिखेंग। डाक्टरेट लेंग। मनोव्रत न लडकी को अच्छी तरह सम्भा। दखन म उन लोगो से बीच वहा एक लम्बी थी। पता लिया तरह का जवाब नहा। चाय पाकर एक पान मुह म रख लिया। सिफ दस साल पहले तक इस घटना की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। जबकि आज यह सत्य है—पाना की तरह सहज और सच! लडकी की बातें बाला सब सना आ रहा था। आँखें मुह चेहरा—कुछ भी स्मिर साथा कहा न रहा था। लकिन आज की सारी घटनाओ ने जस उस पागल बना दिया था। गुरू दशा अपना जमान की खरीद फरोख्त का आफिस, शाम को डाक्टर पाप का याओ अभियान माटिंग, और उसी के बाद मधु गुप्त सन म अन्दर बहुबाजार संस्कृति सघ का यह आवन्दा सब कुछ जस यहा धमन-धमन-सा लग रहा था। मनोव्रत को लगा, सब-कुछ जस छिन्न भिन्न है। एक-दूसर स बिलकुल अलग! कहा भी जस मल नहा है!

अचानक शम्भू की आर घूमकर मनोव्रत न कहा, 'तुमस एक काम था शम्भू जरा बाहर चल!

शम्भू उठ खड़ा हुआ। बाला, चल!'

□ □ □

बराक क बाहर आकर मनोव्रत खड़ा हो गया, शम्भू भी आया। पूछा, क्या कह रहा था? अब कह!

मनोव्रत क्या कहन-कहन क्या कह गया, खुद भी नहीं समझ पाया। पूछा यह लडका कौन है? क्या करन आया है?

शम्भू न कहा टाइमन स रहा हूँ। पता नहा, कर पायगा या नहीं।

सदाव्रत ने कहा, "कितने ही दिनों से तेरी ओर 'जाऊँ-जाऊँ' सोच रहा था—मैं अब शायद ज्यादा दिन कलकत्ता नहीं रहूँगा। क्या करूँगा कुछ तय नहीं कर पा रहा।

विलायत चला जा।'

'इस समय कैसे जा सकता हूँ?'

क्यों? अखबार में रोज ही तो देखता हूँ, कितने ही लोग अमरीका, चीन और रूस में घूमने जा रहे हैं। सरकार और साहित्यिक भी जाते हैं आजकल तो सभी इन्वाइटेड रहते हैं।'

लेकिन मुझे कौन ले जायगा? लेबर-एक्सचेंज से ही नहीं मिलता, आजकल बड़ी मन्दी हो गयी है।'

शम्भू ने कहा, "इससे तुझे क्या! तेरे पिताजी तो हैं, उनके साथ तो कितने ही मिनिस्टरों की जान-पहचान है।

"वह सब रहने दे। असल में मेरा एक और ही ध्यान है—तेरे पास मैं एक दूसरे ही काम से आया हूँ। तेरा वह दोस्त कहाँ है? वही उस दिन वाला, जो कह रहा था...'

शम्भू ने कहा, "कौन? क्या कह रहा था? तेरे बारे में?

सदाव्रत सहज स्वर में बोला, "वैसे मैंने उसकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया है। उस बात के लिए जरा भी 'वरीड' नहीं हूँ, लेकिन बात जब उठी है, तब जरूर ही कहीं कुछ हुआ है।

'कौन-सी बात?' शम्भू कुछ भी समझ नहीं पाकर सदाव्रत की ओर एकटक देखता रहा।

सदाव्रत ने कहा, 'अच्छा, तुझे क्या लगता है? तू तो काफी दिनों से मुझे जानता है, मेरे पिताजी को भी देखा है!'

लेकिन असल में बात क्या है?'

'आज मैं पिताजी के ऑफिस में गया था। सोचा, बात चलाऊँगा। लेकिन किससे पूछूँ, यही ठीक नहीं कर पाया। लेकिन कभी-कभी सोचता हूँ—आदमी का विचार क्या उसकी वय पर ही होगा? आदमी का वय उसकी हैरिडिटी—क्या इतना ही इम्पॉर्टेन्ट फैक्टर है? फिर सोचता हूँ...'

लेकिन मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा।'

लेकिन यह आदमी वही है जिसकी जबान से पहली बार सुना कि मैं अपने पिताजी का एडाप्टेड सन हूँ। मुझे गोद लिया गया है। लेकिन मैं [illegible] या कुछ भी हूँ इतना जानने का तो मुझे भी अधिकार है कि मैं किस फैमिली का हूँ—असल में मेरे माँ-बाप कौन हैं? वे लोग कहाँ रहते हैं? अभी तक जिन्दा हैं या नहीं?

शम्भू ने इतना कहकर [illegible] के चेहरे की ओर अच्छी तरह से देखा। आश्चर्य! एक समय [illegible] में मुहल्ले के सारे लड़के जलते थे। आज इतने दिनों बाद शम्भू को लगा जैसे [illegible] टूट चुका है।

नौकरी का क्या हुआ?

कई दिनों से गाड़ी लेकर नहीं निकला भाई। लगता है मेरा कुछ भी नहीं—किसी चीज पर भी मेरा राइट नहीं है। मैं लाइफ की इस दुनिया में जैसे ट्रेसपासर हूँ।

अरे तू अभी किन खयालों में पड़ा है! देख तो, तू कितना बड़ा आदमी है! [illegible] के साथ [illegible] का मुकाबला करके देख ले! कितने ही लोग [illegible] कमर में [illegible] भी नहीं पाते, [illegible] पहनने की बात तो छोड़ दो। और शायद तुझे नहीं मालूम मैं जानता हूँ बस, ट्राम और टैक्सी में जो [illegible] टैरिलिन की बुशर्ट और गैबरडीन ट्राउजर पहनकर घूमते हैं अक्सर वे कितने घाटे में हैं? वही दफ्तर में सारे दिन [illegible] काम करके [illegible] आकर बैठते हैं। आखिर क्यों? हम लोगों के घर में [illegible] पता है? भाई-बहन लिखते पढ़ते हैं इसी से [illegible] कुछ समय काट जाते हैं—हम लोगों की तरह साथ बैठा [illegible]! अगर तुझे [illegible] है तो क्या हम लोगों को राइट है? असल में तो हम सारे के सारे [illegible] ट्रेसपासर हैं।



[illegible] शम्भू हँसने लगा। हँसकर शायद कुछ और कहनेवाला था अचानक रुकना पड़ा। एक लड़की [illegible] से निकल रही थी। शम्भू चौंक [illegible] रहा। लड़की [illegible] गली पार कर मधुगुप्त लेन की ओर जा रही थी। शम्भू जाकर सामने खड़ा हो गया। पूछा 'यह क्या, आप तो

जा रहा हूँ।'

सत्यव्रत ने भी देखा वही लड़की। कुन्नी।

कुन्नी ने कहा, 'इसलिये, अभी तक आप लोगों का कुछ भी ठीक नहीं है, पहले ठीक करिये फिर मुझे बुलाइयेगा।"

कहकर वह जाने लगी। शम्भू की बात पर रुकी। बोली, 'देखिये, आपने कहा था इसी से मैं आप लोगों के चक्कर में आयी हूँ। नहीं तो मुझे और भी काम है।"

'लेकिन कालीपद? कालीपद न हो तो मेरी मिट्टी [illegible] है, कालीपद ने आपसे क्या कहा?'

कुन्नी ने कहा, 'देखिये मैं [illegible] जानती हूँ या नहीं जानती, मैंने गिरीश घोष का नाम सुना है या नहीं सुना इन बातों का इम्तिहान देने आपके यहाँ नहीं आयी हूँ। मुझे जो लोग पाठ देते हैं वे मुझे देखकर ही पाठ देते हैं, मेरी परीक्षा लेकर पाठ नहीं देते।'

'लेकिन ज़रा देर और ठहरिये न! मैं कालीपद से पूछता हूँ।'

लेकिन कुन्नी और नहीं रुकी। जाते जाते कह गयी, 'अब अगर मुझसे काम कराना हो तो पहले मेरे घर जाकर पिचहत्तर रुपये दे आइयेगा तब काम करने आऊँगी, बिना हाथ में नक़द रुपए आये अब कहीं भी नहीं जाऊँगी।

कहकर लड़की चली गयी। उसे वापस लाने के लिए शम्भू की सारी कोशिश सारी खुशामद बेकार गया।

शम्भू चुपचाप खड़ा था। सत्यव्रत ने कहा, 'वह कहाँ रहती है? क्या करती है?'

दरवाज़े की ओर देखते हुए शम्भू ने कहा, 'करती क्या, मुहल्ले मुहल्ले नाटक करती फिरती है। देखा न आजकल कितना घमण्ड हो गया है इन लोगों को! और कालीपद भी अजीब है, करना तो है [illegible] ड्रामा, उसके लिए इतनी पूछताछ किस बात की? और जब हम लोग पिचहत्तर रुपए से ज़्यादा दे नहीं पायेंगे तो इतनी जाँच पड़ताल की क्या ज़रूरत?'

लेकिन देखने में तो ठीक ही है, शायद पाठ ठीक से नहीं कर

पानी ?

'अरे यह बात नहीं है वह एकदम मर्नाड थों हो गया है—यही अपना कालीचरन ! हम लोग कोई नाट्य साहित्य की उन्नति के लिए तो ड्रामा कर रहे हैं। बस, कर रहे हैं जिससे एक रात चाप-कटलेट खा पायें जरा मौज मजा करें, और क्या ! इसके अलावा दो नाइट-प्ले कर पाने पर गवनमेंट से एकाध हजार रुपया वसूल कर लेंगे। हाँ, सो इसीलिए इतनी खुशामद करनी पड़ रही है।

उन लोगों को पैसा देना होगा न ?

सिर्फ रुपये ? रुपये भी देने होंगे ऊपर से खुशामद भी करनी होगी। गाड़ी से घर तक पहुँचाना भी होगा सो अलग। आजकल इन लोगों की खूब डिमाण्ड है न ! इससे तो भाई पहले अच्छा था, लड़के दाढ़ी मूँछ साफ कराके लड़की का पाट करते थे। खैर इन सब बातों को छोड़ तू इन बातों पर दिमाग मत खराब कर।

शरतचन्द्र ने कहा 'मैं दिमाग नहीं खराब कर रहा, लेकिन मैं उस आदमी से एक बार पूछना चाहता हूँ कि उन्हें खबर कहाँ से मिली ?'

लेकिन दुलालचन्द्र तो आज आये नहीं हैं मैं पूछ लूँगा।

लेकिन मेरा नाम मत लेना। मैंने पूछा है यह न कह देना। मैं फिर आऊँगा। अगर बात सच है तो मुझे सब-कुछ नये सिरे से सोचना होगा। जिन्दगी को अब तक जिस तरह देखा है अब उस तरह काम नहीं चलेगा।

शम्भू ने पीठ थपथपाकर उसकी हिम्मत बढ़ाई, 'अरे, तू पढ़ा लिखा है तो सब बातों पर इतना ध्यान क्यों देता है ? तू हम लोगों की तरह मूर्ख तो नहीं है जहाँ तक मेरा खयाल है दुलाल बाबू ने मजाक में कहा होगा।

मजाक !

शम्भू को शायद अन्दर काफी काम था। उसने कहा, 'ठीक है फिर किसी दिन आना मैं पूछ रखूँगा। अब जरा अन्दर जाकर देखूँ, आखिर हुआ क्या ? लड़का नाराज होकर क्यों चली गयी ? अच्छा !"

जाकर अन्दर पहुँचते ही देखा—कालीचरन गुमसुम बैठा है। सभी का चेहरा उतरा हुआ है। शम्भू ने कहा "क्या कालीचरन क्या हुआ ? मुन्नीलाल

पाला होकर क्या चली गयी ?'

कालीपद ने एक सिगरेट सुलगाया। बोला "ऊँह, उससे नहीं होगा। मेरा सब्जेक्ट है रिफ्यूजी प्राब्लम उसके गले अभी तक वही मलोंडी लगी हुई है ? अरे बाबा, यह डा० एल० राय का 'चन्द्रगुप्त' तो है नहीं या मयाद-पतन भी नहीं है—कांपती आवाज़ में एक्टिंग करने का समय कब का जा चुका है कोई खबर ही नहीं रखता। इब्सन के आने से ड्रामा की वर्ल्ड में कितना बड़ा रिवोल्यूशन हो गया है इसका भी किसी को पता नहीं है—और टेनसि विलियम्स के बाद से अमेरिकन ड्रामा होलसेल चेंज हो गया है। बांगला देश में कोई इसे जानता भी नहीं।

उस ओर शक्तिपद बैठा था। उसने कहा "लेकिन हम लोग ड्रामा फेस्टिवल में तो नाम लिखा नहीं रहे हैं। हम लोग तो मज़ा करने के लिए ही ड्रामा कर रहे हैं।

कालीपद गुस्सा हो गया। बोला, "तब वही करो। मौज करके ही अगर देश की उन्नति करना चाहते हो करो, लेकिन बाबा, मुझे तब माफ करो। इससे ही अगर बंगाली जाति का नाम रोशन होना हो तो वही करो कोई भी नहीं रोकेगा। लेकिन मैं कह देता हूँ एक दिन इस बंगाल में ही इब्सन, टेनसि विलियम्स और आर्थर मिलर पैदा होंगे। मेरी यह 'मेरा मिट्टी' ही एक दिन बंगाली कल्चर का गौरव होगी।

फिर शम्भू की ओर हाथ बढ़ाकर बोला "ला एक सिगरेट निकाल, दम लगाता-लगाता घर जाऊँ।

□ □ □

कुंज का यहीं आना ही छोड़ दिया था। चलते-चलते सनातन मधुगुप्त लेन पार कर ट्राम के रास्ते पर आ गया। इस ओर फुटपाथ पर चलना मुश्किल है। रास्ते में ही बाज़ार लग गया है। एक बार बस में चढ़ने की कोशिश की। झूलते-लटकते लोग। बसी-चढ़ी डबल डेकर बस। ट्राम से जाने पर एस्प्लनेड चेंज करना होगा। क्या करे सनातन ठीक नहीं कर पा रहा था। काफी देर फुटपाथ पर चलता रहा। सीधे एकदम दक्षिण की ओर। अचानक एक खाली टैक्सी रोककर सनातन बैठ ही रहा था। टैक्सीवाले ने पूछा "कहाँ जायेंगे ?"

'बालीगंज!'

लेकिन दरवाज़ा खोलकर टैक्सी में बैठते ही एक गड़बड़ हुई।

'देखिए, ये लोग मेरे पीछे लगे हैं।'

गणपत पीछे देखते ही भौंचक्का रह गया। वही लड़की। कुन्ती। कुन्ती को भी आश्चर्य हुआ। शंभू बाबू के कमरे में इसी आदमी को तो देखा था।

'कौन? पीछे-पीछे कौन आ रहा है?'

कुन्ती ने पीछे की ओर इशारा कर दिया। अँधेरे के कारण साफ दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी गणपत उस ओर बढ़ा। लेकिन भीड़ में कुछ भी पता नहीं चला। कुछ लोग सिर्फ संदेहजनक लगे।

गणपत ने पूछा, 'कहाँ?'

शायद कुन्ती भी खोज रही थी। बोली, 'वह है न!'

लेकिन भीड़ में उसने किसे दिखलाया, ठीक से समझ में नहीं आया। सभी इत्मीनान से सीधे-सादे आदमी। अपने अपने काम से जा रहे थे। कोई भी अपराधी जैसा नहीं लगता था। कम-से-कम किसी के चेहरे से तो ऐसा नहीं लगता था। और रुके रहना भी ठीक नहीं था। साथ में कुन्ती भी थी। गणपत लौटकर टैक्सी की ओर आया। पूछा, 'तुम कहाँ जाओगी?'

कुन्ती ने कहा, 'आप अगर ज़रा छोड़ देते मुझे...'

'कहाँ रहती हो तुम?'

'आप किस ओर जायेंगे?'

टैक्सी [illegible] थी। गणपत ने कहा, 'तुम बैठो। मुझे बालीगंज जाना है। तुम्हें जहाँ जाना हो छोड़ दूँगा।'

टैक्सी चलने लगी। सीधे वेलिंग्टन स्क्वायर की ओर जाकर मोड़ पर घूमी। कुन्ती चुपचाप बैठी थी। गणपत ने आखिर में पूछा, 'उन लोगों ने क्या तुम्हारा पीछा किया था?'

कुन्ती ने गणपत की ओर देखा। बोली, 'आप भी तो उसी क्लब के मेम्बर हैं।'

'मेम्बर! मैं तो वहाँ किसी को पहचानता भी नहीं। शंभू से थोड़ा काम था, इसीलिए गया था।

कुन्नी ने कहा, "तब सुनिये, आप शायद नहीं जानते वहाँ फिर मत जाइयेगा।"

"क्यों ?"

"वे सब कम्युनिस्ट हैं," कुन्नी ने कहा।

सत्यव्रत को इससे पहले शायद इतना आश्चर्य कभी नहीं हुआ था। कम्युनिस्ट! उसने जरा ध्यान से लड़की की ओर देखा। आज कैसा सन्देह सा होने लगा। चेहरे से तो कभी नहीं लगती। अब समझ में आया—लोग पीछे क्या लगे थे।

लेकिन कुन्नी ने खुद ही सफाई दी। बोली, "शायद आप सोचते होंगे मैं बेकार में उन लोगों को बदनाम कर रही हूँ। शायद सोचते होंगे मेरा कोई खराब मतलब है लेकिन विश्वास करिये मैं किसी भी दल की नहीं हूँ। मैं कांग्रेस के साथ भी नहीं, कम्युनिस्टों के साथ भी नहीं हूँ। सिर्फ पेट के लिए पेट पालने के लिए यह धंधा करना पड़ रहा है। मेरी साड़ी होठों की लिप-स्टिक देखकर शायद आपको लगेगा कि मेरी हालत अच्छी है, लेकिन सच मानिये मेरे इस वक्त में सिर्फ तीन रुपये हैं। सोचा था इन लोगों से आज कुछ एडवांस मिलेगा, लेकिन कुछ भी नहीं मिला। ऊपर से मेरी पढ़ाई लिखाई और बुद्धि पर टिप्पणी की। यही सब देखकर मुझे गुस्सा आ गया मैं चली आयी।"

सत्यव्रत चुप ही रहा। सच ही तो लड़की ने सिल्क की साड़ी पहन रखी है पर इतनी दूर का दिखावटी था। होठों पर की लिपस्टिक भी अब साफ़-साफ़ नज़र आने लगी। बदन में सेंट लगाया है। खुशबू आ रही थी।

एक और मोड़ लेते हुए सत्यव्रत ने पूछा, "तुम कहाँ जाओगी ?"

लड़की ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। अचानक सत्यव्रत ने देखा—लड़की की आँखें भरी हैं। बीच-बीच में चेहरे पर सड़क की रोशनी आकर पड़ती। लेकिन कहा पर क्या कहना ठीक होगा—कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। लड़की को तो आखिर इतना क्या हो सकता है

अचानक लड़की सीधे होकर बैठी, "नहीं।"

"नहीं ? क्या ? अचानक क्या हो गया ?"

कुन्नी ने कहा, 'अचानक नहीं। आपको मैं जानती नहीं, पहचानती नहीं। इस तरह आपसे सब-कुछ कहना भी नहीं चाहती थी। आपने ही मुझे गाड़ी में क्यों बैठाया? मैं चोर डाकू या फरार लड़की भी तो हो सकती हूँ? आप मुझे पहचानते तक नहीं हैं। आपको ब्लैकमेल भी तो कर सकती हूँ?'

ब्लैकमेल शब्द सुनकर सदाव्रत को और भी आश्चर्य हुआ। बोला, 'तुम इस शब्द के माने जानती हो?'

'ठीक-ठीक माने नहीं जानती, लेकिन कितने ही मुँह सुना है। मैं भी तो क्या-क्या कर सकती हूँ? आपने मुझ पर विश्वास करके गाड़ी में क्यों बैठा लिया?'

सदाव्रत ने कहा, 'गाड़ी में चढ़ने के लिए तुमने ही तो कहा था।'

'लेकिन मैं तो आपके लिए अनजान हूँ। इस तरह अनजान लड़कियों को गाड़ी में बैठाकर मुश्किल में पड़ सकते हैं, यह क्या आपको मालूम नहीं?'

सदाव्रत हँस पड़ा।

बोला, 'अपनी फिक्र मैं कर लूँगा। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें जाना कहाँ है, मुझे बतला दो, मैं पहुँचा दूँगा।'

कुन्नी तब तक थोड़ा सम्हल चुकी थी। बोली, 'मैंने उन लोगों को कम्युनिस्ट कहा है, क्या इसीलिए आप नाराज हो गये हैं?'

'नाराज? लेकिन कम्युनिस्ट माने क्या होता है, तुम जानती हो?'

कुन्नी ने सदाव्रत की ओर देखा। फिर पूछा, 'आप भी क्या कम्युनिस्ट हैं?'

'लगता है तुम कम्युनिस्टों से काफी नाराज हो। कम्युनिस्टों के साथ तुम्हारा कितना मेल-जोल कब बढ़ा?'

कुन्नी ने कहा, 'हम लोगों का मेल-जोल नहीं है तो किसका होगा? पता है, हम अपना वतन छोड़कर यहाँ चले आये हैं एक कपड़े में, सब-कुछ छोड़कर। यहाँ हम लोग जानवरों की तरह गाय-बकरियों की तरह गुजर कर रहे हैं। यहाँ आये हैं, यह क्या अपना देश है? यहाँ बाग और रोशनी, बस-ट्राम मोटरें—पर सब क्या हमारा अपना है?'

"तुम लोगों का नहीं है तो किसका है? यह देश तुम लोगों का ही तो है। और किसका है?"

"अमीरों का! वे लोग क्या हम लोगों के बारे में सोचते हैं? हम लोग क्या खाते हैं, किस तरह ज़िन्दा हैं कोई परवाह करता है? वे लोग क्या परवाह करने लगे! हम लोग मरें या जियें उन लोगों का क्या जाता है?"

सुनकर सत्यव्रत को ज़रा हँसी आने लगी। थोड़ा मज़ा भी लगा।

सत्यव्रत ने पूछा, "यह सब तुम्हें किसने सिखलाया? कम्युनिस्टों ने?"

कुल्ली ने कहा, "सिखलायेगा कौन? हम लोगों के क्या आँखें नहीं हैं? हम लोग क्या अखबार नहीं पढ़ते? हम लोग ग़रीब हैं, इसलिए क्या हमारे दिमाग़ नहीं है? कलकत्ता आए आज सात साल हो गए। जिस समय आयी थी फ्राक पहनती थी अब साड़ी पहनती हूँ। कुछ-कुछ देखा-सुना है, तब भी क्या कहना चाहते हैं कि दूसरे के कंधे पर रखकर बन्दूक चला रही हूँ?"

टैक्सी ड्राइवर एक सरदार था। एक मोड़ के पास आकर अचानक रुक गया।

"किधर जाना है साब?"

ड्राइवर को जगह बतलाकर सत्यव्रत ने कुल्ली से पूछा, "तुम कहाँ रहती हो?"

कुल्ली ने कहा, "बालीगंज में रहना मेरे बूते के बाहर है।"

"यह ठीक है फिर भी जगह का कुछ नाम तो होगा?"

"समझ लीजिए फुटपाथ पर।"

"लेकिन मैं क्या आदमी हूँ यही क्या सोच लिया? मेरा सूरत देखकर? कपड़ा देखकर?"

कुल्ली ने कहा, "यह तो मालूम नहीं। और आप अमीर आदमी हैं या ग़रीब यह जानने की भी मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। उन लोगों के कमरे से निकलने के बाद से मन बड़ा खराब हो गया था इसी से गुस्से में बहुत-कुछ कह गयी। आप बुरा न मानियेगा।"

कुछ देर तक दोनों ही चुप रहे। फिर सत्यव्रत ने ही पहले शुरू किया।

कुन्नी ने कहा, 'अचानक नहीं, आपको मैं जानती नहीं, पहचानती नहीं इस तरह आपसे सब-कुछ कहना भी नहीं चाहती थी। आपने ही मुझे गाड़ी में क्यों बिठाया? मैं चोर, डाकू या खराब लड़का भी तो हो सकता हूं? आप मुझे पहचानते तक नहीं हैं, आपको ब्लैकमेल भी तो कर सकती हूं?'

ब्लैकमेल शब्द सुनकर गणपत को और भी आश्चर्य हुआ। बोला 'ब्लैक-मेल शब्द के माने जानती हो?'

'ठीक-ठीक माने नहीं जानती, लेकिन जितने ही मुंह सुना है मैं भी तो वही हो सकती हूं? आपने मुझ पर विश्वास करके गाड़ी में क्यों बिठा लिया?'

गणपत ने कहा 'गाड़ी में बैठने के लिए तुमने ही तो कहा था!'

'लेकिन मैं तो आपके लिए अनजान हूं। इस तरह अनजान लड़कियां को गाड़ी में बैठाकर मुश्किल में पड़ सकते हैं यह क्या आपको मालूम नहीं?'

गणपत हंस पड़ा।

बोला 'अपना फिक्र मैं कर लूंगा, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। कहां जाना चाहती है मुझे बताना तो मैं पहुंचा दूंगा।'

कुन्नी अब तक काफी गम्भीर चुकी थी। बोली 'मैंने उन लोगों को कम्युनिस्ट कहा है क्या इसीलिए आप नाराज हो गये हैं?'

'नाराज? लेकिन कम्युनिस्ट माने क्या होता है तुम जानती हो?'

कुन्नी ने गणपत की ओर देखा। फिर पूछा, 'आप भी क्या कम्युनिस्ट हैं?'

'लगता है तुम कम्युनिस्टों से काफी नाराज हो! कम्युनिस्टों के साथ तुम्हारा इतना मन-मुटाव कब हुआ?'

कुन्नी ने कहा 'हम लोगों का मन-मुटाव नहीं है तो किसका होगा? पता है हम अपना वतन छोड़कर यहीं चले आये हैं एक कपड़े में, सब-कुछ छोड़कर। यहां हम लोग जानवरों की तरह गाय-बकरियों की तरह गुजर कर रहे हैं। जहां आये हैं वह क्या अपना देश है? यहां चारों ओर रोशनी, चमक-दमक मोटरें—यह सब क्या हमारा अपना है?

"तुम लोगों का नहीं है तो किसका है? यह देश तुम लोगों का ही
ता है। और किसका है।"

'अमीरों का। वे लोग क्या हम लोगों के बारे में सोचते हैं? हम
लोग क्या खाते हैं किस तरह जिन्दा हैं कोई परवाह करता है? वे लोग
क्या परवाह करने लगे। हम लोग मरें या जियें, उन लोगों का क्या
जाता है।'

सुनकर सत्यव्रत को जैसे हँसी आने लगी। थोड़ा मजा भी लगा।
सत्यव्रत ने पूछा, 'यह सब तुम्हें किसने सिखलाया? कम्युनिस्टों
ने?'

कुन्ती ने कहा, 'सिखलायेगा कौन? हम लोगों के क्या आँखें नहीं हैं?
हम लोग क्या अखबार नहीं पढ़ते? हम लोग गरीब हैं इसलिए क्या हमारे
दिमाग नहीं है? कमकत्ता आप आज मान मान हो गये। जिस समय आयी
थी फ्रॉक पहनती थी अब साड़ी पहनती हूँ। बहुत-कुछ देखा-सुना है तब भी
... करना चाहते हैं कि दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक चला रही हूँ।'
... रखा ड्राइवर एक सरदार था। एक मोड़ के पास आकर अचानक रुक
...।

'किधर जाना है बाबू?'

... ड्राइवर को जगह बतलाकर सत्यव्रत ने कुन्ती से पूछा, 'तुम कहाँ
... हो?'

कुन्ती ने कहा 'बालीगंज में रहना मेरे कुल के बाहर है।
... वह ठीक है फिर भी जगह का कुछ नाम तो होगा?
... मन सानिध फुटपाथ पर।
... लेकिन मैं कैसा आदमी हूँ यही कैसे सोच लिया? मेरी सूरत देखकर?
... ने कहा 'यह तो मालूम नहीं। और आप अमीर आदमी हैं या
... जानने का मुझे कोई जरूरत नहीं है। उन लोगों के बारे में
... बारे में मन बड़ा खराब हो गया था इसी से मुँह से बहुत-कुछ
... आप बुरा न मानियेगा।
... तक दोनों ही चुप रहे। फिर सत्यव्रत ने ही कहना शुरू किया।

हो, अभी तुम्हारी उम्र कम है, लेकिन एक बात याद रखना—आदमी का असली रूप ही सब-कुछ नहीं है। सुख दुख खुशी रंज यह सब गरीब-अमीर की परवाह नहीं करते। मैं जिन्दगी में कितने ही गरीब आदमियों से मिला हूं और कितने ही रईसों को भी जानता हूं, पर सिर्फ बाहर से पाया भीतर दोनों ही एक हैं।

अगर आप मेरा हालत जानते होते तो यह बात नहीं कहते।

फिर एकाएक सन्तोष की ओर देखकर बोली—जानते हैं बिना खाये रहना क्या चीज होता है? जानते हैं फाके करना किसे कहते हैं? और किसे कहते हैं खाली पेट पानी पीकर पेट भरे होने का बहाना करना?

सन्तोष जरा देर चुप रहा। फिर अचानक बोला—अच्छा नमस्ते, हमारा पार्क आ गया है। इसकी रोकने का शुक्रिया।

तभी एक आवाज सुनकर दोनों चौंक पड़े। पार्क में लगे लाउडस्पीकर से भाषण की आवाज आ रही थी। आगे पीछे हर तरफ भीड़ थी। अन्दर ऊँचे प्लेटफार्म पर खड़े वक्ता लेक्चर दे रहे थे—और हजारों लोग मुग्ध होकर सुन रहे थे।

सन्तोष कह रहे थे—पिछले सत्ताईस साल रोज सुबह ठीक पाँच बजे घूमने जाते थे। लेकिन उस दिन एकाएक खबर आयी कि आप का जनता के हाथों अपना सिंहासन छोड़कर वहाँ का राजा भगोड़ा हो गया। खबर आयी कैदियों का राज हो गया। फ्रांस की राज्यक्रान्ति के इस पहलू ने सारी दुनिया में सनसनी मचा दी थी। जिन्दगी में सिर्फ इसी दिन उन्हें घूमने जाने में देर हुई। पर सबसे महत्त्व की बात है कि उन्होंने इस विद्रोह का स्वागत किया। सभी ने सोच लिया कि खून खराबा मंच में अतीत के साथ जो किस्से आया वह विश्व के लिए मंगलकारी होगा। भारत में आज हम प्रजापति वर्ग द्वारा शासित समाज-व्यवस्था नहीं चाहते। शायद रक्तिम समाज-क्रान्ति ही हमारा लक्ष्य है। जो धर्म सम्मत कहता है खून पिलाओ और आदमी का खून चूस, उसे हम अहिंसा नहीं मानते।

चारों ओर से जोरदार तालियाँ पिटने लगीं।

वक्ता ने फिर से बोलना शुरू किया—आज देश आजाद है हमारी भाषा। मगर यहाँ का साम्राज्यवाद भी बू नहीं है। लेकिन इसी देश में

एक हिस्से में आज भी पुर्तगीज कॉलोनी का जहरी फोड़ा रह गया है। वैसे आज यह बहुत ही छोटा और मासूम लगता है लेकिन मैं कह देता हूँ, एक दिन यह जहरीला फोड़ा ही जानलेवा हो जायगा। आज हम गोआ की बात कर रहे हैं। भारत सरकार इसे मुक्त करने का भार अगर अपने ऊपर नहीं लेना चाहती तो हमारे ऊपर छोड़ दे। हम शान्ति चाहते हैं, और शान्ति का क्या मूल्य देना होता है यह भी जानते हैं। इसी शान्ति के संनिधा के लिए हम ''

गाड़ी अभी भी भीड़ काटती चल रही थी।

कुन्ती ने एकाएक मुँह खोला। कहा, 'देखा, ये लोग भी कम्युनिस्ट हैं ?"

'किसने कहा, कम्युनिस्ट हैं ?"

"मुझे मालूम है मैं सबको जानती हूँ।"

तुम उन्हें कैसे जानती हो ?"

कुन्ती फिर से हँसी। बोली, 'मैं सारे कमरों में जो जाता हूँ। मगर पया ही तो नाटक करना है। सोचते होंगे—दूसरी औरतों की तरह मैं भी रसोईघर में दाल भात पकाती हूँ और अखबार पढ़ती हूँ ? आप भी जा नहीं जानते मैं जानता हूँ, आपसे बहुत ज्यादा जानती हूँ। इसी से तो कह रही थी।'

सत्यव्रत बोला, 'जानती हो यह कौन हैं ? वही जो भाषण दे रहे हैं '
वह हैं मेरे पिता। मैं शिवप्रसाद गुप्त का लड़का हूँ।

सामने खाप उसकर भी शायद लोग इतना नहीं डरते। अँधेरे में सत्यव्रत ठीक से देख नहीं पाया लेकिन नाम सुनते ही कुन्ती डर से सिकुड़ गयी।

हाजरा पार्क में बाबू शिवप्रसाद गुप्त अभी भी बोल जा रहे थे—
'गोआ हमारा है—हमारी मातृभूमि का अभिन्न अंग है। यही अभिन्न अंग आज दूसरे के पंजे में है। इसे छुड़ाना ही होगा उन्नत होने पर शान्ति भी करनी होगी। ज्ञान, कर्म और स्वार्थ निष्ठा अगर हमारे जीवन में नहीं है चरित्र की दृढ़ बुनियाद अगर नहीं बना पाते हैं तो एक बार फिर जगन्नाथी ब्रिटिश शक्ति की तरह यह गोआ ही सारे भारत को हजम कर जायगा यह

चेतावनी दिये देता हूँ !

□ □ □

दुनिया में बहुत-कुछ होता है जो नज़र नहीं आता। जो नज़र आने पर भी उसका महत्त्व समझ में नहीं आता। १९४७ के बाद से शहर में दंगा थम रहा था। रातों-रात कोई-कोई आदमी एकाएक बड़ा आदमी बन गया और दूसरा शिक्षा, बुद्धि और क्षमता के होते हुए भी धीरे-धीरे नीचे की ओर जाने लगा। यों एक दूसरी श्रेणी कोई सहारा न पाने के कारण अफ़ीम की पीनक में डूबा था। दूसरी ओर अखबार की कोई बड़ी-सी खबर होती। ... के लिए लोगों को चौंका देना। रूस के स्टालिन की मृत्यु हो गयी या रूस ने स्पूतनिक छोड़ा। सुबह सुबह जो लोग बस, ट्राम में झूलते झूलते आफ़िस जाते थे साथ में अखबार लेकर चलते। समय मिलने पर कभी पढ़ लेते। कभी बड़ी चमक-दमक वाली कोई फ़िल्म आने पर सिनेमा घरों के सामने जाकर लाइन लगाते। हम आज़ाद हैं, अब क्या चिन्ता! पेट्रोल महंगा हो गया अच्छा ही हुआ। सीमेंट चीनी कपड़ा—सभी चीज़ों के दाम बढ़ गए। ठीक है बढ़ें बला से जिस सिर पर पाला है ... 'यह आज़ादी झूठी है'—बन्दर ... चिल्लायें। मोनूमेंट के नीचे ऑक्टरलोनी पर गरमागरम भाषण हैं। हम लोगों में वह सब नहीं होगा, ... आ गया है। हम लोग हमेशा खाने पीने गाने गाते हैं अब भी यही करेंगे। ... के समय में ... की ब्रिटिश हुकूमत तब यही किया आज भी यही करेंगे। हम लोग अपने धंधों से ही परेशान हैं जनाब! यह सब सोचने का समय हमारे पास कहाँ है?

उस दिन सदानन्द बाबू यही सोच रहे थे। उन्हें लड़की को पढ़ाना होगा है। ये सब बातें भी तो हिस्से की हैं। समय से ध्यान दिया दिया, अच्छा ही हुआ।

यह सब सोचते सोचते ही घर लौट रहे थे। रास्ते में बड़ी भीड़ थी। हाथ में ... किताबें लिए मन ही मन ... आ रहे थे। 'बार' के बारे में एक नया पुस्तक निकला है ... और ... गिरिजा ... —यह पुस्तक पढ़ना होगी। आदमी का भी कितना ... है। ... बाबू चलते-चलते रुक गए। ... इस ... के कारण ही हुई। ... रिवोल्यूशन

ऐसी घटना को एकदम से उलट दिया!

सोचते-सोचते कब घर के पास आ गये, ध्यान ही नहीं रहा। दरवाज़ा खटखटाते-खटखटाते आवाज़ दी, "नरेन! ओ नरेन!"

अन्दर से दरवाज़ा खोलकर किसी ने पूछा, 'किसे चाहते हैं?'

केदार बाबू सकपका गये। किसे चाहते हैं—मतलब? अपने घर आने में भी मुश्किल!

केदार बाबू ने पूछा, "आप कौन हैं?"

उन्होंने भी पूछा, 'आप कौन हैं?'

'अरे, क्या अपने घर में भी नहीं घुसने देंगे?'

तभी शायद अन्दर नज़र पड़ी। सब-कुछ नया-नया-सा लगा। सोचने पर कुछ अजीब-सा लगा। क्या भूल से दूसरे के घर घुस आये! बीस साल से इस घर में रह रहे हैं, फिर भी यह गलती कर बैठे! आगे और देखकर बोले, "क्षमा कीजिए, मैंने शायद गलती की है!"

घर के मालिक ज़रा मुसकराये। फिर पूछा, 'आप शायद इस मोहल्ले में नये हैं?'

केदार बाबू ने कहा, 'नया क्या होने लगा? इस फतेहपुर स्ट्रीट में रहते मुझे बीस साल हो गये हैं।'

'यह फतेहपुर स्ट्रीट तो नहीं है, यह तो मोहनबागान रो है।'

'अजीब तमाशा है!' केदार बाबू ने कहा, 'बुरा न मानियेगा, ज़रा गोलमाल हो गया।'

बाहर सड़क पर आ गये। इस बार भूल करने का काम नहीं आया। अपने घर के ठीक सामने पहुँचते ही हरिचरन बाबू ने कहा, "अरे मास्टर साहब!"

केदार बाबू ने कहा, 'कौन, हरिचरन बाबू! आज तो गज़ब हो गया। मैं गलती से आज मोहनबागान रो पहुँच गया, जबकि आज मुझे यहाँ रहते बीस साल...'

हरिचरन बाबू ने बीच में ही टोक दिया। बोले, "आपसे एक बात कहने के लिए कई दिन से चक्कर काट रहा हूँ। आप तो मिलते ही नहीं। काफ़ी अरसे पहले मैंने आपसे कहा था, शायद याद होगा।

कन्हार बाबू— हाँ हाँ याद क्या नहीं होगा ?'

'आपने कहा था, मकान खाली कर देंगे।'

कन्हार बाबू ने हामी भरी 'हाँ, कहा तो था।'

'और यह भी कहा था कि दो एक महीने में ही छोड़ देंगे। सो आज करीब एक साल हो आया लेकिन अब और राह देखना तो मेरे लिए मुश्किल है। आखिर मैं भी तो साधारण आदमी हूँ जरा मेरी भी तो सोचिये। कितनी मुश्किल से गुजर कर रहा हूँ यह मैं ही जानता हूँ।'

कन्हार बाबू ने कहा 'आप बिलकुल ठीक कहते हैं। जैसा समय आया है गुजर करना बड़ा ही मुश्किल हो गया है। मैं एक लड़के को पढ़ाता हूँ, उसका नाम है पवन। लड़का खूब ही अच्छा है ब्रिलियंट बॉय। पता है, उसके पिता ने आज कह दिया—समय बड़ा खराब है मेरी दो महीने की तनख्वाह नहीं दे पायेंगे।'

हरिचरन बाबू बोले 'यह सब सुनकर तो मेरा कोई लाभ होगा नहीं। आप घर कब खाली कर रहे हैं यही बतलाइये—एक डेफिनिट डेट बतला दीजिये अब और नहीं रह पाऊँगा।'

'डेफिनिट डेट ?'

कन्हार बाबू सोचने लगे। फिर बोले 'जरूर, कोई डेफिनेट डेट तो देना ही चाहिए। आपको काफी तकलीफ हो रही है समझ रहा हूँ। लेकिन मैं एकदम भूल गया था चटर्जी साहब एकदम भूल गया था। कई दिनों से एक और ही बात सोच रहा था। हिस्ट्री में एक समय आता है जब ऐसी तरह का कम्पटीशन। इसी तरह के खराब दिन आते हैं। एक बार ऐसा ही समय आया था सत्रहवीं शताब्दी में। अब इस युद्ध के बाद आप सोचते हैं क्या शान्ति आया है ? बेकार की बात—देखिये न, जर्मनी में पार्टीशन हो गया, इंडिया में पार्टीशन हो गया, कोरिया में पार्टीशन हो गया।'

हरिचरन बाबू ने बीच में ही कहा 'ये सब बातें मैंने पहले भी कितनी ही बार सुनी हैं। अब आप मेहरबानी करके मेरा मकान खाली कर दीजिये।'

कन्हार बाबू ने कहा 'जरूर खाली कर दूँगा। मैंने कब कहा कि आपका

मकान नहीं छोड़ेगा।'

"लेकिन कब छोड़ेंगे, यह भी तो बतलाइए? मुझे इसी महीने के अन्दर मकान चाहिए।'

केदार बाबू बोले 'खाली कर दूंगा। कह तो रहा हूँ इसी महीने के अन्दर।'

अन्दर से एकाएक [illegible] की आवाज आयी। केदार बाबू ने एक बार अन्दर की ओर देखा। बोले, 'लगता है मेरी भतीजी ने मेरी आवाज सुन ली है। आ रहा हूँ री, जरा चटर्जी साहब के साथ एक बात कर रहा हूँ।'

'काका, तुम जरा अन्दर तो आओ—एक काम है।'

केदार बाबू ने अन्दर जाकर पूछा, 'क्या री क्या हुआ?'

'अच्छा, तुम क्या हो? तुमने क्या सोचकर इसी महीने के अन्दर मकान खाली कर देने को कह दिया है? यह घर छोड़कर कहाँ जाओगे? कहाँ मिलेगा घर? कलकत्ता में मकान मिलना क्या इतना ही आसान है?'

लेकिन उन लोगों को तकलीफ हो रही है। उनसे वायदा कर लिया है।

तुमने वायदा क्या कर लिया? इसीलिए तो मैंने तुम्हें बुलाया। जाओ, उनसे जाकर कह दो कि जब मकान मिलेगा तब जाएँगे।

यह कैसे हो सकता है! मैंने उनसे वायदा जो कर लिया है।

लेकिन क्या वायदा ही सब-कुछ है? मकान छोड़कर हम लोग जाएँगे कहाँ?

उसके लिए कुछ-न-कुछ तो होगा ही। पता है आज भवानीपुर होकर आ रहा था, सुना सब मीटिंग-वीटिंग हो रही है।

किस बात की मीटिंग?

'और किसकी, गोआ की! इन लोगों की अकल तो देखो, इंडिया में अब भी जमे हैं! सभी चले गये, ब्रिटिश गये, फ्रेंच गये, पुर्तगीज अभी जमे रहना चाहते हैं—यह तो ठीक बात नहीं है। हम लोगों को जो तकलीफ हो रही है वह नहीं समझते—ठीक जिस तरह हम लोगों के सामने चाटुज्जे साहब का हो रहा है। हम लोग एकदम जबर बैठे हैं।'

[illegible] और नहीं सह पाया। बोला, 'तुम क्या हो! गोआ के लिए क्या

...रहा है, यह जानकर मुझे क्या करना है ? तुम जाकर चाटुज्जे साहब से [illegible] आओ कि हम लोगों को जब मकान मिलेगा तभी जाएँगे।'

'लेकिन मैंने तो कह दिया है।'

'तुम्हारे [illegible] का कोई कीमत नहीं है। जाओ, जल्दी से कह आओ।'

केदार बाबू ने कहा, 'जाऊँ ?'

'जरूर जाओगे, तुम तो सारे दिन बाहर रहते हो, और मैं यहाँ कितनी मुश्किल से समय काटती हूँ तुम्हें क्या पता ! मकान छोड़कर अब अगर [illegible] पर पड़े होना पड़े तो क्या करोगे ? एक महीने के अन्दर तुम्हें कहाँ मकान मिलेगा ? जाओ !'

केदार बाबू बाहर आये। हरिचरन अब वहाँ नहीं थे। तब तक चले गए थे।

[illegible], जरा आगे बढ़कर देख आता, अभी भी शायद ज्यादा दूर नहीं गए होंगे। तुम जाकर कह आओ कि जब मकान मिलेगा तभी जाएँगे इससे पहले जाना सम्भव नहीं होगा। फिर हम लोग बिना भाड़ा दिए तो रह नहीं रहे। हर महीने किराया तो ठीक से दे रहे हैं।'

केदार बाबू उसी हालत में फिर से सड़क पर आये। फड़ेपुकुर स्ट्रीट पर भी अनगिनत लोग थे। केदार बाबू सोचने लगे—[illegible] ही तो [illegible] [illegible] चाटुज्जे ने मकान [illegible] [illegible] था। उस घर की जरूरत है। लेकिन उसमें कोई [illegible] बात तो नहीं थी। फिर भी अगर एक महीने में [illegible] घर न मिले तब ? चाटुज्जे साहब ! चाटुज्जे साहब !

सामने ही हरिचरन बाबू जा रहे थे। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा।

केदार बाबू ने कहा, 'सुनिए चाटुज्जे साहब, एक बात [illegible]'

[illegible] [illegible] गये। कोई और था ! अनजान आदमी भी [illegible] गया। केदार बाबू ने कहा, 'मैं ठीक से पहचान नहीं पाया, मैंने सोचा हरिचरन बाबू हैं—आप कुछ ख्याल मत [illegible]'

ट्राम-रास्ते तक आकर केदार बाबू लौट रहे थे। मकान मालिक मकान [illegible] [illegible] दूसरी [illegible] की बराबर किराया ले आता। केदार बाबू बहुत पुराने किरायेदार हैं। [illegible] [illegible] महीना किराया देते हैं। तीन कमरे। बहुत पुराना मकान है। [illegible] कितना बार जरा मरम्मत करा [illegible] [illegible] कहा

है। कभी मकेन्जी भी नहीं कराता मरम्मत की बात कहते ही घर छोड़ देने को कहता है। क्या किया जाय! वैसे उसे तकलीफ़ तो जरूर हो रही है। हम भी तो पुर्तगीज लोगों से गोआ छोड़ देने को कहते हैं।

लौट ही रहे थे। एकाएक दाहिनी ओर से कुछ शोरगुल सुनाई दिया। केदार बाबू ने चश्मा ठीक कर लिया। बड़ा लम्बा प्रोसेशन आ रहा था। अब फिर किस बात का प्रोसेशन? गली के आस-पास जो इधर-उधर जा आ रहे थे थमककर खड़े हो गये।

"क्या हुआ जनाब? किस बात का प्रोसेशन?" केदार बाबू ने मुड़कर पास के आदमी की ओर देखा, "कौन आया है?"

थोड़ी दूर से आवाजें आ रही थीं

'हमारी माँगें पूरी करो!'

'नहीं तो गद्दी छोड़ दो!'

'ये लोग कौन हैं? क्या कह रहे हैं?'

'अत्याचारियों को सजा दो—सजा दो!'

कोई नहीं समझ पा रहा था ये लोग कौन हैं। देखते-देखते जुलूस काफी पास आ गया। केदार बाबू देखने लगे—जुलूस की लाइन के सिरे पर के लाल कपड़े पर न जाने क्या-क्या लिखा था।

'बंगालियों की आँखें अभी भी नहीं खुली हैं। हाय रे बंगाली जान!

"क्या हुआ जनाब? किस बात का प्रोसेशन है?"

एक ने कहा, 'सुना नहीं डलहौजी स्क्वायर में गोली चली है? डेढ़ सौ बेकसूर पुलिस की गोली के शिकार हो गये। फिर भी '

"क्या किया था उन्होंने?'

"करते क्या, सिर्फ जुलूस लेकर विधानसभा से मुलाकात करना चाहते थे अपना अधिकार माँगना चाहते थे—यही उनका कसूर था। देख आइए रास्ता खून से भर गया है।'

जो लोग सुन रहे थे सभी कहने लगे, "क्या? क्या? निहत्थे लोगों पर यह अत्याचार क्यों?"

"यही तो है जनाब कांग्रेसी राज्य! इसी के लिए मन्नीराम और गोपीनाथ साहा फाँसी के तख्ते पर झूले! इससे तो ब्रिटिश राज्य कहीं अच्छा

था। कम-से-कम विदेशी राज्य है, यह तो मालूम था। आज के ये लोग तो बस अपने डाकू हैं। ब्रिटिश की गोली खाकर हमने आज़ादी हासिल की और ये लोग मज़े से मोटा मोटा तनख्वाह डकार रहे हैं।'

जुलूस सामने से गुज़र रहा था। देहाती किसान परिवार की औरतों का झुण्ड। पताका लिए आगे आगे वे ही चल रही थीं और पीछे थे लाइन का लाइन आदमी। नंगे पाँव, फटे कपड़े, पिचके गाल, धँसी आँखें। बेकसूर लोग। मगर चेहरे उत्तेजित। जुलूस के दोनों ओर थोड़ी थोड़ी दूरी पर कुछ नौजवान लोग थे। वे ही चिल्ला रहे थे

अत्याचारियों को सज़ा दो!
और सभी गला फाड़कर चिल्लाते
सज़ा दो!'
फिर आवाज़ बुलन्द कर कहते
हमारी माँगें माननी होंगी!
सब ज़ोर से कहते
हमारी माँगें माननी होंगी!
उसी आवाज़ में लोग चिल्लाते
रहो ना गद्दी छोड़ दो!
भीड़ भी चिल्लाती
नहीं तो गद्दी छोड़ दो!

आस पास के लोगों में भी फुसफुसाहट शुरू हो गयी। यह सरकार अत्याचारी है इसका पतन ज़रूरी है। विधानराय क्या इतने पर भी चुपचाप गद्दी सम्भाले बैठे रहेंगे। और हम लोग खड़े-खड़े यह सब सहेंगे? धिक्कार है हमारी जाति को!

सुनते सुनते आस पास के लोगों का ठण्डा खून जैसे एक सेकेण्ड में खौलने लगा।

एक ने कहा 'आप लोगों ने ही तो वोट [illegible]

केदार बाबू खड़े-खड़े चुपचाप देख रहे थे और सुन रहे थे। हरिचरन बाबू को छोड़ आ निकले, अब यह बात ध्यान से उतर चुकी थी। उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि उन्होंने मकान मालिक से कोई वायदा किया है या एक महीने के अन्दर उन्हें घर छोड़ना होगा। उनके मन में बार-बार एक ही बात आ रही थी। सच, वे लोग सचमुच दुःखी हैं। उन पर गवर्नमेंट के अत्याचार का अन्त नहीं है। तब क्या होगा? लड़के पढ़ाई कैसे करेंगे? सत्यव्रत के पिता ने महँगाई के कारण उनको छह महीने की तनख्वाह नहीं दी। सम्भव है तो ठीक ही कहा। संसार में बहुत-कुछ होता है जो दिखलायी नहीं देता। इसी में से कोई-कोई आदमी तो अमीर हो जाता है। सत्यव्रत के पिता ने तो खूब टामटाम कर ली है। इस महँगाई के जमाने में वे एकाएक इतने बड़े आदमी कैसे हो गए?

सोचते-सोचते दिमाग चकराने लगा। केदार बाबू धीरे-धीरे घर की ओर लौटने लगे।



सरदार टैक्सी ड्राइवर एकमन से गाड़ी चला रहा था।

सत्यव्रत ने कहा, "गाड़ी घुमा लो—घुमाओ गाड़ी!

पहले-पहल सत्यव्रत विचारों में खो गया। अचानक केदार बाबू की याद आ गयी। सच ही तो, केदार बाबू ने ही एक दिन पूछा था—तुम्हारे पिताजी की इन्कम कितनी है? सत्यव्रत खुद भी नहीं जानता—उसके पिता की इन्कम कितना है?

लड़की को जरा पहले रासबिहारी एवेन्यू के मोड़ पर उतार दिया था।

सत्यव्रत ने पूछा था, 'यहाँ से कहाँ जाओगी?'

मुन्नी ने कहा, "पास ही कालीघाट कब है। कुछ रुपए बाकी हैं।"

'तब तुम रहती कहाँ हो?'

'आड़ा गोले।'

शायद अनजान आदमी को पता बतलाना नहीं चाहती थी। अपनी असली हालत का परिचय कौन देना चाहता है? मुन्नी का मतलब कम्य गाना गाना है। उसकी बातें सुनकर लगता था—कम्युनिस्टों से मारी

नाराज है। सिर्फ कम्युनिस्टों पर ही नहीं, अमीरों पर भी गुस्सा है। कुन्ती को उतारकर उसी के बारे में सोचते सोचते सदाव्रत को और किसी बात का ध्यान ही नहीं रहा। स्वर्णा किधर जा रही है यह भी भूल गया। इतने दिनों कॉलेज में पढ़ा। उसके कॉलेज में भी कितनी ही लड़कियाँ पढ़ती थीं। उनमें से किसी के भी साथ उसकी जान पहचान नहीं हुई। शायद वह सभी से कतराकर रहता था इसी से परिचय नहीं हुआ। सिर्फ लड़कियों ही नहीं लड़कों से भी उसका ज्यादा मेलजोल नहीं था। क्लास शुरू होने के ठीक पहले उसकी गाड़ी कॉलेज पहुँचती और क्लास खत्म होते ही स्टार्ट हो जाती। यह शायद बचपन की आदत थी।

कोई-कोई उसकी ओर इशारा कर कहता—'घमंडी!'

सदाव्रत का किसी के साथ ज्यादा मेलजोल नहीं बढ़ाना भी लोगों को घमंडीपना लगता था। एक-एक ने बातचीत करने की कोशिश भी की। सिगरेट बढ़ायी। शायद उसकी गाड़ी में बैठने का लोभ था। उसकी गाड़ी में बैठकर उसी के पैसे से सिनेमा देखना चाहा जैसा सब कॉलेजों में होता है। लेकिन सदाव्रत की ओर से ज्यादा लिफ्ट न मिलने के कारण ही शायद दोस्ती नहीं जम पायी। और लड़कियाँ? ऐसा नहीं कि लड़कियों से बातचीत करने की सदाव्रत की इच्छा नहीं हुई। क्लास में ही कई बार एक दो के साथ आँखें भी लड़ीं। लेकिन वहीं शुरू और वहीं अन्त। न जाने क्या एक अजीब सन्नाटा सा आँखों मुँह और चेहरे पर छा गया। फिर कभी उस ओर नहीं बढ़ा।

और भी पहले की बात है। उस समय सदाव्रत फर्स्ट ईयर में पढ़ता था। उस दिन शायद स्टूडेंट्स-स्ट्राइक था। तय हुआ था कि सभी कॉलेज के साथ कदम-कदम मानुमेंट के नीचे जाकर इकट्ठे होंगे। उस जुलूस में लड़कियाँ भी शामिल होंगी। शायद इसीलिए लड़कों में बड़ा जोश था। सभी जब कॉलेज कम्पाउंड में इकट्ठे हो गये तभी बुज गाड़ी लेकर आ पहुँचा।

एक लड़की ने जिसका नाम आज याद नहीं है पूछा था आप क्या हम लोगों के साथ नहीं आयेंगे?

सदाव्रत शर्म से सिमटकर रह गया। बस मन ही मन यह कितने दिनों से उसके साथ बात करना चाह रहा था लेकिन पता नहीं, क्या

हुआ उसे, जवाब तक नहीं दे पाया। किसी तरह सिर्फ 'नहीं' कहकर ही गाड़ी में बैठकर घर चला आया। बचपन में ही सदाव्रत बड़ा शर्मीला था। अभी भी शर्मीला है, लेकिन पहले जितना नहीं। अब तो फिर भी कुन्ती के साथ एक ही टैक्सी में बैठकर उससे कितनी ही बातें कर डालीं। कितने ही सवाल पूछ डाले, काफी उत्सुकता दिखायी।

लड़कों में से कोई-कोई पीठ पीछे कहता—'लाडला बेटा!'

शायद इतने दिनों वह माँ-बाप का लाडला ही था। जन्म से उसे कोई भी कमी, कोई भी तकलीफ नहीं हुई। अब लगता है कि दूसरे लड़कों की तरह अभाव की जिन्दगी ही उसके लिए अच्छी रहती। उन लोगों की तरह आवारागर्दी करते घूमना ही उसके लिए अच्छा होता। तब उसे इस नयी दुनिया के आमने-सामने खड़े होते यह झिझक नहीं होती। कल भी आज मधुगुप्त लेन में शम्भू के कमरे में निःसंकोच बैठा होता। तब इस तरह कुन्ती को सड़क के मोड़ पर उतारकर जैसे आफत टल गयी नहीं सोचता। केदार बाबू के अलावा और किसी भी ट्यूटर से पढ़ने पर उसका यह हाल नहीं होता।

'किधर जाना है, साब?'

सदाव्रत अचानक जैसे नींद से चौंक पड़ा। इतनी देर तक अपने पिछले दिनों की याद में इतना खोया था कि पता ही नहीं रहा किधर जा रहा है। सदाव्रत ने बाहर की ओर देखा। इससे पहले कभी इस ओर तो नहीं आया। शायद यही टालीगंज है। दोनों ओर टीन की चालियाँ और खपरैल के मकान। यहाँ जो लोग रहते हैं वे ही शायद शरणार्थी हैं। रास्ते में और सड़क पर उन्हें देखा है। पाकिस्तान बनने के बाद से ही ये लोग आ रहे हैं और शहर की भीड़ बढ़ रही है। ये ही लोग जुलूस निकालते हैं, सड़क और रास्ते गन्दे करते हैं, गड़बड़ करते हैं। अखबारों में वह इन्हीं लोगों के बारे में तो पढ़ता रहता है।

सदाव्रत ने कहा—हिन्दुस्तान पार्क चलो।

टैक्सी घूमकर उल्टी ओर चलने लगी। टैक्सी ड्राइवर को भी शायद बड़ा अचम्भा हुआ था। बाबू बड़ाबाज़ार से एक लड़की को साथ लिए आ रहा है। फिर एक जगह उसे उतार भी दिया। क्या तो बताया और क्या

नाराज़ है। सिर्फ़ कम्युनिस्टों पर ही नहीं, अमीरों पर भी गुस्सा है। कुर्ता का उतारकर उसी के बारे में सोचते सोचते सत्यव्रत को और किसी बात का ध्यान ही नहीं रहा। टैक्सी किधर जा रही है यह भी भूल गया। इतने दिन कॉलेज में पढ़ा। उसके कॉलेज में भी कितनी ही लड़कियाँ पढ़ती थीं। उनमें से किसी के भी साथ उसकी जान पहचान नहीं हुई। शायद वह सभी से बचकर रहता था, इसी से परिचय नहीं हुआ। सिर्फ़ लड़कियाँ ही नहीं लड़कों से भी उसका ज्यादा मेलजोल नहीं था। क्लास शुरू होने से ठीक पहले उसकी गाड़ी कॉलेज पहुँचती और क्लास खत्म होते ही स्टार्ट हो जाती। यह शायद बचपन का अभ्यास था।

कोई-कोई उसकी ओर इशारा कर कहता—'घमंडी!'

सत्यव्रत का किसी के साथ ज्यादा मेलजोल नहीं बढ़ाना भी लोगों को घमंडीपना लगता था। दो एक ने बातचीत करने की कोशिश भी की। सिगरेट बढ़ायी। शायद उसकी गाड़ी में बैठने का लोभ था। उसकी गाड़ी में बैठकर उसी के पैसे से सिनेमा देखना चाहा जैसा सब कॉलेजों में होता है। लेकिन सत्यव्रत की ओर से ज्यादा लिफ्ट न मिलने के कारण ही शायद मेला नहीं जम पाया। और लड़कियाँ? ऐसा नहीं कि लड़कियों से बात चीत करने की सत्यव्रत की इच्छा नहीं हुई। क्लास में ही कई बार एक लड़की के साथ आँखें भी लड़ीं। लेकिन वही शुरू और वही अन्त। न जाने कैसा एक संकोच सत्यव्रत की आँखों, मुँह और चेहरे पर छा गया। फिर कभी उस ओर नहीं बढ़ा।

और भी पहले की बात है। उस समय सत्यव्रत फर्स्ट ईयर में पढ़ता था। उस दिन शायद स्टूडेन्ट-स्ट्राइक थी। तय हुआ था कि सभी कॉलेज से साथ [illegible] मानुमेण्ट के नीचे जाकर इकट्ठे होंगे। उस जुलूस में लड़कियाँ भी शामिल होंगी। शायद इसीलिए लड़कों में बड़ा जोश था। सभी जब कॉलेज-कम्पाउण्ड में इकट्ठे हो गये तभी वह गाड़ी लेकर आ पहुँचा।

एक लड़की ने जिसका नाम आज याद नहीं है पूछा था 'आप क्या हम लोगों के साथ नहीं जायेंगे?'

सत्यव्रत शर्म से निरुत्तर रह गया। वह मन ही मन यह कितने ही दिनों से उसके साथ बात करना चाह रहा था लेकिन पता नहीं, क्या

हुआ उसे, जवाब तक नहीं दे पाया। किसी तरह सिर्फ 'नहीं' कहकर ही गाड़ी में बैठकर घर चला आया। बचपन से ही सत्यव्रत बड़ा शर्मीला था। अभी भी शर्मीला है, लेकिन पहले जितना नहीं। अब तो फिर भी कुन्ती के साथ एक ही टैक्सी में बैठकर उससे कितनी ही बातें कर डालीं, कितने ही सवाल पूछ डाले, काफी उत्सुकता दिखलायी।

लड़कों में से कोई-कोई पीठ पीछे कहता— लाडला बेटा!'

शायद इतने दिनों वह माँ-बाप का लाडला ही था। जन्म से उसे कोई भी कभी कोई भी तकलीफ नहीं हुई। अब लगता है कि दूसरे लड़कों की तरह अभाव की ज़िन्दगी ही उसके लिए अच्छी रहती। उन लोगों की तरह आवारागर्दी करते घूमना ही उसके लिए अच्छा होता। तब उसे इस नयी दुनिया के आमने-सामने खड़े होते यह झिझक नहीं होती। तब भी आज मधुगुप्त लेन में शम्भू के मकान में निःसंकोच बैठा होता। तब इस तरह कुन्ती को सड़क के मोड़ पर उतारकर जैसे आफत टल गयी नहीं सोचता। केदार बाबू के अलावा और किसी भी ट्यूटर से पढ़ने पर उसका यह हाल न होता।

'किधर जाना है साब?'

सत्यव्रत अचानक जैसे नींद से चौंक पड़ा। इतनी देर तक अपने पिछले दिनों की याद में इतना खोया था कि पता ही नहीं रहा किधर जा रहा है। सत्यव्रत ने बाहर की ओर देखा। इससे पहले कभी इस ओर तो नहीं आया। शायद यही टालीगंज है। दोनों ओर टीन की चालियाँ और खपरैल के मकान। यहाँ जो लोग रहते हैं ये ही शायद शरणार्थी हैं। रास्ते में और सड़क पर उड़ रहा है। पाकिस्तान बनने के बाद से ही ये लोग आ गए हैं और शहर की भीड़ बढ़ रही है। ये ही लोग जुलूस निकालते हैं, नारे और गाने गाते हैं, हड़ताल करते हैं। अखबारों में वह इन्हीं लोगों के बारे में तो पढ़ता रहता है।

सत्यव्रत ने कहा 'हिन्दुस्तान पार्क चलो।'

टैक्सी घूमकर उल्टी ओर चलने लगी। टैक्सी ड्राइवर को भी शायद बड़ा अचम्भा हुआ था। बाबू बड़ाबाजार से इन सड़कों का साथ लिये आ रहा है। फिर इस जगह उसे उतार भी दिया। क्या तो बंगला और क्या

उतार दिया वह किसी भी तरह ठीक नहीं कर पा रहा था। और फिर पता। दूर टालीगंज की ओर ही क्या बढ़ता रहा। जब फिर वही कालीघाट, जिधर से आया था।

रासबिहारी एवेन्यू के मोड़ पर एक जानी पहचानी सूरत देखकर सदा यन चौंक उठा। तो कुन्ती अभी तक यहीं ही है। आस पास और भी बहुत से लोगों की भीड़ है। वे लोग पता नहीं किस बात को लेकर बहस कर रहे थे।

फुटपाथ के पास गाड़ी रखते ही कुन्ती की नजर भी उस पर पड़ी। नाहर मह निरावरण गणपत ने पूछा 'तुम अभी तक खड़ी हो ?

इस तरह से पकड़ी जाएगी—कुन्ती ने नहीं सोचा था।

गणपत ने फिर पूछा, अभी तक घर नहीं गयी ?'

कुन्ती ने सिर हिलाया, कहा नहीं।

कालीघाट की तरफ जानेवाली थी ? रुपये मिले ?

नहीं।'

तब ? इस तरह अकेली खड़ी हो ? घर नहीं जाना ?

कुन्ती ने कहा मैं चली जाऊँगी आप जाइये।

गणपत ठीक नहीं कर पा रहा था क्या कहे। फिर उसे डरते डरते कहा आपको सोचना तो काफी दूर है जाने में देर लगेगी।

इस पर कुन्ती ने कहा लेकिन जाऊँगी कैसे ? बस-ट्राम तो सब बन्द है।

गणपत ने सड़क की ओर देखा। बस या ट्राम कुछ भी नहीं है। 'क्या, बस-ट्राम बन्द क्या है ?'

धर्मतल्ले में गोली चली है ! टियर-गैस छोड़ी गयी है। करीब डेढ़ सौ आदमी मरे हैं।

गणपत ने कहा लेकिन हम लोग तो अभी उधर से आये हैं। उस समय तो कुछ भी नहीं था।

'उस समय नहीं था उसके बाद ही हुआ।

फिर तुम घर कैसे जाओगी

कुन्ती ने जवाब नहीं दिया।

सदाव्रत ने जल्दी से दरवाजा खोल दिया। बोला, 'बैठो, यहाँ कब तक खड़ी रहोगी। कहो और ही पहुँचा दूँ जहाँ तुम्हें जाना हो।'

कुन्ती ने आनाकानी नहीं की। टैक्सी में बैठ गयी।

'ड्राइवर, बाएँ से चलो। उधर से तुम्हें घर छोड़ दूँगा।'

'नहीं, मेरे लिए बेकार में इतना पैसा किसलिए खराब कर रहे हैं?'

'इसलिए कि तुम मुसीबत में हो।'

कुन्ती ने कहा, 'मुसीबत में क्या मैं अकेली पड़ी हूँ? मेरी तरह और भी दो-तीन सौ आदमी मुश्किल में पड़े हैं।'

"लेकिन उन्हें तो मैं पहचानता नहीं, तुम्हें जानता हूँ इसी से तुम्हें गाड़ी में बैठा लिया।

'लेकिन आप मुझे जानते ही कितना हैं? मेरा क्या जानते हैं? सिर्फ मेरा नाम छोड़कर मेरे बारे में और क्या जानते हैं?'

सदाव्रत जरा मुसकराया। कहा, 'यह और जानता हूँ कि तुम अखबार दफ्तर में काम करती हो। और भी एक बात जानता हूँ।'

'क्या?'

'तुम कम्युनिस्टों से घृणा करती हो और बड़े आदमियों से डरती हो।'

लेकिन कुन्ती यह बात सुनकर हँस नहीं पायी। कुछ गम्भीर रही। सिर्फ कहा, 'यह बात छोड़िए। आपको तकलीफ करके इतना दूर तक नहीं जाना होगा। मुझे अगर देशप्रिय पार्क के पास ही उतार दें तो बड़ी कृपा होगी।'

'वहाँ तुम्हारा कौन है?'

'मेरे एक रिश्तेदार हैं।'

'पहले तो यह नहीं बतलाया था?'

'पहले बतलाने की जरूरत नहीं हुई।'

सदाव्रत ने फिर भी कहा, 'लेकिन अपने घर जाने में तुम्हें क्या आपत्ति है? मुझे कोई भी तकलीफ नहीं होगी।'

'नहीं, फिर भी रहने दीजिए।'

'इसलिए कि कहीं मैं तुम्हारा पता न मालूम कर लूँ, यही बात है न ?

कुन्नी ने कहा—नहीं नहीं! आप मेरा पता जान लेंगे तो इसमें नुकसान क्या है।

कभी-कभी तुम्हें तंग करने पहुँच सकता हूँ न!'

मुझे तंग करनेवाले लोगों की यहाँ कमी नहीं है। कितने ही आते हैं। मैं कोई पहचानता तो हूँ नहीं।

तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं किसी क्लब का मेम्बर नहीं हूँ, मैं ड्रामा देखता भी नहीं हूँ और एक्टिंग तो खैर करना जानता तक नहीं। आज का दिन [illegible] सिर्फ एक दिन [illegible] चला गया हूँ, यह भी अपने ही जरूरी काम से।

तभी कुन्नी ने कहा—मुझे यहाँ उतार दीजिए। देवप्रिय पास आ गया।

टैक्सी रुकी। कुन्नी खुद ही दरवाजा खोलकर उतर गयी। थैंक्यू, अच्छा चलती हूँ। नमस्कार।

गणपत ने कहा—लेकिन तुमने अपने घर का पता तो बतलाया ही नहीं।

कुन्नी ने मुस्कराकर [illegible]। फिर कहा—हमारा मकान आपके सामने खड़ा है।

फिर भी जान तो लूँ, शायद कभी किसी काम आ जाऊँ!

अगर इतना ही है तो सुनिए—बसीम का, अहार टोला, मकान बाईस नं!

गणपत ने कहा—ठीक है याद रहेगा, बहुत-बहुत शुक्रिया।

इसके बाद और ज्यादा रुकना अच्छा नहीं लगा। टैक्सी चल दी। गणपत ने पीछे मुड़कर देखा—कुन्नी एक बड़े मकान के पोर्टिको के अन्दर घुस गयी। इसके बाद उसको और कुछ नहीं दिखाई पड़ा। गणपतजी ने टैक्सी की रफ्तार बढ़ा दी।

[illegible] का एक मार्केट था। कुन्नी उसी के अन्दर जाकर [illegible] हो

गयी। मोट खम्भे के पीछे खुद को टॅक लिया। सड़क के आदमी उसे नहीं देख सकते थे। तब गाय फुटपाथ पर आराम से बैठी, आँखें बन्द किये जुगाली कर रही थी। बाकिर किये दरवाजे के ऊपर पीतल की प्लेट में बँगले के मालिक का नाम लिखा था। अँधेरे के कारण ठीक-से दिखायी नहीं दे रहा था। कुन्ती काफ़ी देर वहीं खड़ी रही। अब तक वह जा चुका होगा। फिर सतर्क बाहर की ओर झाँककर देखा। टक्सी नहीं है। चली गयी।

उसके बाद धीरे धीरे पोर्टिको से निकल आयी।

नहीं टक्सा नहीं है।

फुटपाथ पार कर कुन्ती सड़क पर आयी। फिर सड़क पार कर बस-स्टॉप पर आकर खड़ी हो गयी। वहाँ और भी कई आदमी खड़े हैं। उनमें से कई उसकी ओर तिरछी नज़रों से देख रहे थे। देखें। अब सब शायद बस भी बन्द लगी होगी। काफ़ी दूर पर एक डबल डेकर दिखायी दी। कुन्ती ने बाहर अच्छी तरह सम्हालकर किसी तरह आगे की सीट पर जगह कर ही ली।



शहर का पार्क की मीटिंग काफ़ी देर पहले खतम हो चुकी थी। जो लोग आस-पास रहते हैं, वे इस पार्क में घूमने आते हैं। आफ़िस से लौटने के बाद शाम का जरा हवाखोरी भी होती साथ ही बिना पैसे का तमाशा भी देखने को मिलता। पहले से कोई खबर नहीं मिलती। खबर जानने की किसी को गरज दिलचस्पी भी न थी। सिनेमा और ड्रामा देखने के लिए फिर भी टिकट लेना होता है। यहाँ तो बिलकुल फ्री। किसी दिन कांग्रेस का मीटिंग तो किसी दिन जनसंघ की। कभी पी० एस० पी० का जुलूस कभी आर० एस० पी० या फॉरवर्ड ब्लाक का जुलूस। अनगिनत पार्टी, अनगिनत राय। सभी मिनिस्ट्री कब्जा करना चाहते हैं। ऊपर से हर कोई देश-सेवा करना चाहता है। सब गरीबों की भलाई करना चाहते हैं। सभी गरीबों के शुभ-चिन्तक हैं।

कुछ गाड़ी का पार्क किये निश्चित जगह पर खड़ा था।

शिवप्रसाद बाबू अच्छा भाषण देते हैं। पार्क का सारा जनता उनके भाषण से मन्त्रमुग्ध हो गयी था। उनकी एक-एक बात में जैसे आग बरस

रहा थी। वह कह रहे थे, 'जिन्दगी के साथ सुलह हो सकती है, लेकिन मौत के साथ नहीं। मौत की मौत नहीं होती मृत्यु अविनाशी है'

जिस समय वह मंच से उतरे उस समय कोई सोच रहा था कि नेताजी सुभाष बाबू अगर जिन्दा होते तो वह भी इतनी आग नहीं बरसा सकते थे।

गाड़ी के पास आते ही कुंज ने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया। गाड़ी में बैठकर शिवप्रसाद बाबू ने शाल की चादर पास में रख ली। बोले—

फिर तत्काल बोले—कुंज!

जी!

मेरा भाषण सुना? कितना सुना? शुरू से?

'जी हाँ!'

यह सवाल सुनाने की कुंज को आदत है। वह जानता था कि कुंज को इस सवाल का जवाब देना होता है। हर बार ही बाबूजी का भाषण उसे अच्छा लगता है।

कैसा लगा?

बहुत अच्छा।

शिवप्रसाद बाबू इतने पर ही नहीं माने। पूछा—मेरा अच्छा लगा या मिश्र चौधरी का?

आपका ही ज्यादा अच्छा था।

सभा मन से सुन रहे थे? किसी ने गड़बड़ नहीं की?'

इसी तरह के कितने ही सवालों का जवाब कुंज को देना होता। यही नियम है। सब-कुछ अच्छा मानना होता। कुंज ने यह मान लिया है। शिवप्रसाद बाबू की खाशा को दृश्यमान करने के लिए यह सब करना जरूरी है। नौकरी मान ली सुनामा। कुंज फिर माथा रखे गाड़ी ड्राइव करने लगा।



शायद जिस समय घर के सामने पहुँचा काफी रात हो चुकी थी। रंग में चाबुक निकालकर उसने गला किन लिया। बत्तीस की

अहीर टोला, सैकण्ड बाई लेन। यह भी उस ओर ही है। चितपुर पार कर उत्तर की ओर जाना होगा। बाई लेन — इसलिए जरूर ही काफी छोटी और सँकरी गली होगी। लड़की ने कहा था—हम लोगों का घर जान लायक नहीं है। कलकत्ता म जान लायक कितन घर हैं !

टैक्सी रुकने ही किराया चुकाया, लेकिन सदर दरवाजे की ओर देखते ही चौंक पड़ा। गैरेज में गाड़ी नहीं थी। तब क्या पिताजी अभी तक नहीं लौटे ? मीटिंग से क्या और कहीं चले गये ?

तभी माँ दिखलायी दी। देखने में काफी परेशान लगती थी। सदाव्रत को देखते ही बोली, 'इतनी देर कर दी ? आजकल क्यों आते हो ? उधर कलकत्ता में गोली चली है इतनी रात कर दी, मुझे फिक्र नहीं होगी ?'

सदाव्रत हमेशा की तरह अपने कमरे की ओर ही जा रहा था।

मन्दा ने फिर कहा 'तुम भी घर पर नहीं रहते वे भी बाहर जायें। फिर मैं किसके लिए यह गृहस्थी सम्हाल बैठी रहूँ ?'

सदाव्रत ने कहा, 'पिताजी मीटिंग से नहीं लौटे ?'

'आज से क्या होता है ! फिर निकल गये हैं।'

कहाँ गये हैं ?"

"और कहाँ जायेंगे ? देश-सेवा ! अपने कारोबार के लिए जायें, यह तो समझ म आता है, लेकिन कहीं मणिपुर म बाढ़ आयी वह जायेंगे। गांजा में कौन जाने क्या हो रहा है वहाँ भी जायेंगे। घर मे एक लड़का है उसका भी यही हाल ! फिर मैं किसके लिए घर की चौकीदारी करूँ ?'

"लेकिन पिताजी को क्या किसी ने बुलाया है ?

'उन्हें खबर देनवाले लोगों की क्या कमी है ! पूजा करके उठे ही थे। मैं खाना परोस रही था तभी टेलीफोन आया—पता नहीं विधानराय, अतुल्य घोष या प्रफुल्लचन्द्र किस-किस का। बस एकाएक चल गये।

सदाव्रत ने और कुछ नहीं कहा। धीरे धीरे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर चला गया।



अब चितपुर। शहर की यह एक ग्राम और सड़क उसकी है। हिन्दुस्तान पार्क मधुगुप्त लेन, डलहौजी स्क्वायर और फड़ेपुकुर स्ट्रीट की तरह

इस भी बिना माल काम नहीं चलता। चितपुर रोड जहाँ बीडन स्क्वायर के पास गांधी उत्तर की ओर चला जाता है, उसी के आस-पास के इलाके की बात कर रहा हूँ। दिन के समय यहाँ आकर कुछ भी पता लगाना मुश्किल है। पाँच दूसरे बाजारों की तरह इसके पास भी जोड़ाबाजार है। सड़क के सोना और बरतन दुकानें और तम्बाकू या हारमोनियम-तबले की दूकान है। आस-पास की खिड़कियों से बाहर ताकने पर दोनों ओर एक-दूसरे से सटी लाइन से लगातार दुकानें दिखलायी देंगी। बस उनमें कोई खास बात नहीं है। या तो पान खाने की लत या हुक्के गुड़गुड़ा, चना मुरमुरा या हारमोनियम-तबला की बिक्री हो रही है। सारा के सजा, सूना चीजें। लेकिन रात को यह जगह गुलजार हो उठती है। तब इस जगह का चेहरा ही बदल जाता है। सड़क के दोनों ओर गैस फुटपाथ और उस पर चलते सैकड़ों हजारों लोग।

पहली मंजिल पर लोगों की भीड़। लेकिन दूसरी मंजिल पर ?

टन् टन करती ट्राम की आवाज के साथ ही अचानक हल्ला मचता—
गया गया-गया

सारा और से भीड़ का नमना।— क्या सामने, जरा-सा और होने पर ट्राम के नीचे आ जाने न! इस तरह ऊपर की ओर ताककर चला जाता है ? जरा देख-सुनकर चला कीजिए।

उस ओर की सुरंग से खिलखिलाहट की आवाज आती। लड़कियाँ पहना बरामदे

सुरंग कहाँ हो टार गायब! उसी सुरंग में रास्ते एकदम सीधे नाक की सीध पर नजर या कुछ साथ स्वर्ग आ मानने हैं तब पहुँचा जा सकता है। जो पहुँचते हैं वे भी होशियार लोग हैं। लेकिन रात के समय ठीक उसी हालत में नाच उनकी सारी होशियारी न जाने कहाँ गायब हो जाती है। इसी तरह है कि कोई-कोई आदमी ट्राम या बस की चपेट में आने से बच जाता है। लेकिन कोई कोई बदकिस्मत चपेट में आ ही जाता है। और तब ट्राम दग-दगाने से भैंसागाड़ी की कतार लग जाती। तब ऊपर की रेलिंग से झुककर सभी नीचे का तमाशा देखते हैं। ऊपर के लोग नीचे की ओर देखते हैं और नीचे के लोग ऊपर की ओर। ऊपर की ओर दर्शनों-देखन

नीचे बाईं-बाईं सिर झुकाये तीर की तरह सुरंग के अन्दर जा घुसते।

लेकिन पद्मरानी के फाटक के कायदे-कानून दूसरे ही हैं।

पद्मरानी पुराने जमाने की औरत है। कहती— तीन चौथाई गुजरकर यह चौथा आ लगी, अभी तक मुंह देखकर आदमी नहीं पहचान पाती बेटा, और तुम लोग आदमी पहचानते हो?'

दूसरी मंजिल पर सीढ़ी से सटा ही पद्मरानी का कमरा है। पलंग पर उठते ही वहाँ से एकदम सदर दरवाजे तक नजर जाती है। बाहर का सब कुछ देखा जा सकता है। सुबह दरवाजा खुलने से लेकर रात के एक-दो बजे तक—कभी, कभी रात के तीन बजे तक भी सदर दरवाजा खुला रहता है। किसी किसी दिन तो बन्द ही नहीं होता लेकिन कुलीवाला हो या, फूलवाला हो या, गुंडा बदमाश, गिरहकट ही हो सभी नजर आते हैं। एक बार चेहरा देखते ही पद्मरानी आदमी की पहचान नहीं है। लड़कियों का भी यही सिद्धान्त। कहती— काठ की बिल्ली हो या मिट्टी की पर- चूहा पकड़ लेगी, चूहा पकड़ पाना ही असली चीज है।

पानी ऊपर गिरने चाहिए। पद्मरानी खुद भी यह बात अच्छी तरह से जानती। इस मुहल्ले में और भी कितने ही मकान हैं। मकान भी कम नहीं हैं लड़कियों की भी कमी नहीं है। एक बार जाल फेंकते ही भर जाने की तरह। लेकिन जो लोग यहाँ रहते हैं उनमें से यह अलग है। जो लोग यहाँ आते हैं वे भी जानते हैं कि यहाँ पैसा ही सब-कुछ है। पैसा फेंक, सरपट खातिर करार कर मकान में मुंह बाद्ध घर चले जाते हैं। लेकिन खातिर ऐसी करनी होगी कि लौट फिरकर यहीं आना पड़े। एक बार जो पद्मरानी के फाटक में आता है भूलकर भी और कहीं नहीं फटकता।

पद्मरानी हमेशा से मसखरी मनाती हुई कहती— पैसा कौड़ी, खाओ पी, खुश क्या पराए हो राजा'

और जगह जो होता है यहाँ नहीं चलता। सभी को मालूम है कि खातिर शराब नाम की चीज सिर्फ पद्मरानी के यहाँ ही मिलती है। पद्मरानी पैसा पकड़ती है लेकिन नमकहराम नहीं है। कहती है— मैं पैसा लूंगी, असली माल दूंगी बाद में तुम्हारा धरम तुम्हारा मेरा धरम मेरा। आज अगर मैं तुम्हें ठगती हूं कल तुम मुझे ठगोगे। तब तो भगा मार तो गया

परलोक भी गया।

पास में ही गुफ्फन की दुकान है। गुफ्फन केकड़े की भुनी हुई टाँग और सिर्फ मछली का कलिया बड़ा जायकेदार बनाता है। दूर-दूर से खरीददार आते हैं। काँच के शो-केस में माल सजाकर रखता है। देखते ही लार टपकने लगता है। जबकि भाव एकदम सस्ता है। रात के समय ही ज्यादा भीड़ रहती है। फिर भी काम-काज के बीच ही किसी तरह समय निकाल पद्म-रानी के कमरे के सामने आकर आवाज देता 'माँ!'

'कौन गुफ्फन? क्या बात है बेटा?'

'टगर दीदी के कमरे में ताला लगा है। शायद टगर दीदी है नहीं?'

'क्यों? तेरा कुछ पैसा बाकी है क्या?'

गुफ्फन कहता 'हाँ माँ, यही कोई तीन रुपया छ आना बाकी थे।'

'लेकिन पैसे बाकी छोड़े ही क्यों? पैसे भी क्या कभी बाकी रखने चाहिए बेटा! तुम लोग रूमानी चेहरा देखते ही सब-कुछ भूल जाते हो। इस धंधे में बाकी रखकर कोई काम करता है? मैंने तुमसे पहले ही कहा था बेटा।'

गुफ्फन फिर भी खड़ा रहता। पूछता 'क्या टगर दीदी कहीं गयी है? आयेगी नहीं?'

'आयेगी नहीं तो जायेगी कहाँ बेटा? यहीं जो रहती थी न सत्रह नम्बर कमरे में अब बारह नम्बर में आ गया है, पहचानता है न? हाँ तो, परसों ही एक दिन मिजाज बिगाड़कर कुनबा बसाने चली गयी थी। कहती थी—ब्याह करके कुनबा बसाऊँगी। मैंने भी कह दिया—तो जाओ न बेटी, तकदीर में क्या-क्या सुख है, कुनबा बसाकर देख आओ न। हाँ तो, गयी भी। मैंने माँग में सिन्दूर भर दिया। दोनों को आशीष दिया। दो साल कस्बे में घर लेकर रहा था। फिर एक दिन गोद में एक बच्चा दबाये यहाँ फिर आ पहुँची—समझ गया, पिरीत पूरी हो गयी है!''

ये सब पुरानी बातें हैं। ये किस्से गुफ्फन भले ही न जाने, पर और सब किरायेदार लड़कियाँ जानती हैं।

अगर कोई पूछता—फिर?

तब पधरानी कहती—'फिर क्या ?' फिर वह पधरानी का फ्लैट ही जानता था—जगाई भी इसके फ्लैट नुकसान सहकर हेड भी ऊपर म ंदिया तब पट पर रहा है। इसीलिए वो वालन्ती से अब कहती हूँ—तू क्या तुम मेरा खाना नहीं जानती, क्या ? जानती हैं। खाती क्या नहीं ? बिन्दू है न्यारिंग

पधरानी की बातें कुछ भी हो सुनने लायक होती हैं। सारे दिन अपने कमरे में खाट पर बड़ी-बड़ी फ्लैट चलाती है। मिरज़ान एक गॉदरेज की आलमारी है उसमें रुपये रखकर पल्ले में चाबी बाँधती है। और काम हो या न हो, बिन्दू को पुकारती। कहती—बिन्दू ! ओ बिन्दू !

पधरानी का भरोसा है—बिन्दू। बिन्दू ही पधरानी के लिए खाना बनाती है। इतनी बड़ी गृहस्थी सम्हालती है। एक दरबान है वह नाम के लिए। वह कब कहाँ रहता है कोई नहीं जानता। वास्तव में बिन्दू ही सब लोगों की देखभाल करती है और पधरानी के हुक्म की तामील करती है। पधरानी के कमरे में टेलीफ़ोन है। ज़्यादातर ऐसे ही पड़ा रहता है। मालिक अगर कभी टाइम पाते हैं तो टेलीफ़ोन करते हैं नहीं तो नहीं। उन्हें भी कितने ही काम रहते हैं। बीच-बीच में दारोगा-पुलिस सिपाहियों का फ़ोन आता है। वे लोग जिस दिन आनेवाले होते हैं उससे पहले ही पधरानी को होशियार कर देते हैं।—'बासन वगैरह ज़रा सम्हाल कर रखिएगा, हम आ रहे हैं।'

ऐसा पधरानी के फ्लैट के सामने ही आकर हाज़िर हुआ जॉन टाम्सन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड आफ़िस के रिक्रिएशन क्लब का सेक्रेटरी दुलाल सान्याल। साथ में था असिस्टेंट सेक्रेटरी अमल पाल और उसका साथी संजय। संजय सरकार। संजय के लम्बे-लम्बे घुंघराले बाल हैं। फ़्लवरों का पाट किया है आनन्दीर ऑर्गनबैन में। मयालीजिकल, फ़िलाग्रिक मण्डल किसी भी तरह का नाटक बाकी नहीं छोड़ा।

दुलाल सान्याल जरा आनाकानी कर रहा था। लेकिन ऑफ़िस से निकलकर आखिर में तीनों ही साथ हो लिए। ट्राम से उतरकर गाजन गोबर गीला ही असली जगह आ पहुँचे। जगह ज़रा डर भी लग रहा था। फिर भी रह दे। लेकिन फ़ीमेल रोल के लिए जब बिना फ़ीमेल लिए

काम नहीं चलेगा तो इतना सोचने से क्या फायदा !'

अमल ने कहा, 'धत्तेर का, यह कहाँ ले आया तू ? यह तो रंडियों का मुहल्ला है !'

अजय ने कहा, 'उससे क्या हुआ ? हम लोग कोई इस काम से तो आये रहे हैं—हम लोग तो आर्टिस्ट खोजने आये हैं।'

दुलाल गोषाल तनिक गम्भीर आदमी है। हाथ में एक पोर्टफोलिओ बैग है। उसमें पेट कॉट्रैक्ट फार्म साथ ले आया है। कुछ नकद रुपये भी हैं। अगर एडवांस माँग बैठे !

दुलाल गोषाल ने पूछा, 'कौन सा घर ?'

सुमन अपनी दूकान पर बैठा गोश्त की घुघनी पका रहा था। मिर्च मसाला और प्याज डालकर ऐसी घुघनी बनायी है कि सोंधी-सोंधी सुगन्ध से सारा चौरंगी गुलजार हो गयी है। घुघनी उतारकर पराँठे सेंकना शुरू करेगा। इस मुहल्ले के रहनेवाले ज्यादातर रात को खाना नहीं पकाते, सुमन के यहाँ की चाट और पराँठे खाकर ही गुजर कर लेते हैं। पचरानी के पलट के अधिकांश किरायेदार रात को खाना पकाने का समय नहीं पाते। बाबू लोगों के संग में खाना पसन्द करते हैं।

सुमन ने घुघनी चलाते-चलाते ही कहा, 'बाहर क्यों, अन्दर आकर बैठ आइए न, कौन चाहिए ? और टगर के कमरे का ताला अगर खुला हो तो आकर शुभ बना डालो।

'मेरा भाई, यहाँ पचरानी का पलट कौन-सा है बता सकते हो ?'

सुमन ने मुड़कर देखा। उसे बात करने की फुरसत नहीं है। बदली छाया है, अच्छी भीनी हवा, ऐसे ही दिनों में बाबू लोगों की भीड़ ज्यादा होती है।

'पचरानी का पलट ?'

सुमन ने गौर से देखा। चेहरा देखते ही पहचान गया, आखिर ये बाबू हैं। पता करके मजा लूटने आये हैं।

'यही है, इधर के अन्दर दरवाजे से अन्दर चले आइए।'

लेकिन दुलाल का इतने से सन्तोष नहीं हुआ। बोला, 'एक बात समझ गये हो भाई, तुम तो यहीं के रहनेवाले हो। हम लोग एक काम

र्वाई दर्गाई, मवहा

से आये हैं।

क्या काम है वहिय न

"यहाँ कुन्ना गुप्त नाम की कोई एक्ट्रेस ? मतलब नाटक वगैरह में काम करती है।

कुन्नी गुप्त। मुफ्त सभी लड़कियों को पहचानता है। वाना नाटक करती है ? नहीं बाबू नाटक ता कोई भी नहीं करता नाटक करनेवाली कोई लड़की यहाँ नहीं रहती यह तो गुजराव लड़कियों का मकान है।

समय न कहा गुजराव लड़की होन से क्या बिगड़ता है ? हम पन दूँगे पाट करके चला जाऊँगा। इस नाम की कोई लड़की है या नहीं

मुफ्त न कहा मैं ना इतना सब नहीं जानता। हाँ आप लोग मा पूछ लें।

हाँ।

मुफ्त न कहा हाँ उस दरवाजे से सीधे अन्दर चले जाइए। अन्दर ऊपर जाने की सीढ़ी है। सीढ़ी से ऊपर चढ़कर सामने ही दरवाजे पर लगा एक दरवाजा। वहीं पूछ लेना।

समय न कहा दुमानदार तुम लोग न जाओ बाहर ही खड़े रहो। मैं अकेला ही जाता हूँ।

लेकिन धीरे धारे सीना हो उठने लगे। अन्दर जाकर बड़ा पुराना मकान था। इटा का पक्का आँगन बीच में एक नल पर लगा सुविधा बन्द पड़ा था। आँगन के पास एक घुसा सा था। उस ओर सीढ़ियाँ ऊपर है। नल-पानी सब टूटा। एक खिड़की पर कुम्हड़ा पुआल वहीं थे। दूसरा मंजिल पर चारों ओर नालीनुमा आँगन कमरे थे। कुछ कमरों के दरवाजे बन्द थे। किन्तु किसी कमरे से हारमोनियम और घुंघरू का आवाज आ रहा था। कौन कह आ सकता जिसे नहीं सुन रहा था। एक पहरा सीढ़ी पर रखी थी के सामने सभी-अभी निकल पड़ी थी। और उतरते ही मुड़कर देखा। बोली आइए न।

दुमान सा जान न कहा महाराज उधर आप मत देखना।

कौन है ?

लेकिन कोई औरत हाथ में कागज लिये स्टाईपर की ओर से द्रु

था थी।

'इसी से पूछ अमल!'

अमल आगे बढ़ा। पूछा "क्याजी, तुम लोगों के यहाँ कोई कुर्सी बुनता है?"

बिंदु में नरम हुआ भी है, यह मानना होगा। बाएँ हाथ से वस्त्र की ... जरा सम्हालकर ठीक की। मुँह जरा ढँककर कहा "आप लोग माँ से ... ।

"ए बिन्दू कौन है री?"

पद्मरानी ने शायद ऊपर से सुन लिया था। परदे की सन्ध से सब ... है।

बिन्दू ने ऊपर चढ़ते कहा "माँ ये भले आदमियों के लड़के आये हैं, पता नहीं किस चीज़ रहे हैं।

फिर दुलाल की ओर देखकर कहा, "आइए, आप लोग ऊपर आइए।"

... आदमियों की आवाज सुनकर और भी कई लड़कियाँ रेलिंग के पास आ जुटीं। एक-दूसरे के ऊपर गिरती-पड़ती सब की सब हँस रही थीं। संजय एकटक उसी ओर देखता सीढ़ी चढ़ रहा था। बोला, "अरे ... इतना मत हँसो दाँत पर मक्खी बैठ जाएगी!"

साथ-ही-साथ और भी ज़ोर की खिलखिलाहट। उनमें एक शायद ... थी। बोली "इधर आइए न, मक्खी मारने की मशीन हमारे पास है।"

दुलाल गांगुली भी साथ पीछे ही था। डाँटकर बोला, "ए संजय, ... मज़ाक मत कर!"

तब तक पद्मरानी का कमरा आ गया था। बिन्दू ने अन्दर घुसकर परदा उठा लिया। फिर कहा "माँ, ये लोग आये हैं।"

"बड़ा भाग, तुम लोगों का मंगल चाहिए।" कहते-कहते चारपाई पर ... पद्मरानी ने बदन पर की साड़ी का सम्हाला। बोली, "तुम लोग ... बिन्दू! जरा कुर्सियाँ गिन ला तो!"

दुलाल गांगुली बैठ नहीं पा रहा था। अमल भी कुछ ठीक नहीं कर

पा रहा था। वह भी खड़ा था। लेकिन संजय बैठ चुका था। कमरा काफी तरतीब से सजा था। चारपाई के नीचे एक कांसे की पीकदानी रखी थी। सारा कमरा अगरबत्ती की गंध से महक रहा था। खिलौनों से भरी काँच की आलमारी रखी थी। दूध का प्याला हाथ में लेते हुए पद्मरानी ने पूछा "तुम्हें कौन-सी पसन्द है? तीनों क्या एक ही कमरे में बैठोगे?"

संजय ने कहा, "हम लोग कुन्ती गुहा को चाहते हैं। वही जो ड्रामा करती है—हम लोग नाटक खेल रहे हैं न!"

'नाटक?'

"जी हाँ, हम लोग जॉर्ज-टामसन (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड ऑफिस से आ रहे हैं। हमारे रिक्रियेशन क्लब की ओर से 'जो एक दिन आदमी थे' नाटक खेला जाएगा। हम लोग हीरोइन खोज रहे हैं। सुना है, आपके यहाँ कुन्ती गुहा नाम की कोई लड़की है। उसे ही खोज रहे हैं।"

पद्मरानी ने कहा, 'कुन्ती नाम की तो कोई लड़की नहीं है। टगर है, यामिनी है, जूथिका है—लड़कियाँ मेरी कई हैं। सभी देखने-सुनने में अच्छी हैं, चाल-चलन भी अच्छा है।'

संजय ने पूछा, 'लेकिन उन्होंने क्या कभी ड्रामे में पार्ट किया है? वे लोग क्या नाटक में भाग ले पाएँगी?'

'तुम लोग देख लो न, तुम लोगों के देखने में क्या बुराई है? ओ बिन्दू, जरा जा तो उन सबको बुला ला। कहना ऑफिस से भले घर के लड़के आए हैं।'

और कहने की देर नहीं हुई। चार-पाँच लड़कियाँ खिलखिलाती हुई आ पहुँचीं।

पद्मरानी ने कहा, "हाँ री, टगर कहाँ गयी? शायद कमरे में नहीं है?"

'नहीं माँ, टगर नहीं है तो न सही। यामिनी है, जूथिका है, गुलाबी है, बिन्दू है। पद्मरानी के कमरे की मनोहर सुन्दरियाँ महफिल रोशन करती आ रही हैं।' पद्मरानी के सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती। सभी एक-दूसरे से सटी खड़ी थीं। कोई बचती मगन रही थी। सुनील सान्याल का तो जैसे दम घुट रहा था। लेकिन पद्मरानी आत्मी

पहचानने में लगती रहा करती। बोली, 'तुम लोग बातचीत करो न दूसरे कमरे में जाकर इन लोगों से बात करो। बड़ी अच्छी लड़कियाँ हैं—मैं तो यहाँ गाथा-गाथी बात पसन्द करती हूँ। सभी लड़कियों का भी यही हाल है। तभी तो इनसे कहती हूँ मैं सुन दीपन ही रीझी और कमरे पान ही राखी मेरी लड़कियाँ के गुना का पार नहीं पाओगे।"

फिर जरा रुककर कहा गुलाबी बोलने न। बात करने न देगा। भाग घर के लड़के आये हैं आखिर में इन पर करेगा ? ये लोग रुपये देंगे, सान का महत्त्व देंगे—यान न!

आखिर में दुनाल सायाल को और देखकर पदरानी ने कहा, "देख रहे हो न यहाँ, इन लड़कियों को इनसे रह हो न, ऐसी लड़कियाँ तुम्हें सोना गाथा में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेंगी अच्छा एक काम करो, तुम जरा गुप हो इन गुलाबी के कमरे में जाकर अकेले में बातचीत कर लो भाव-सार करलो लड़की बड़ी नाजुक है। मेरे सामने बात करते शर्माती है। जा न गुलाबी झट को अपने कमरे में ले जा न—जा!

दुनाल सायाल ने कहा लेकिन हम लोग तो कुती गुहा की खोज रहे हैं। सुना है बड़ा अच्छा एक्टिंग करती है।'

धामनी तभी बोल उठी हम लोग क्या पसन्द नहीं आयी ? और कहने के साथ ही उसने आँख फिराकर एक बाँका-सा कटाक्ष किया।

सजय इस दम था यह उठ खड़ा हुआ। बोला 'ठीक है दुलालदा मैं जरा देख कर आता हूँ आपने क्या पहले कभी देख लिया है ?'

धामनी के कुछ कहने से पहले ही दुनाल सायाल ने टोका। बोला, नहीं रहने दो, कोई जरूरत नहीं है। कुन्ती गुहा अगर होती तो हम लोगों का काम चलता।

हाँ!

तभी बाहर की आवाज को पहचानकर पदरानी बोल उठी 'लो टगर आ गयी—आ बेटा टगर यहाँ आ!'

इतने सारे अजनबियों को कमरे में देखकर कुन्ती न जाने क्यों सहम गयी थी। शायद डर भी गयी। पदरानी ने कहा, यह लो मेरी टगर बेटी आ गई। सुन्दर यह पसन्द है कि ? गिलमान पर यह तुम्हारा इन

कर लेगी। क्या रो टगर, बाबू लोगों को इनमें से किसी लड़का चाहिए—तू कर पायेगी ?"

कुन्ती ने दुलाल घोषाल की ओर देखा। ये लोग क्या उसे पहचानते हैं ? फिर पद्मरानी की ओर देखकर कहा, "मैं इन्हें जानती नहीं माँ, मैं इन्हें कैसे पसन्द करूँ ? किसने कहा ?"

"कहेगा कौन बेटा, ये लोग कुन्ती नाम की किसी लड़की की खोज रहे हैं। तो मैंने कहा कुन्ती नाम की तो कोई है नहीं, इनमें से कोई पसन्द हो तो चुन लो।"

दुलाल घोषाल और अमल घोष तब तक उठ खड़े हुए थे। बोले, "असल में हम लोग कुन्ती को खोजने आये थे। सुना था कुन्ती गुप्ता यहीं रहती है, इसी पद्मरानी के फ्लैट में।"

कुन्ती को थोड़ा सन्देह हुआ। बोली, "आप लोगों को किसने बतलाया ?"

"हम लोगों की जान-पहचान के एक आदमी ने।"

कुन्ती ने फिर पूछा, "आप लोगों ने उसे देखा ?"

"उसको देखा है, अभी उसके साथ देखा नहीं है।"

अचानक टेलीफोन की घंटी बज उठी। चारपाई के पास से रिसीवर उठाकर पद्मरानी ने कहा, "हलो !"

कुन्ती ने दुलाल घोषाल की ओर घूमकर कहा, "नहीं, आप लोगों को गलत खबर मिली है। कुन्ती नाम की इस फ्लैट में तो कोई नहीं है। यहाँ मैं हूँ, मेरा नाम टगर है, इसका नाम वासना है, उसका जुथिका और उसका गुलाबी है। और जो हैं, उनके कमरों में इस समय मेहमान हैं। रजिस्टर अनाउन्स किए बिना कोई नहीं करता। जो लोग यहाँ एन्टर करने आते हैं, हम उन्हें अपने कमरे में बैठाती हैं। अभी तक नहीं समझ पाए आप कि यह कन्याओं का कोठा है।"

दुलाल घोषाल ने और देरी नहीं की। अमल को खींचता हुआ बाहर चला गया। सजय शायद तब भी कमरे में ठहरना चाहता था। बोला, "तब जल्दी ही कहिएगा, आपके ध्यान में रहे, हम लोगों का काम बन जाएगा।"

बाहर से दुलाल ने फिर आवाज दी, "ए सजय, चला आ !"

गन्ध फिर लगा रहा। बाहर नीचे के आँगन से भी कई लोगों की आवाज़ कान में आयी। हो सकता है बाबू लोगों ने आना शुरू कर दिया हो। अब पपरानी के पलट के गुलज़ार होने का टाइम हो गया। अब नुक्कड़ की दूकान से कॅकड़ की टाँग, गोश्त की घुघनी और मुगलाई परांठा का आना शुरू होगा। और उसके बाद बजू की दूकान से बोतलों का आना शुरू होगा। फिर रात के आठ बजने के बाद पपरानी के निजी भण्डार से बोतलें निकलेंगी। ये दूसरी तरह की बोतलें। उस बोतल में माल के साथ पानी मिला रहता है। यह तुम जितनी चाहोगे उतनी ही मिलेगी। पपरानी सारा गम सप्लाई कर सकती है। फिर आयेगी कुल्फी मलाई आलू टिकिया और चाट पकौड़ीवाला तब आयेगा बेला का हार और जूड़े बेचनेवाला और सभी हारमोनियम और तबले के साथ शुरू होगा— चाँद सा मुखड़ा तिरछी नज़रों में न देख।

पपरानी ने स्नानघर की तरफ मुँह घुमाया। बासन्ती वगैरह चली गयी थी। मुन्नी तब भी खड़ी थी।

पपरानी ने कहा, क्या री छोकरी तुझे दिन का जरा पता ही नहीं है। बाबू लोग आकर लौट जाते हैं। बात क्या है री? शुक्र के तीन रुपये साढ़े छः आना बाकी रख छोड़े हैं? आखिर हुआ क्या है तुझे? कहती हूँ धंधा उतर रहा है क्या?

मुन्नी ये सारी बातें सुनाने के लिए ही शायद आयी थी। बोली "शुक्र के पैसे अभी जमा करवाकर आयी हूँ।"

और सुराही के मशीन में मेरा किराया बाकी पड़ा है सो ..."

"यह ले जाओ" —कहकर उसने दस-दस रुपये के दस नोट निकालकर पपरानी के हाथ में दिए— यह सौ रुपये आज बड़ा मुश्किल से ला पायी है। इस समय इन्हें रख लो बाद में और रुपयों का इन्तज़ाम करूँगी। मेरा बाप बड़ा बीमार है माँ

पपरानी ने हाथ के रुपये बॉन्ड्स की आलमारी में रखते हुए कहा कोई भी करे? धंधे में मन नहीं लगाएगी तो रुपया कहाँ से आयेंगे रानी? रुपये क्या पेड़ में फलते हैं? और फिर इसी आयु में भी देखना चाहिए रानी

टगर, मैं भी गरीब आदमी हूँ, मेरा दूध घी कहाँ से आएगा? इसके सिवाय घर का टैक्स है। तुम लोग अगर किराया नहीं दोगी तो मेरी गुजर कैसे होगी, बेटा? मैं क्या अब जवान हूँ जो इस उम्र में अपने कमरे में ग्राहक बैठाऊँगी! तू अगर कमरा छोड़ दे तो मैं आज ही अट्ठाईस-सौ रुपये में उठा दूँ। लेकिन मेरे तो करम में ही नुकसान लिखा है! तुम लोग तो वह दगुनी नहीं हो। उस समय सोचा था टगर की उम्र कम है, अभी जरा जमा ले। फिर खूब कमाएगी, बाद में ही देगी—तुम तो समझदार हो बेटा! मैं कई बार में एक बार भी नहीं सोचती।

कुल्ली ने अपराधी की तरह सिर नीचा किये कहा, बाप बीमार है इसी से

" बाप तो बीमार आज हुआ है, पहले क्या हुआ था? इससे पहले तुमने कितने दिन गंगाजल छिड़ककर दुकान खोला है, जरा गिनकर बताओ? व्यापार लक्ष्मी है। वह लक्ष्मी ही अगर चंचला हो जाय तो कारोबार चलता है? मन भन घर के लड़के आकर पूछते हैं—'टगर कहाँ है, टगर कहाँ है?' हाय, बेचारे दिल बहलाने आते हैं, उतरा मुँह लिये लौट जाते हैं। देखकर तरस आता है बेटा। धन्धे लक्ष्मी को इस तरह ठुकराना नहीं चाहिए। इसमें तुम्हारा भला नहीं होगा, यह कहे देती हूँ। समझ लो बेटा तुम मेरा कमरा खाली कर दो। अट्ठाईस सौ रुपये में नयी लड़की रखूँगी। अपना भी नुकसान मत करो और मुझ गरीब माँ का भी नुकसान मत करो।

कुल्ली ने कहा, 'अब मैं रोज आया करूँगी।'

पद्मरानी प्यार भरे शब्दों में बोली, 'मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही कहती हूँ। तुम्हारी माँ अगर जिन्दा होती तो वह भी यही कहती। यहीं तो गुलाबी है न। गुलाबी की गृहस्थी है, मालिक है, बच्चे कच्चे भी हैं। वह कब आती है? वह तो कभी नागा नहीं करती? घर का काम-काज निपटाकर बच्चों को खिला पिलाकर रोज दस बजे के अन्दर आकर दुकान खोलती है। रात में रात के बारह बजे या एक बजे ठीक घर चली जाती है। कुछ कहना भी नहीं होता। तुम्हारी तरह महीनों तक किराया भी बाकी नहीं रखती, ग्राहक भी नहीं लौटाती।'

कुन्ती घर रहा कुछ भी नहा वाली।

पद्मरानी ने दूध के कगारे में घूट भरते हुए कहा 'मैं तुमसे यह तो नहीं कहती कि अपना मन का मन देखो बूढ़े बाप का मन रखो—माता पिता और सास-ससुर की तुम्हारे उपाओ। यह तो नहीं कह रही बहू ! तुम गृहस्थ घर की लड़की हो पढ़ने के लिए यहाँ आयी हो हालत अच्छी होने पर ब्याह होगा तब अपनी गृहस्थी सम्हालोगी। तुमने यह मरने की क्या रही बात, कहा ' मैं क्या पिशाच हूँ नहीं उनका टगर उसे माँ-बाप से पैदा हुई हूँ।

अब कुन्ती ने कहा यह राज में कौन झंझट चल रहा है, क्या मेरे कुछ समझ में भी नहीं आता

पद्मरानी ने वाच मही रोता झंझट किस नहीं है, बेटा ' किसे समझ नहीं है इस रुपए के मारे ही तो मरी भले भले घर के लड़के यहाँ ढोर आते हैं आकर बातें मुँह में पानी लाकर खाना पेट के लिए भी न खोजते हैं।

कुन्ती ने कहा नहीं यह दूसरा ही झंझट है—लगता है अब घर छोड़ना होगा माँ।

क्या छोड़ना क्या होगा ? किराया नहीं देंगी ?

कुन्ती ने कहा मुसीबत तो यही है ! यमुना का मकान ठहरा। दस रुपए किराया रहा था। इधर कई साल से बढ़ाकर पन्द्रह रुपए कर दिया है। अब कहते हैं कि बीस रुपए देनी होगी अगर उस मकान के पाँच सौ रुपए नहीं हैं। लगता तक नहीं था अपना समझाया है। कल दरवान आया था। कहता मकान छोड़ना होगा। छह महीने का समय दिया था अभी तक किराया नहीं छोड़ा। अब सुना है गुण्डे लगाकर कमरों में आग लगवा देंगे।

कौन लगवायेगा ?

कारिन्दा अथवा मालिक। बड़े-बड़े पत्थर फेंकेंगे, उनसे पानी गिराना आएगा। इस समय मैं वहीं से आ रही हूँ।

पद्मरानी ने कहा तब तेरा बाप क्या करता है ? उसकी नौकरी है या छूट गयी ?

अचानक तभी मुकुल कमरे में आया। बोला, "आज एग-करी बड़ी चटपटी बनी है। एक प्लेट लाऊँ क्या, माँ?"

पद्मरानी ने मुँह बनाया।

"तूने क्या दिमाग बेच खाया है! तुझे पता नहीं आज पूनो है? पूनो के दिन मुझे मांस मछली अण्डे वगैरह कुछ भी छूते देखा है? यह देख न, खाना नहीं, गरम दूध पी रही हूँ।"

फिर उसे अचानक याद आयी।

"ओ बिन्नू, बिन्नू कहाँ गयी री, मेरे लिए जरा पान का तेल तो गरम कर ला।"

इसके बाद कुन्ती की ओर घूमकर कहा, "कुछ दिन से बेटी, पता नहीं क्या हो गया है, कमर में ऐसा दर्द चलता है, सीधे खड़ी भी नहीं हो पाती। बदन टूट रहा है। अब दशमी के दिन पूरे हो आये।"

मुकुल तब तक दूसरे कमरे में चला गया। उसके पास वक्त नहीं है। कुन्ती भी शायद कुछ और कहनेवाली थी कि अचानक फिर से टेलीफोन की घंटी बजने लगी। कुन्ती ने कहा, "आज जाती हूँ माँ!"

"कल आ रही है न?"

"हाँ माँ, कल मैं जरूर आऊँगी। बिना आये काम कैसे चलेगा?"

कहकर माया कमरे से निकल गयी। पद्मरानी ने टेलीफोन का रिसीवर हाथ में लेकर कहा, "हलो!"



एक लम्बी चौड़ी ब्लू प्रिंट प्लान टेबल पर फैलाये निखिलनाथ बाबू गम्भीर रूप से 'यह देखो सम्पादकजी की लाय-चम्प साइड हुई, यही आठा मोड़, चितपुर मेड़। इस ओर सिटी में कुछ भी रहस्य नहीं होगी। किसी दिन स्मूथ ट्रस्ट और हाथ लगाये तो दूसरी बात है। मैं इस ओर के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। ईस्ट की ओर अभी भी काफी स्कोप है। इधर सी० आइ० टी० रोड के आस-पास देखो, यह रेलवे लाइन है। इस पार यह देखो सारी बंजर जमीन पड़ी है—मार्शलैंड। देखना, यहाँ भी एक दिन बस्ती होगी। एकदम यहाँ विद्याधरी तक—यह होल एरिया। सामान्य में अभी तक 'पचानो' पड़ा था। यही है नजर इस ओर

सबसे पहले पड़ी।

सत्यव्रत चुपचाप सुन रहा था।

जिस समय पाकिस्तान बना सभी के तो सिर पर हाथ था। रिफ्यूजी आ-आकर स्यालदा स्टेशन पर जमा हो रहे थे। तुम उस समय काफी छोटे थे। श्यामाप्रसाद बाबू और मैं इन सारी जगहों में घूमते थे। अगर पार्टीशन नहीं होता तो मैं भी ग्रेटर कैलकटा सिटी अच्छी तरह से नहीं देख पाता। उधर बड़ाबाजार की मारवाड़ी कम्युनिटी ने काफी पैसा दिया गवर्नमेंट ने भी करोड़ों रुपया खर्च किया। यहाँ जितनी मस्जिदें थीं, अधिकांश में रिफ्यूजी बस गये। जगह का अभाव फिर भी रहा। स्यालदा की ओर मुसलमानों की जितनी दूकानें थीं उनमें हिन्दू लोग घुस बैठे।'

इसके बाद जरा रुककर कहा, 'यह जानना तुम्हारे लिए जरूरी है इसी से यह कह रहा हूँ। आज तुम भी एक इंडियन सिटिजन हो, तुम्हें वोट देने का अधिकार है—सो यू मस्ट नो। लेकिन आज तुम लोग देख रहे हो कश्मीर इशु, बॉर्डर इशु कितना कुछ हो रहा है। इसका रूट तुम्हें जान रखना चाहिए। पाकिस्तान के न होने पर यह सब कुछ भी नहीं होता—और अगर पाकिस्तान नहीं होता तो मेरा यह रिहैबिलिटेशन भी इतना फ्लारिश नहीं करता।

शिवप्रसाद बाबू जरा और भी उत्साहित हो गये। 'सोचते होगे, बिजनेस की बात में पॉलिटिक्स लेकर डिसकशन क्यों कर रहा हूँ? लेकिन मुझे तो इंटरेस्टिंग लगता है। तुम जानते होगे राजनीति के साथ अर्थनीति का कितना मेल है? प्राइम मिनिस्टर के एक लेक्चर पर शेयर मार्केट के भावों में कैसी तेजी मन्दी आ जाती है? इस रिहैबिलिटेशन का भी यही हाल है। अगर पाकिस्तान नहीं होता तो मेरा बिजनेस भी फ्लारिश नहीं करता। लेकिन पाकिस्तान आखिर बना क्यों तुम जानते हो?

बचपन से ही सत्यव्रत को पिता के लेक्चर सुनने की आदत है। आज भी जैसे वह छोटा हो। सत्यव्रत छोटे बच्चे की तरह चुपचाप सुनता रहा।

पाकिस्तान किसने बनाया कुछ पता है?

सत्यव्रत ने कोई जवाब नहीं दिया।

अखबारों में सब तरह-तरह की बातें पढ़ोगे। हिन्दू या [illegible]

भी बहुत-कुछ लिखा है। मैं उस सब के बारे में नहीं कह रहा। असल में, मैं इनसाइड सर्किल में था न, इसी से सीक्रेट जानता हूँ। पाकिस्तान को जन्म किसने दिया कहो न। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने ?'

सदाव्रत ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

'नहीं, ब्रिटिश गवर्नमेंट नहीं। तब किसने ? कौन ? महात्मा गांधी ? जवाहरलाल नेहरू ? सरदार पटेल ? मुहम्मद अली जिन्ना ? लियाकत अली खाँ ? सुहरावर्दी ? नहीं, नाजिमुद्दीन साहब ? वह भी नहीं तो कौन ?'

शिवप्रसाद बाबू जैसे किसी सभा में भाषण दे रहे हों।

'असल में इनमें से कोई भी जिम्मेदार नहीं है, इसके पीछे न हिन्दू हैं, न मुसलमान—पीछे है'

कहकर सामने की ओर जरा झुके। आवाज जरा धीमी की। बोले, 'मैं उस समय हाई कमान के इनर सर्किल में था, असली सीक्रेट तुम्हें मैं बतलाता हूँ। तुम्हारा जान रखना जरूरी है। असल सीक्रेट थी ...'

कौन जाने क्या सीक्रेट थी। शायद कोई सीक्रेट होगी, लेकिन वह जाहिर नहीं हो पाया। अचानक टेलीफोन की आवाज में सब गोलमाल हो गया। शिवप्रसाद बाबू ने रिसीवर उठाकर कहा, 'हलो !'

फिर कहने लगे, 'हाँ हाँ, जरूर। दस्तावेज, डीडस—सब मेरे आफिस में ही हैं। लोकल पुलिस को भी कह रखा। इतनी जिम्मेदारी मेरी है। लेकिन मुझे लगता है रिफ्यूजी लोग कुछ गड़बड़ जरूर करेंगे। लेकिन जब डिग्री हो चुकी है, इजेक्टमेंट आर्डर निकल गया है, तब दखल करने के लिए मारपीट छोड़ उपाय ही क्या है ? जबर्दस्ती कब्जा जब साबित हो ही गया है, समझ गया, मैं पेपर लेकर अपने लड़के को आपके पास भेज रहा हूँ—हाँ, मेरा लड़का। उसको सारा कारबार समझा रहा हूँ और क्या। अच्छा नमस्कार।

रिसीवर रखकर आवाज दी, "बैजनाथ, बड़े बाबू को बुला !"

हिमांशु बाबू हड़बड़ाते हड़बड़ाते अन्दर आये। शिवप्रसाद बाबू ने कहा, हिमांशु बाबू, जादवपुर की जमीन के जो पेपर्स अपने आफिस में हैं, वह ड्राइंग रूम में दे दो। सदाव्रत वह सब लेकर घोषाल बाबू के पास जायेगा।

हिमांशु बाबू चले गये। शिवप्रसाद बाबू ने कहा, 'तुम्हें भेज रहा हूँ क्योंकि

तुम्हें भी कुछ-कुछ समझ लेना चाहिए। अपनी फर्म के एडवोकेट गोलक बाबू [illegible] सरकार। उनके साथ मुलाकात भी होगी, जान पहचान भी हो जायगी। हाँ जान्वपुर की बस्ती भी तुम्हें एक दिन दिखला आऊँगा। रिफ्यूजियों ने उस जमीन पर मकान बनाकर मौरूसी पट्टा कर लिया है। जरा सोचो उस प्लाट को अगर बेच भी दूँ तो इस समय कितना फायदा होगा! और कुछ नहीं अगर कम किराये के फ्लैट ही बनवा दिये जाएँ तो भी [illegible] कम से कम फिफ्टी टु सिक्स्टी परसेंट प्राफिट होगा। इसीलिए तो कह रहा था कि पाकिस्तान के बनने से अपना तो कोई नुकसान नहीं हुआ। तुम्हीं कहो न, पाकिस्तान न होने पर क्या रिफ्यूजी यहाँ आते? और रिफ्यूजी लोग अगर नहीं आते तब क्या जमीन का भाव इतना बढ़ जाता? तुम्हीं कहो न—यह तो एक तरह से अच्छा ही हुआ।

तभी [illegible] हिमांशु बाबू आ गये। [illegible] बाबू ने सारे [illegible] का [illegible]। फिर कहा, 'यह तो और गोलक बाबू का मकान [illegible] दोनों पास में है। [illegible] दोनों को पहचानते हो न! और अगर [illegible] मालूम हो तो [illegible] जानता है। [illegible] बतला देगा। जाओ! कुछ कहना [illegible] हो तो फिर [illegible] दे देना। वह सब समझ जायेंगे।

[illegible]! भगवान [illegible]!

[illegible] उठ खड़ा हुआ। बोला 'अच्छा!'

[illegible] पर [illegible] गया। वह कितनी ही बार बाबू को यहाँ [illegible] के मकान पर लाया है। इस जगह को अच्छी तरह से पहचानता है। [illegible] समय [illegible] रोड पर ट्रैफिक ज्यादा रहता है। सड़क [illegible] है। उसी में ट्राम-वाहन। कभी कभी काफी समय के लिए ट्रैफिक जाम हो जाता है। लेकिन [illegible] हुआ ड्राइवर है। मिजाज का भी ठंडा। आगे की गाड़ी को ओवर-टेक करने की भी कोशिश नहीं करता। वह आराम से गाड़ी ड्राइव कर रहा था।

'[illegible]'

[illegible] पिछली सीट पर बैठा था। लेकिन [illegible] नहीं रोक पाया।

गाड़ी चलाते चलाते ही कुछ ने पीछे मुड़कर देखा। मनोहर पूछ ही बैठा, 'जहाँगीरी टोला सैकण्ड बाई लेन पहचानते हो?'

वह सब जानता है। ड्राइवर कलकत्ते का पक्का हो चुका है। बोला, 'जानता हूँ छोटे बाबू!'

'पहले वकील साहब का घर पड़ेगा या सैकण्ड बाई लेन पड़ेगा?'

'सैकण्ड-बाई लेन पहले पड़ेगी। लेकिन उस गली में गाड़ी तो जा नहीं सकती।'

मनोहर ने कहा, 'पहले तुम वहाँ चलो। मुझे एक मिनट से ज्यादा नहीं लगता। तुम गली के बाहर ही गाड़ी रोक देना। मैं पैदल ही जाकर अपना काम निपटा आऊँगा।'

सच ही तो ज्यादा टाइम लगने की बात भी क्या है! ऐसा कोई खास काम तो है नहीं! सिर्फ अनीता जैसी लेडिज़ कहलानेवाली लड़की है तो वहाँ आदमियों का आना-जाना भी होता ही। फिर भी लड़की ने कहा था—वह घर जाने लायक नहीं है। शायद किसी पुराने टूटे फूटे मकान में वे रह सकने लायक रहती होंगी। इसमें शर्म की क्या बात है! जहाँ कलकत्ते में लाख-करोड़ बड़े आदमी भी हैं। उस दिन रात को ईडेन गार्डेन्स में उतरकर जिस बंगले के पोर्टिको में गयी, वह तो काफी बड़े आदमी का है। उनका अपना घर न होगा, वह मकान किराये का ही हो। तब भी कुछ कम नहीं है। कम-से-कम बढ़िया-सी कार किराया तो देना ही होगा। लेकिन इसमें शरम की क्या बात है? उस दिन लड़की ने काफी सुनाया। कम्युनिस्टों से नाराज़, बड़े लोगों से नाराज़। अजीब बात है! कलकत्ते में भी कैसे-कैसे लोग हैं!

यही है सैकण्ड-बाई लेन छोटे बाबू। इसके अन्दर गाड़ी नहीं जाएगी।

मनोहर ने गाड़ी से बाहर निकलकर चारों ओर देखा। सँकरी, पिच पिच। कलकत्ते में ऐसा देखना पड़ेगा! लाहौर का ही मन याद रहता था। दोनों ओर की दीवारों के प्लास्टर से ईंटें जब-तब दाँत दिखाती रही थीं। एक सुअर सो रहा था। दूसरे किनारे नाली में पास के मकान का मैला सड़-सड़कर बह रहा था। पीछे की ओर चमार के मुहल्ले का कारखाना था। सुनार की दुकान।

सदाव्रत ने पाकिट से नाखून बाहर निकाली। वैसे पता याद ही था फिर भी एक बार मिला लेना अच्छा होता है। बत्तीस-बी, अहीरी टोला गवर्नमेन्ट-क्वाई लेन।

दायरे पर लिखे मकान-नम्बरों को देखता हुआ सदाव्रत गली के अन्दर घुस गया।

, ८ ८

हिमांशु बाबू पिछले सोलह साल से इस लैंड डेवलपमेंट सिण्डीकेट आफिस में काम कर रहे हैं। एक बार नक्शा देखते ही समझ जाते हैं जमीन कैसा है। पानी लगता है या नहीं। जमीन ढालू है या एकसार। हिमांशु बाबू को यह सब किसी ने सिखलाया नहीं है। पहले एक वकील के यहाँ मुंशीगिरी करते थे। शिवप्रसाद बाबू उन्हें वहीं से ले आये थे। उस समय आफिस छोटा था। इतना रवब नहीं थे। हिमांशु बाबू ही मनेजर आदि सब कुछ थे। शिवप्रसाद बाबू को आफिस देखने का समय ही कितना मिलता था। ब्रिटिश गवर्नमेंट अभी जाने ही वाली थी। हर ओर बदहवास भागा-दौड़ी था। श्यामाप्रसाद बाबू सेन्टर में मिनिस्टर हो गये। बाद-पोस्ट सभी मिनिस्टर हो रहे थे, पार्लामेन्टरी सेक्रेटरी। सभी ने सोचा शिवप्रसाद बाबू भी यहाँ मिनिस्टर हो जायेंगे। या तो मिनिस्टर नहीं तो स्टेट मिनिस्टर, नहीं तो डिप्टी। बार बार दिल्ली जा रहे थे।

लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। शायद सोचा होगा कि मिनिस्टर बनकर ही क्या करेंगे! साथ में पगड़ी पहने चपरासी घूमेगा, गाड़ी मिलेगी, हो सकता है मोटा तनख्वाह भी मिले। घर के दरवाजे पर हर वक्त लाल पगड़ी का पहरा रहेगा। लेकिन बस इतना ही। मिनिस्टर तो अब भी हाथ में रहेंगे ही। कांग्रेस पार्टी भी हाथ में रहेगी। फायदा अन्दर से ही होना है। फिर बेकार में हंगामा मचाने की क्या जरूरत। ठीक किया, फिर होने से फिर मशहूर होना नहीं अच्छा है। शिवप्रसाद बाबू वहीं हुए। इधर आफिस का काम हिमांशु बाबू ने सम्भाल लिया।

शिवप्रसाद बाबू ने आदमी अच्छा चुना था।

ईमानदार, मेहनती और हिसाबी—हिमांशु बाबू में तीन गुण थे। शिवप्रसाद बाबू दिल्ली रहते ■। हिमांशु बाबू सदाव्रत का कामकाज समझाने

लगे।

हिमांशु बाबू बोले, "ये पुरानी फ़ाइलें पलटकर देखिए!"

एक गट्ठर फ़ाइल टेबल के ऊपर रख गये। पिताजी नहीं हैं। दूसरे दिन से ही मुझे ठीक वक्त पर आफ़िस जा पहुँचना। मालिक के नाम पर अपना सम्मान था। शुरू-शुरू में पिताजी की चेयर पर बैठते ज़रा झिझक होती। नेताजी सुभाष रोड की एक बड़ी बिल्डिंग की तीसरी मंज़िल का एक फ़्लैट। नीचे झाँककर देखने पर दिखाई देता लाल-नीली-पीली गाड़ियाँ और चींटी जैसे आदमियों की कतारें। ठीक ऊपर दीवार पर लाल सितारे चींटियों सा कोड़ का ध्यान जाती हैं। और सिर पर भरी फ़ाइलों का एक पहाड़ और लटककर याद किये ब्लू प्रिंट! चारों ओर फैले नक्शों का मार्टीमर। दीवार पर लाल-नीली-पीली फ़ोटो। मायाओं पर माइक बड़े हैं, जवाहरलाल नेहरू माइक्रोफ़ोन के सामने मुट्ठी बाँधे भाषण कर रहे हैं। किसी में निवासमान बाबू डा० विधान राय के साथ तो किसी में श्यामाप्रसाद मुखर्जी के साथ।

चारों ओर फोटो देखने लगने मशहूर मालिक लगता। अन्दर-ही-अन्दर मन में जो एक छिपा हुआ गर्व जाग उठता। वह भी तो इस सब का उत्तराधिकारी है। हो सकता है वह इस वक्त भी लड़का लगता हो। फिर भी उत्तराधिकारी तो बना है। इस गौरव का उत्तराधिकारी इतने ऐश्वर्य का मालिक। यह सब लकड़ी का पुतला है। बाद उस पुतले का काम चलाने के लिए यहाँ बैठा गया है।

एक प्राचीन मशहूर सम्मानित पुरुष से आख़िर तक पढ़ गया। ज़माने के साथ देने से पुरुष मर बेचन तक। लेकिन कुछ भी समझ में नहीं आया। एक प्राचीन और निराशी। उसमें भी कुछ पाने नहीं पढ़ा। उस मार्गदर्शन को शाम-बड़े पढ़िए। इनों मरमराते और ब्लू प्रिन्ट के मन्थन से उनके जीवन का अमृत निकलता है। वही अमृत बाद में नागर मधुचक्र का सृष्टि करता है।

उस दिन वह और नहीं गया पाता। पूछा, "अच्छा हिमांशु बाबू, इस साल की प्यारना हाथ कितनी है?"

किस चीज़ की हवस?"

'इस फर्म की। मान हर महीने इस फर्म से पिताजी कितना ड्रॉ करते हैं ?'

हिमांशु बाबू ऐसे प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। फिर अपने को सम्हाल कर बोले, 'हम लोगों की बलेंस शीट है। अपनी बलेंस-शीट हम लोगों का ज्वाइंट स्टाक-कम्पनी के रजिस्टार के यहां सबमिट करनी होती है। मैं दिखलाता हूं। अभी लाया।'

सदाव्रत ने कहा 'नहीं नहीं उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं जरा ऐसे ही जानना चाहता था। इस बिजनेस से पिताजी की एप्रोक्सीमेट इनकम कितनी है ? आपको तो मालूम ही होगा।'

'शिवप्रसाद बाबू ही तो इस कम्पनी के मनेजिंग डायरेक्टर हैं उन्हें अपने शेयर का डिवीडेंड मिलता है। इसके अलावा एक एलाउन्स है साढ़े चार सौ रुपये महीने का।'

'साढ़े चार सौ रुपये!'

सदाव्रत ने मुंह से कुछ नहीं कहा। सिर्फ साढ़े चार सौ रुपये! पिताजी की इनकम इतनी कम है ? इतना बड़ा मकान, यह गाड़ी, ड्राइवर, नौकर चाकर, महाराज महरी—सब साढ़े चार सौ रुपये में! लेकिन कुंज की तनख्वाह ही तो अस्सी रुपये है। और भी कितने ही खर्चे हैं। अभी तक उसके कॉलेज की फीस थी मास्टर साहब की फीस थी। फिर उसकी किताबों का खर्चा। उसने खुद ही तो न जाने कितने रुपयों की किताबें खरीद डाली हैं। जब जो चाहा उसे मिला। उसकी गाड़ी पुरानी हो गयी है फिर भी उसका खर्चा तो है ही!

हिमांशु बाबू शायद सदाव्रत के मन की बातें समझ गये। बोले, "अपनी फर्म ज्यादा रिच तो नहीं है। इस समय उतना प्राफिट कहां हो रहा है ? अब तो कितने ही लड स्पेक्युलेशन आफिस हो गये हैं, कई राईवल कम्पनियां हो गयी हैं। पहले जैसा प्राफिट अब कहां है!'

सदाव्रत ने जवाब में सिर्फ कहा, 'आह!'

'इसी से तो अपने स्टाफ की तनख्वाह भी नहीं बढ़ा पाते।'

'एक क्लर्क को कितना मिलता है ?'

हिमांशु बाबू ने कहा, 'जो देना चाहिए उतना नहीं दे पाता। वह जो

इस फर्म की। माने हर महीने इस फर्म से पिताजी कितना ड्रा करते हैं ?'

हिमांशु बाबू ऐसे प्रश्न के लिए तयार नहीं थे। फिर अपने को सम्हाल कर बोले 'हम लोगों की बलेंस शीट है। अपनी बलेन्स शीट हम लोगों को ज्वाइन्ट स्टाक-कम्पनी के रजिस्टार के यहां सबमिट करनी होती है। मैं दिखलाता हूं। अभी लाया।

सदाव्रत ने कहा, नहीं-नहीं उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं जरा ऐसे ही जानना चाहता था। इस बिजनेस से पिताजी की एप्रोक्सीमेट इन्कम कितनी है ? आपको तो मालूम ही होगा।'

शिवप्रसाद बाबू ही तो इस कम्पनी के मनेजिंग डायरेक्टर हैं, उन्हें अपने शेयर्स का डिवीडेंड मिलता है। इसके अलावा एक एलाउन्स है साढ़े चार सौ रुपये महीने का।

साढ़े चार सौ रुपये !

सदाव्रत ने मुंह मे कुछ नहीं कहा। सिर्फ साढ़े चार सौ रुपये ! पिताजी की इन्कम इतनी कम है ? इतना बड़ा मकान, यह गाड़ी ड्राइवर, नौकर चाकर महाराज महरी—सब साढ़े चार सौ रुपये में ! लेकिन कुंज की तनख्वाह ही तो अस्सी रुपये है। और भी कितने ही खर्चे हैं। अभी तक उसके कालिज की फीस थी मास्टर साहब की फीस थी। फिर उसकी किताबों का खर्चा। उसने खुद ही तो न जाने कितने रुपयों की किताबें खरीद डाली हैं। जब जो चाहा उसे मिला। उसकी गाड़ी पुरानी हो गया है, फिर भी उसका खर्चा तो है ही !

हिमांशु बाबू शायद सदाव्रत के मन की बातें समझ गये। बोले,"अपनी फर्म ज्यादा रिच तो नहीं है। इस समय उतना प्राफिट कहां हो रहा है ? अब तो कितने ही लेंड स्पेक्यूलेशन आफिस हो गये हैं, कई राईवल कम्पनियां हो गयी हैं। पहले जैसा प्राफिट अब कहां है !'

सदाव्रत ने जवाब में सिर्फ कहा, ओह !

"इसी से तो अपने स्टाफ की तनख्वाह भी नहीं बढ़ा पाते।'

एक क्लर्क को कितना मिलता है ?

हिमांशु बाबू ने कहा जो देना चाहिए उतना नहीं दे पाता। वह जो

'नही यहा कुछ भी नही। पिताजी को पूछ रही थी। मैंने कह दिया दिल्ली गये है।'

हिमाशु बाबू ने कहा ओह, अब समझा, शायद पाक-स्टेटवाली प्रापर्टी के बारे म बात करना चाहती होगी मैं ठीक से नही जानता। अंग्रेज लोग तो जा रहे है न अब सब कुछ मारवाडी लोग खरीद लेना चाहते है।

सदाव्रत ने कहा "अच्छा आप जाइये मैं फाइल देखू।"

कहकर उसे हठात याद आया। बोला "एक बात और हिमाशु बाबू उस बस्ती के मामले का क्या हुआ? वही जिसकी फाइलें लेकर मैं उस दिन गोलक बाबू के यहा गया था? उसका क्या हुआ?"

उसका सारा इन्तजाम हो गया है।'

'क्या इन्तजाम?

"वकील का काम वकील ने किया। उन्होने पपर्स वगरह देख लिये है। हम लोगो की ओर से कोई फला नही है। अब सिर्फ कब्जा करना बाकी है।

कब्जा करना माने?

हिमाशु बाबू ने कहा ये सब रिफ्यूजी लोग यहाँ आकर जम गये है न! किसकी जमीन है कुछ ठीक नही जिसे जहाँ जगह मिली घर बनाकर जम गया है। जबकि दलिये इन्ही लोगो का गवनमट म हजारो रुपये लोन और कम्पनसेशन के मिल है कपडे की दूकान खोली है। खा पीकर मजे से घूमते है। पाकिस्तान से जो लोग आये है—इन लोगो की वजह से बस टाम तक म जगह नही मिलती। आपको तो मालूम ही है। जसे यह इन्ही का देश हो। हम लोगो को तो जसे आदमी ही नही मानते।'

'तो नही मानें अब क्या मुकदमा करके इन्हे हटायगे?'

हिमाशु बाबू जरा मुसकराये। बोले, "नही नही, मुकदमा करके क्या इन लोगो को हटाया जा सकता है! जहाँ जो जम गया है उसे वहाँ से हटाना मुश्किल है। गवनमट भी उन लोगो से कुछ कहने की हिम्मत नही कर सकती!'

क्या गवनमट क्या डरती है!

'डरेगा नहीं? उन लोगों को भी तो वोट देने का अधिकार है। चुनाव होने वाले हैं, इसीसे उन्हें नाराज नहीं करना चाहती। कम्युनिस्ट लोग भी तो उन्हीं लोगों की बैकिंग पर चुनाव लड़ रहे हैं। गवर्नमेंट और अदालत से कुछ भी नहीं होता।

"तब उन लोगों को कैसे हटायेंगे?

"मारकर! रातों रात काम खत्म कर देना होगा। नहीं तो उन लोगों के पीछे कम्युनिस्ट पार्टी है। अगर रायट जैसा कुछ हो जाय तो हम लोग क्रिमिनल-केस में फँस जायेंगे! इसी से वह सब झमेला नहीं करता है। हम लोगों का सब इन्तजाम है। किसी दिन मिडनाइट में आकर सब झोपड़े वगैरह तोड़ फोड़कर कब्जा कर लेंगे।

'लेकिन वे लोग जायेंगे कहाँ?

यह वे लोग समझें। रायट पार्क की दस बीघा जमीन हम लोगों ने इसी तरह रिक्लेम कर ली। और अपने इसी मुहल्ले के एक बिजनेसमैन हैं। उनकी भी कुछ जमीन रिफ्यूजियों ने दबा ली थी। उन्होंने भलमनसाहत से अदालत में केस चलाया। आज सात साल हो गये मामला भी चल रहा है, गाँठ के रुपये जो खर्च हुए सो अलग। अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है। शिवप्रसाद बाबू ने इसीलिए कहा कि बिना मार-काट के ये लोग जानेवाले नहीं हैं। जब तक दो चार का सिर नहीं फूटेगा इन लोगों की समझ में नहीं आयेगा!'

उस दिन रात को ही मनोरंजन टैक्सी लेकर गोलाबाग रिफ्यूजी कॉलोनी देख गया था। उसी दिन की बातें उसे याद आने लगीं। सड़क के किनारे की अच्छी खासी जमीन पर फटे चिथड़े, टाट, टूटे बाँस और खपचियों से लोगों ने झोपड़े तैयार किये हैं। मनोरंजन आफिस की चेयर पर बैठा-बैठा उस दृश्य की कल्पना करने लगा। हिमांशु बाबू जैसे बड़े बाप के कारण ही शायद सेंट्रल डेवलपमेंट डिपार्टमेंट चल रहा है। सभी आफिसों में शायद एक-एक हिमांशु बाबू होते हैं। उन लोगों के लिए आफिस ही जिन्दगी है। आफिस की छोटी-छोटी बातों से लेकर बड़े-बड़े बजट और बैलेन्स-शीट इन लोगों की जबान पर रहते हैं। कुछ ही दिनों में मनोरंजन को पता लग गया कि हिमांशु बाबू खुद भी एक [illegible] हैं। हजारों-लाखों धन-जन [illegible]

बीच एक मरा हुआ कागज़।

हिमांशु बाबू आफिस आते ही अपनी चेयर टेबल खुद ही डस्टर से झाड़ लेते। हिमांशु बाबू काम करते-करते कहते 'तुम लोग सारे काम चपरासी से कराते हो यह तो कोई अच्छी बात नहीं है। चपरासी है आफ़िस के काम के लिए उसे चाय लेने क्या भेजते हो? चपरासी क्या तुम लोगों के घर का नौकर है?

नन्दी कहता, तो हम लोगों को टिफिन की छुट्टी दीजिये।"

हिमांशु बाबू कहते, बंगालियों में यह बड़ा भारी दोष है। हर बात में बहस करेंगे। बंगाली बहस करने में हो गये। मिलिटरी में क्या ऐसे ही बंगालियों को नहीं लेते!'

सदाव्रत अपने केबिन में बैठा-बैठा सब सुनता। सुनने में खूब मजा आता।

'कहता हूं, टिफिन करने का अगर इतना ही शौक है तो गवर्नमेंट आफिस में नौकरी करो न! सारे दिन बैठे बैठे घंटा भर टिफिन रूम में बिताकर मजे से घर चले आते, यहाँ क्या आ गये! हम लोग कोई खुशामद करने तो गये नहीं थे! तुम लोगों को बुलाने भी नहीं गये थे कि अरे भाई तुम लोग आओ तुम लोगों के बिना सारा काम-काज रुका पड़ा है।"

तभी एकाएक गले की आवाज बदलकर कहते "दत्त, चिट्ठी टाइप हुई?'

टाइपिस्ट दत्त कहता जी जरा देरी होगी इस मशीन से और काम नहीं चलेगा। एक नयी मशीन मंगाइए।"

हिमांशु बाबू कहते वह तो कहोगे ही। एक दिन मैंने अकेले ही उस मशीन पर टाइप किया है। अकेले ही आफिस की सारी फाइलें क्लीयर की हैं, और आज उसी काम के लिए इतने सारे लोग हैं। मैंने मालिक से तभी कहा था ज्यादा आदमी न लीजिए। ज्यादा लोगों से जो काम होगा सो तो दीख रहा है।

नन्दी से शायद और सहा नहीं गया। बोला, 'लेकिन हम लोग काम नहीं करते हैं तो करते क्या हैं। आपके सामने ही तो बैठे हैं।"

ऐसी छोटी छोटी बातों की वजह से सारा आफिस जैसे पत्थर हो गया

था। सदाव्रत इनके पहले भी नहीं जानता था कि जहाँ से उसके घर की आय हो रहा है, जिस पैसे से उसकी गृहस्थी चलती है, जिस आय के बूते पर उसकी खुद की पढ़ाई लिखाई हुई, वहाँ के इतनी तिकायतें इतना असन्तोष। इनमें से कोई भी तो झूठ नहीं है। इन लोगों को साठ या सत्तर रुपये महीना मिलते हैं। और सदाव्रत अपनी गाड़ी के पेट्रोल में ही तो पचास रुपये उड़ा देता है।

एक दिन हिमांशु बाबू केबिन में आये। सदाव्रत ने कहा, "अच्छा हिमांशु बाबू एक बात पूछना थी।"

'कौनसी बात कहिए?'

"कह रहा था कि क्या इन लोगों की, मान इन्हीं कुछ क्लर्कों की तनख्वाह नहीं बढ़ायी जा सकती? यहीं कोई चार-पाँच रुपये महीने।"

'चुप, चुप।' हिमांशु बाबू ने आग्रह करते हुए अपने होठों पर अँगुली रखी और बोले, 'वे लोग सुन लेंगे। इतनी जोर से न बोलिए।"

सदाव्रत ने आवाज धीमी करते हुए कहा 'नहीं, एक दिन देखा, टिफिन के समय कुछ भी नहीं खा पाते। सिर्फ चाय पीकर ही रह गये। और कोई बात नहीं है। लेकिन बद्रीनाथ घर से मेरे लिए खाना लाता है, यह उन लोगों को मालूम है।

हिमांशु बाबू फुसफुसाए, 'वे और आप? उन लोगों के साथ अपनी तुलना कर रहे हैं?'

'नहीं तुलना नहीं कर रहा लेकिन खाने समय ध्यान चला जाता है। बद्रीनाथ जब प्लेटें धोता है, वे लोग देखते होंगे।'

हिमांशु बाबू ने कहा, 'अरे नहीं आप जरा भी फिक्र न करिए। इन लोगों ने पढ़ाई लिखाई कुछ भी नहीं की है। इस नौकरी के बूते पर ही पेट पाल रहे हैं। यहाँ नौकरी न मिलने पर क्या करते अगर सुनूँ? आप तनख्वाह बढ़ाने की बात न सोचिए। इन लोगों को 'वह' मिलेगा।'

सदाव्रत ने कहा, 'नहीं मैं तो ऐसे ही कह रहा था। अगर बढ़ा सकते'

'नहीं, छोटे बाबू! वह जब मैंने बहुत देखा है दो रुपये महीने बढ़ाने से उन लोगों के घर नहीं पहुँचेगा। या तो रम में जायेगा, नहीं तो शराब